ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Download Class Notes

Subject: हिंदी साहित्य

Medium: Hindi

File Type: PDF

© www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Q- "भले ही आदिकाल हिंदी साहित्य का आरंभिक कालखण्ड है पर हिंदी साहित्य में इसका योगदान अप्रतिम है।" कथन की समीक्षा कीजिए।

आदिकाल (लगभग 1050 - 1375)

- मुख्य विशेषताएँ (संक्षिप्त)
- योगदान
  - भावपक्ष (संवेदना पक्ष)
    - युद्धों का सजीव वर्णन (वीर काव्य)
    - सिद्ध-नाथ साहित्य के द्वारा नीति रचनाएँ कुरीतियों का खण्डन
      - ~~रस~~ वीर, शृंगार रस
    - → आख्यानकों की रचना
    - → ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना
    - → कविता को दरबारी संरक्षण प्रदान हुआ
  - कलापक्ष (शिल्प)
    1. महाकाव्य परंपरा
    2. पुरानी हिंदी का आरम्भ ('अमीर खुसरो')
    3. लोकजीवन की भाषा का विकास
    4. रस, छंद व अलंकार

निष्कर्ष समग्रता में

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

- कथन
  ↓
  समीक्षा
  (review)
  ↓
  कहाँ तक सही
  कहाँ तक गलत।
  ↓
  जरूरत पड़ने पर
  कथन को संशोधित
  करना

- हिंदी साहित्य
  परंपरा की
  शुरुआत
  ↓
  संवेदना
  भाषा,
  शिल्प
  → हिंदी साहित्य के
  भावी विकास की
  संकेत
  → भक्तिकाल
  → रीतिकाल
  → आधुनिककाल
  (तीनों के सूत्रबीज
  आदिकाल में)

- भारत की
  सामासिक संस्कृति

- भक्ति
  साहित्य
  और उसकी
  विविध काव्यधाराएँ

- भक्ति काल की भक्ति-साधना
- रीति कालीन श्रृंगार वर्णन की प्रेरणा
- भारतेंदु द्वारा अमीर खुसरो की शैली को अपनाना और भाषा के स्तर पर प्रतिपादन करना आदिकालीन परंपरा का विकास
- भारत की सामासिक संस्कृति की स्वरूप जिसे भक्ति काल में विकास मिला उसका आरंभ आदि काल में हुआ

- चन्दबरदाई, अमीर खुसरो, गोरखनाथ

चन्दबरदाई ने पुराण व कुरान दोनों से प्रेरणा ली

अमीर खुसरो → संवेदना एवं भाषायी धरातल पर समन्वय की चेष्टा

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

संवेदना के धरातल पर वे उर्दू में लिखी कव्वालियों के जरिये उदात्त रूहानी भावों को व्यक्त करते हैं तथा पहेलियों व मुकरियों के द्वारा वे हिंदू स्त्रियों की आंतरिक दशा का भी वर्णन करते हैं।

→ एक ओर वे फारसी में रचना करते हैं, ब्रज में रचना की और

→ गोरखनाथ ~~शक्ति~~ जन्म से हिंदू

→ विद्यापति – शैव – वैष्णव
वैष्णव – शाक्त ⟩ समन्वयवादी चेतना (पदावली की रचना)
↓
धार्मिक – सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना

→ भक्तिकाल व धाराएँ

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ सिद्धों व नाथों द्वारा संत काव्य
→ विद्यापति के द्वारा कृष्णभक्ति
→ अमीर खुसरो के द्वारा सूफी मत

⟹ चरित काव्यों की परंपरा

→ ऐसे चरित काव्य जिसमें फैक्ट व फिक्शन का समावेश है, की शुरुआत आदिकाल में तथा भक्ति काल में उत्कर्ष हुआ।

⟹ महाकाव्यात्मकता की पृष्ठभूमि का तैयार होना

→ कड़वक शैली (पृथ्वीराज रासो, पद्मावत एवं रामचरित मानस

⟹ हिंदी साहित्य के लोकोन्मुख स्वरूप का आधार बनना

→ सामंती जीवन बनाम लोक जीवन
संदेशरासक, ढोला मारु रा दूहा, अमीर खुसरो की मुकरियाँ

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

⟹ लौकिक साहित्य

1- जो लोक से प्रेरणा ग्रहण कर रहा है
2- लोक चेतना को प्रतिबिम्बित कर रहा है
3- लोक के द्वारा संरक्षित है
4- लोक भाषा में रचना

⟹ हिंदी साहित्य के धार्मिक परंपरा की शुरुआत

- साहित्य व संगीत के बीच अंतराल का कम होना → अमीर खुसरो, विद्यापति, कबीरदास, सूरदास, मीराबाई

⟹ हिंदी भाषा की सामाजिक पहचान को निर्मित होते देखना –

- अपभ्रंश, अवहट्ट, मैथिली, राजस्थानी, खड़ी बोली, ब्रजभाषा

⟹ प्रगतिशील नारी चेतना का आधार भी मिलता है

- अमीर खुसरो – प्रगतिशील सामाजिक चेतना सिद्ध-नाथों के साहित्य मे

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⟹ परवर्ती हिंदी साहित्य पूर्ववर्ती भारतीय साहित्यिक परंपरा से संबद्ध है।

Q१. आदिकालीन हिंदी साहित्य में प्रतिफलित सामाजिक-सांस्कृतिक बोध का मूल्यांकन कीजिए।

→ आदिकालीन साहित्य की लोकोन्मुखीपरता का संक्षिप्त परिचय - लोकजीवन से जुड़ाव, सामाजिक चेतना।

→ अमीर खुसरो - सामाजिक, सांप्रदायिक एवं भाषायी समन्वय (पहेलियां, मुकरियाँ)

→ विद्यापति - भक्ति एवं श्रृंगार का लोक शैली में प्रस्तुतीकरण (पदावली एवं कीर्तिलता आदि)

→ सिद्धों - नाथों द्वारा नीति - उपदेशपरक दोहों या चर्यापदों के माध्यम से सामाजिक - सांस्कृतिक चेतना का वर्णन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ऐतिहासिक दृष्टि

संदेश रासक व उपदेश रसायन

सांस्कृतिक व सामाजिक

...देन

1050 से 1375 की अवधि

- ऐसा विशेष काल खंड

में सांस्कृतिक तत्वों का

प्रदर्शित होने लगा था।

...त्य में संवत 1050 से

को आदि काल कहा गया है

साहित्य साहित्य → प्रतिफलित

क) चेतना बोध का मूल्यांकन करें।

↓

महत्व का आकलन

ख - सामंती जीवन - लोक जीवन

द्वन्द्व

हिन्दू - मुस्लिम सांप्रदायिक द्वन्द्व (टकराहट)

↓ पृष्ठभूमि

परिदृश्य में आदिकालीन साहित्य सृजन आरम्भ हुआ।

में आदिकालीन साहित्य का स्वरूप सामाजिक - सांस्कृतिक भाव बोध को

। सामंती - दरबारी संस्कृति की

। साथ वीरगाथात्मक एवं स्वरूप का निर्धारण

के साहित्य की श्रृंगार चेतना, लोकसंस्कृति की पृष्ठभूमि में किया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

तेल्लिम्बन सिद्ध-नाथ

विद्यापति

सांप्रदायिक रुमाव के माहौल में बहुदेववादी आख्या के सहारे सौहार्द स्थापित करने का प्रयास

के
लिहर
श
नों कु
कों
र
रो

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

यहाँ तक कि प्रगतिशील आर्थिक चेतना के ~~अ~~ आभास

बीच भी मौजूद हैं –

"थोड़ो खाय सो कलपै – झलपै"

कहीं-कहीं सामाजिक व्यवहार की तमीज सिखाते दिखते हैं –

हबकि न बोलिबा, ठबकि न चलिबा
धीरे धरबा पाव
गरब न करिबा सीधे रहिबा

"हबकि न बोलिबा, ठबकि न चलिबा
धीरे धरबा पाँव" – गोरखनाथ।

~~पर~~

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Q. "योगधारा को काव्यधारा नहीं माना जा सकता।" आचार्य शुक्ल के इस कथन पर विचार करते हुए बतलाइए क्या आप भी सिद्ध-नाथ साहित्य को असाहित्यिक मानते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

"योगधारा काव्यधारा नहीं है"

↓

आधार :

- आचार्य शुक्ल की साहित्य दृष्टि जो साहित्य को
  - जीवन-जगत के सापेक्ष मानती है
  - रस को काव्य की आत्मा मानती है
    - ↓ 'रस सिद्धि'/सृष्टि कविता का उद्देश्य है

- धार्मिक रचनाओं को साहित्य न मानना उचित है क्योंकि जीवन जगत से जुड़ाव नहीं, उद्देश्य - धर्म का प्रचार करना प्रसार } इसीलिए आचार्य

सिद्ध-नाथ साहित्य की साहित्यिकता →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

सिद्ध-नाथ साहित्य की साहित्यिकता

आधार - उचित है (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी)

- धार्मिक रचना जहाँ धर्म प्रेरणा के रूप में मौजूद है
- साहित्यिक सरसता बनाये रखने का प्रयास
- लोक की चिंताओं को अभिव्यक्ति मिली अतः जीवन सापेक्षता व समाज सापेक्षता का पुट

> "गंगा नहाय जो नीत तरै मछली ना तरी जाय जो पानी में घर।"

अगला भाग

- आचार्य शुक्ल का अंतर्विरोध
  - असाहित्यिक भी मानना और 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में उल्लेख भी करते हैं
  - संतमत एवं कबीर के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि का निर्माण
  - कबीर आदि की रचनाएँ सब साहित्यिक है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

इसका एक भी हिस्सा जन-सापेक्ष नहीं था

यद्यपि आचार्य शुक्ल पूर्णतः गलत नहीं किंतु सिद्ध-नाथ साहित्य को साहित्य की श्रेणी से पूरी तरह खारिज भी नहीं किया जा सकता।

Q. विद्यापति : 'भक्त कवि या शृंगारी' के प्रश्न (1) पर विचार करते हुए उनकी पदावली के आधार पर व्यक्त भक्ति-भावना के स्वरूप का उद्घाटन (2) करें।

भक्ति का आधार | शृंगारी का आधार | निष्कर्ष

→ शैव विद्यापति → राधा-कृष्ण की यौवनलीला का वर्णन
उनके लिए ईश्वर नहीं बल्कि लौकिक जीवन के नायक-नायिका हैं।

अतः राधा-कृष्ण जीवात्मा-परमात्मा का रूप न रहकर लौकिक नायिका

→ वयःसंधि अवस्था के प्रेम का चित्रण
- नखशिख वर्णन
- नायिका भेद "
- संयोग की प्रधानता

यह वर्णन स्थूल एवं मांसल प्रतीत होता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

- चित्रित श्रृंगार सामग्री - दरबारी संस्कृति के अनुरूप भोगमूलकता के करीब

- राधा को वियोग/ विरह में भी संयोग की चिंता सताती है।

भक्त कवि

→ बहुदेववाद की चेतना, सांप्रदायिक समन्वय की अभिव्यक्ति

→ विद्यापति की पहचान मिथिला क्षेत्र में भक्त कवि के रूप में है

→ श्रृंगार चेतना का समावेश मुख्यतः लोक संस्कृति एवं लोक जीवन के गहरे संपृक्ति के कारण

↓

श्रृंगार और अश्लीलता समय एवं स्थान सापेक्ष

→ चैतन्य महाप्रभु के अनुयायियों के बीच पदावली की लोकप्रियता

↓

श्रृंगार में गोपी तत्व की प्रधानता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ग

गोपी तत्व → प्रेम चिन्मुख है, जड़ोन्मुख नहीं।
(आध्यात्मिक) (शारीरिक)

→ विद्यापति की पदावली में शैव तादात्म्य भाव एवं वैष्णवों मर्यादा का गहरा सामंजस्य है

↓ चित्रित शृंगार को एक हद से बाहर जाने से रोकती है

↓ जो चित्रित प्रेम को अलौकिकता की ओर संप्रेषित करता है

निष्कर्षतः विद्यापति की पदावली में भक्ति और शृंगार में धूप-छाँही मेल है जो दोनों के बीच एक बेजोड़ संतुलन का निर्वाह करते देता है। और, इसीलिए जो विद्यापति की पदावली को भक्ति काव्य मानने वाले उसमें चित्रित शृंगार तत्व से नहीं चुकते जबकि उन्हें शृंगारी कवि मानने वालों की दृष्टि भी ^चित्रित भक्ति पर भी पड़ी है

ध्येयIAS most trusted since 2003

भक्ति भावना का स्वरूप

→ भारत की सामासिक चेतना का भक्ति के धरातल पर ~~क्षमा~~ प्रमाणित होना

↓

शैव बनाम वैष्णव बनाम भक्ति शाक्त

→ ऐसे समय में शैव विद्यापति द्वारा राधा-कृष्ण की यौवन लीला का वर्णन

↓

जो संकेत देता है - बहुदेववादी आस्था का,
- भक्ति के समन्वयवादी स्वरूप का
- धार्मिक सामंजस्य का

शैव भक्ति
गंगा-स्तुति
शक्ति की उपासना
गणेश-वंदना

जयदेव का गीतगोविंद

Q- विद्यापति की पदावली और सूर का सूरसागर एक ही कोटि की रचनाएँ हैं जिसमें भक्ति का आधार शृंगार है।' इस कथन पर विचार करते हुए विद्यापति के वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

12/08/17

⟹ तुलसी साहित्य में सामंत-विरोधी मूल्य

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

* हेमचंद्र का महत्व

ऐतिहासिक महत्व

①. भाषिक संदर्भ

↓

- आधुनिक हिंदी की बोलियों के आद्य रूप
- आदिकालीन हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ

→ दरबारी संरक्षण में रहकर रचना की। मुक्तक एवं प्रबंध दोनों के रूप में रचनाएँ की।

- 'कुमारपाल चरित' (चरित काव्य का उदाहरण)
- ये जैन धर्मावलम्बी होने के नाते जैन साहित्य की रचना भी → आदिकालीन आध्यात्मिक के बीज मिलते हैं।

→ शृंगार रस का भी चित्रण किया व वीर रस का भी

↓

विशेषता → स्त्रियों को वीर रस के आश्रय के रूप में चित्रित किया गया।

→ संवेदना, विशेषताओं एवं भाषिक आधार पर हेमचंद्र के साहित्य में आदिकालीन साहित्य में मिलता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

→ कबीरदास (विरह को अंग) से — व्याख्या

"आई न सकौं तुझ पै - - -

"यह तन जारौं मसि करौं

1. शृंगार रस की उपस्थिति
↓
आध्यात्मिकता व धार्मिक का वर्णन

2. पहले दोहे में जीवात्मा के आत्मदैन्य की अभिव्यक्ति हुई है (आत्म निवेदन - आत्मज्ञान का परिणाम)

→ रहस्यदर्शी की पाँच अवस्थाएँ

2. आत्मज्ञान
3. आत्मसमर्पण

जीवात्मा अपनी मनःस्थिति के चित्रण के लिए अद्यात्मक एवं अतिशयोक्ति का भी सहारा लिया है जो बिहारी एवं जायसी के काव्य में भी दिखता है लेकिन यहाँ यह भाव संवेदना के तल से संयुक्त है इसलिए बिहारी की अद्यात्मकता की बजाय जायसी की अभिव्यक्ति

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

शैली के अधिक करीब है।

"प्रेम न बाड़ी ऊपजै प्रेम न हाट बिकाई"

"कबीर यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं,"
शीश उतारे भुई धरे तब

"यह तन जालो मसि करो धुआं जाई सरग्ग" - ढोला मारूरा दूहा

"यह तन जारौं छार कर कहेउ कि पवन उड़ाय।" - पद्मावत

⟶ राम नाम का बीज मंत्र - रामानंद से ग्रहण किया।
↓
"एक राम दशरथ घर डोले
एक राम घट-घट में बोले
सकल राम का बीज पसारा
एक राम है जग से न्यारा ⟶ तम सत रज से परे (त्रिगुणातीत)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न- भक्ति आंदोलन के आविर्भाव में इस्लाम की भूमिका को रेखांकित करते हुए इससे संबंधित विवाद पर प्रकाश डालिए। साथ ही इस प्रश्न पर विचार करें कि आचार्य शुक्ल की स्थापनाएँ कहाँ तक उचित हैं?

इस्लाम की भूमिका

① लोक-शास्त्र का द्वन्द्व चरम पर था
- शास्त्र - शास्त्र - धर्म, शास्त्र चिंतन का प्रतिनिधित्व करता है,
- सामंती पुरोहितवाद से शास्त्र को संरक्षण

→ लोक - शास्त्र, शास्त्र पुरोहित
- धर्म एवं चिंतन के अधिकार से शोषण का शिकार समूह का प्रतिनिधित्व करता है।

यह शोषित वर्ग न हिंदू न मुस्लिम की स्थिति में था

→ इस परिस्थिति में इस्लाम का आगमन लोक और शास्त्र के द्वन्द्व को प्रशस्त करता है।
- सामंतवाद पुरोहित गठबंधन को चुनौती
- आदि जनजातियों, वर्णव्यवस्था में रचे बसे हिंदुत्व को चुनौती।

संबंधित विवाद
- आचार्य शुक्ल
- आचार्य द्विवेदी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ पुरोहितों के लिए वर्चस्व के लिए चुनौती

② सामंतवादी एवं तत्वों को चुनौती मिली

⇒ इस्लाम में शास्त्र प्रतिपादित धर्म, समुदाय, सामाजिक संरचना एवं चिंतन का विरोध है अतः उन्होंने भारत के पदपालितों को आकर्षित किया जहाँ वर्णव्यवस्था जैसा कुसंजाल नहीं था और शास्त्राधारित आतंक भी नहीं था

→ आर्थिक उदारता का इस्लाम में समावेश था। जमींदारी प्रथा वंशानुगत थी जबकि इक्ता व्यवस्था हस्तांतरणीय थी जिसमें अवसर अधिक था।

→ यहाँ इस्लाम ने पुरोहितों एवं सामंतों दोनों के लिए चुनौती पेश की।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

→ शासन को दोहरी चुनौती मिली - आंतरिक स्तर पर जनता (शोषित वर्ग) एवं बाह्य स्तर पर इस्लाम की ओर से।

→ कपड़ा, साहुल, भवन निर्माण गतिविधियाँ, रहट-सिंचाई सुविधाएँ आदि प्रौद्योगिकी के अलावा इसका समतावादी एवं अपेक्षाकृत अधिक मानवीय चेहरा भारतीय शोषित वर्ग के लिए आकर्षक बना।
↓
आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन तीव्र हुए।
↓ जो परंपरागत संरचना के साथ टकराव की स्थिति में आये।

→ शास्त्राधारित संरचना को यह आभास हुआ कि यदि जनमानस को संगठित करना चाहते हैं तो उसे उस शोषित वर्ग की बात सुननी होगी और उदारता लानी होगी।
↓
भक्ति आंदोलन इसी उथल-पुथल की तार्किक परिणति रहा।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

इस्लाम - सूफी मत की भूमिका

| २ संदर्भ

→ प्रेम को भक्ति आंदोलन के केंद्र में स्थापित किया

सशक्त उदाहरण - जायसी

"मानुष प्रेम भएउ बैकुंठी
नाहिं त काह, छार इक मूठी।"

→ प्रेम के स्वरूप में परिवर्तन
(अलौकिकता से लौकिकता की ओर)

→ नारी के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन

कबीरदास साखी
नारी की झाईं परत ----

"अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?" कथन पर विचार करते हुए बताइए कि क्या भक्ति काव्य को पौरुष से हताश जाति की रचना की संज्ञा दी जा सकती है?*

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ इस्लाम के आगमन पर विवाद

शुक्लजी -
दो संदर्भ

आदिकालीन ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया

भक्तिकाल पौरुष से हताश जाति की रचना माना

"पौरुष ~~जाति~~ से हताश जाति ~~को~~ की

→ भक्ति का स्रोत पहले से ही दक्षिण से चला आरहा था उसे उत्तर में फैलने का पूरा मौका मिला।

जनता के (राजनीतिक कालों से) शून्य हृदय में फैलकर बड़े आकार में फैल जाती है।

→ वैष्णव आंदोलन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS® most trusted since 2003

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी → आचार्य शुक्ल एवं ग्रियर्सन के मत के प्रतिक्रियास्वरूप आचार्य द्विवेदी

↓

भक्ति अचानक बिजली के समान नहीं आयी बल्कि उसके लिए पहले ही मेघ तैयार हो गये थे

↓

"भक्ति आंदोलन भारतीय समाज का स्वाभाविक विकास है जो लोक एवं शास्त्र के द्वन्द्व की पृष्ठभूमि में था।"

↓

सिद्धों व नाथों की ओर से

→ यदि अगली शताब्दियों में भारतीय समाज में यह (इस्लाम का आगमन) नहीं भी हुआ होता तो भी भारत में भक्ति आंदोलन की स्थिति वैसी ही होती है जैसी अभी हुई क्योंकि यह आंदोलन बाह्य नहीं बल्कि आंतरिक रूप से प्रेरित हुआ। इस तरह आचार्य द्विवेदी भक्ति आंदोलन में इस्लाम की भूमिका को खारिज तो नहीं करते लेकिन उसे कम करके आंकते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

"मैं ज़ोर देकर कहना चाहता हूँ कि यदि इस्लाम नहीं आया होता तो भी हिन्दी साहित्य का स्वरूप 12 आने वैसा ही होता जैसा वह आज है।"

— आचार्य द्विवेदी।

⟹ मतों में समानताएँ

1. परम्परा दोनों जगह मौजूद है
2. ग्रामीण संदर्भ "केन्द्र" में इस्लाम दोनों जगह है
3. दोनों भक्ति के आकस्मिक उद्भव की संभावनाओं को नकारते हैं

⟹ असमानताएँ (गुणात्मक किस्म नहीं, मात्रात्मक किस्म की)

1. शुक्ल — इस्लाम की भूमिका को महत्व देते हैं → द्विवेदी — परम्परा की भूमिका ↑
2. दक्षिण भारतीय आलवारों के पक्ष में रहते हैं → लोक-शास्त्र द्वन्द्व के परिप्रेक्ष्य (सिद्धों व नाथों के संदर्भ में)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

शुक्लजी | द्विवेदीजी

④- वैष्णव धर्म की स्वाभाविक अभिव्यक्ति → लोक धर्म की स्वा० अभि०

⑤- भक्ति काल पौरुष से इतर जाति की रचना → स्वभाव, स्वाभाविक अभिव्यक्ति

→ ये अंतर क्यों है? दो भिन्न युगों, जरूरतों, परिस्थितियों एवं साहित्यिक दृष्टि का अंतर

• ऐतिहासिक दृष्टि एवं आलोचना दृष्टि •

शु० — की बढ़ती लोकप्रियता और वामपंथ से प्रभावित
- → केंद्र में जनता मौजूद
- → इस्लाम का आगमन महत्वपूर्ण

द्वि० — गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव
- भारतीय हितों और औप निवेशिक हितों का टकराव
- → लोक मौजूद है हिंदू सामाजिक
- → लोक - शास्त्र का द्वन्द्व प्रमुख (सिद्धों नाथों के जरिये)

नया और प्रभावी तत्व - इस्लाम का आगमन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ एक अंतर यह भी है कि इतिहास लेखन के समय आचार्य द्विवेदी शुक्ल के समक्ष कोई प्रामाणिक एवं प्रभावी इतिहास ग्रन्थ परंपरा में नहीं था। इसका ढाँचा उन्होंने स्वयं तैयार किया जबकि आचार्य द्विवेदी के समय (1940 के दशक में) कई अन्य ग्रन्थ उपलब्ध थे और उनकी कमियाँ भी जिनके आधार

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न, 'भक्ति काल लोक धर्म की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।' यद्यपि पूरे भक्ति काल के दौरान लोकधर्म का स्वरूप तत्संबंधित कवियों की विश्व-दृष्टि के अनुरूप परिवर्तनशील रहा है। समीक्षा कीजिए।

→ मध्यकालीन भारतीय समाज में राजनीतिक, सामाजिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल का दौर

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⇒ भक्तिकाल का उत्तरवर्ती शृंगार

↳ a - कृष्ण भक्ति की काव्य की बढ़ती लोकप्रियता, इसके फलस्वरूप भक्ति की अन्य धाराओं पर प्रभाव → रामभक्ति का तुलसी की मर्यादा और अनुशासन को छोड़कर माधुर्योपासना की ओर उन्मुख होना

b- भक्ति माधुर्य का शृंगार में रूपान्तरण

c- भक्ति प्राथमिकता नहीं रही

d- वात्सल्य का शृंगार में रूपान्तरण ↓

यहाँ → रति ही भक्ति का जरिया बन गया।

" हम कीर्ति अकबर की नहीं, सल्तनतों की ख्याति में शामक न उनके सम झुकी, हो वे किसी भी जाति में।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

बालकृष्ण भट्ट

① हिंदी प्रदीप के यशस्वी संपादक
↓
भारतेंदु मण्डल के सदस्यों को एक सूत्र लाना

② ख्यातिलब्ध निबंधकार (हिंदी का एडीसन)

साहित्य-समाज के बदलते हुए अंतर्संबंधों तथा भारतीय समाज-संस्कृति के प्रति गहरे जुड़ाव को स्थापित किया।

- रीतिकाल की मान्यताओं का निषेध करते हुए साहित्य एवं समाज की निकटता स्थापित की।
- साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।

③ एक समालोचक के रूप मे –
सच्ची समालोचना एवं सिय स्वयंवर
↓
हिंदी में व्यावहारिक आलोचना की शुरुआत

लेखन शैली में
- आत्मपरकता
- भावनात्मक
- व्यंग्य का पैनापन
- गद्य काव्य का आनंद देने वाले निबंध

④ एक नाटककार के रूप में भी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

भारतेंदु युग से छायावाद तक

भारतदुर्दशा
भारत-भारती
स्कन्दगुप्त
कामायनी

भारतीय नवजागरण
↓
नये तरीके से जागना
सोये हुए नहीं थे, जाग रहे थे बल्कि अब नये सिरे से जागना है।

पुनर्जागरण
↓
फिर से जागना
(पहले जागे थे, सो गये अब फिर से जागना है।

"रुडियार्ड किपलिंग"
↓
श्वेत मनुष्य बोझ सिद्धांत
(white men burden theory)

रेनेसां (पुनर्जागरण)

→ यूरोपियों का प्राचीन काल स्वर्णिम रहा किंतु उनका मध्यकाल "Dark age" कहा गया

→ भारतीय संदर्भ में मध्यकाल ही जागरण काल है, वह सांस्कृतिक जागरण का संकेत करता है –
"जागो रे सगे भाई, भाई ग्यान की आँधी रे"
" अब लौं नसानी अब न नसैंहों

→ आधुनिक शिक्षा का प्रसार - अंग्रेजी शिक्षा का हस्तक्षेप और उसने भी पहले अंग्रेजों की नीतियों ने भारतीयों को आत्मबोध एवं सक्रियता की ओर प्रेरित किया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ 1707 के बाद (औरंगजेब की मौत) अंग्रेजों का हस्तक्षेप अधिक तीव्रता से बढ़ा

→ पश्चिमी संस्कृति के साथ ही ईसाईयत का भी प्रभाव

→ आत्मावलोकन की अगली कड़ी

• भारत में धार्मिक-सांस्कृतिक सुधारों की शुरुआत
↓
- राजा राममोहन राय – 'तुहफात-उल-मुवाहिदीन'
- कबीरदास के तर्क
- न्याय मीमांसा

→ औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध सीमितता से व्यापकता की ओर
क्योंकि
• पारंपरिक उद्योगों का विनष्टीकरण
• धन निकासी का वास्तविक रूप सामने आया

→ अतः भारतीय नवजागरण पाश्चात्य पुनर्जागरण से विशिष्ट रूप से भिन्न है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

" ये असभ्य अश्वेत सभ्य श्वेतों पर बोझ हैं और यह सभ्य श्वेतों की जिम्मेदारी है कि वे इन असभ्य अश्वेतों को सभ्य बनायें जिसके लिए इन पर शासन करना जरूरी है।" "White Men Burden Theory"

| Rudiard Kipling

प्रत्येक समाज, संस्कृति एवं धर्म को समय के साथ आयीं कुरीतियों को विरेचित करने की जरूरत होती है। भारत के संदर्भ में यह पहल —

→ बुद्ध और महावीर जैसी विभूतियों के द्वारा किया गया

→ कबीर, नानक, दादूदयाल, रसखान, रहीम द्वारा

→ राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद, बंकिम चन्द्र चटर्जी तथा देवेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा

→ आत्मावलोकन, आत्मबोध एवं वर्तमान को अतीत की कसौटियों पर कसते हुए सुधार की प्रेरणा

→ भारतेंदु काल ⟶ नवजागरण का दौर

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

| भारतीय चिंतन का आधार धार्मिक रहा है। |

भारतीय समाज में — धर्मांधता, आडंबर, अतार्किक श्रद्धा
— तर्क बौद्धिकता का अभाव था
— का आगमन पाश्चात्य शिक्षा एवं मूल्यों के साथ आया।

ज्ञान शिक्षा का सूर्य पश्चिम से चला आ रहा है

इसीलिए भारतीय नवजागरण को पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव की उपज माना जाता है।

नवजागरण के साथ ही आधुनिकता, यथार्थता, तार्किकता एवं बौद्धिकता का समावेश हुआ भारतीय चिंतन में पाश्चात्य दृष्टिकोण का समावेश हुआ अतः इस आधार पर भारतीय नवजागरण पाश्चात्य के पुनर्जागरण से जोड़ा जाता है परंतु मूलतः यह सच नहीं है क्योंकि भारतीय नवजागरण की प्रकृति गतिशील है।

दूसरे पहलू में, भारत में पश्चिम का प्रभाव तो रहा ही और सामाजिक-धार्मिक सुधार भी हुए

लेकिन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

वहीं तुलसी और पुनरोत्थानवादी प्रवृत्ति की उभरी जिसकी प्रतिक्रिया ने भारतीय नवजागरण को अंतर्विरोधी बनाया।

↓
क्योंकि → यहाँ बौद्धिकता के साथ भावुकता है, तर्क के साथ आस्था भी है मूल चरित्र में धर्मनिरपेक्ष होने के बावजूद भी धर्म नवजागरण का आगमन धार्मिक आड़ में हुआ यहाँ सम्प्रदायवाद भी मौजूद है।

जबकि पश्चिमी पुनर्जागरण तर्क, बौद्धिकता एवं राष्ट्रीय व धर्मनिरपेक्षता के आवरण में हुआ

इसीलिए यदि आजादी राष्ट्रीय एकता की तार्किक परिणति है तो वहीं भारत का विभाजन साम्प्रदायिक भावना की तार्किक परिणति है।

→ भारतीय नवजागरण की प्रकृति अभिजातीय है जिसकी पहुँच गाँवों तक नहीं बल्कि शहरी मध्यवर्गियों तक सीमित रही
↓
भारतेन्दु युग में इसका कार्यक्षेत्र विस्तृत हुआ →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व की भावना

प्रबोधन कालीन मूल्यों का भी प्रभाव रहा

नारी स्वातंत्र्य, नारी समानता, नारी सशक्तीकरण

जनतांत्रिक मूल्य, उदारवादी चेतना

तर्क एवं बौद्धिकता आनुपातिक रूप से

आस्था एवं भावनात्मकता को स्थान मिला है।

→ 'न्याय और मीमांसा' में उपस्थिति, परंतु यह

'अलौकिक तत्व' की ओर है।

→ मैं कहता आँखिन की देखी तू कहता कागद की लेखी

'पण्डितवाद वदन्ते झूठा'

पाहन पूजें हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड़

जो तू बाभन बभनी जाया आन बाट ह्वे क्यों नहिं आया?

इस प्रकार कबीर मध्यकालीन मानसिकता से

बाहर निकलकर आधुनिकता में निरन्तर (प्रगतिशीलता)

में शामिल हो जाते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

dhyeyaIAS most trusted since 2003

भारतीय नवजागरण

① रामस्वरूप चतुर्वेदी

↓

पुन० के दो संकेत

- दो विसदृश संस्कृति की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा } — भारतेंदु युग, द्विवेदी, छायावाद
- आधुनिक मनुष्य के समग्र एवं संश्लिष्ट रूप की खोज } छायावाद से नई कविता में अज्ञेय और मुक्तिबोध

② मध्यकाल

- भक्ति आंदोलन
  ↓
  हिंदू संस्कृति vs इस्लामिक संस्कृति
- आधुनिक काल
  ↓
  भारत की सामाजिक संस्कृति vs पश्चिमी संस्कृति

} डॉ० रामविलास शर्मा

③ -

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

(b)- सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश के रूप में
↓
राष्ट्रीय चेतना के विकास का प्रथम चरण

- अतीत के सापेक्ष वर्तमान का पुनर्मूल्यांकन
↓
विवेक का जागरण

दो विसदृश संस्कृतियों की जातीय टकराहट के परिणामस्वरूप उत्पन्न रचनात्मकता एक नवीन चिंतन को जन्म देती है।

→ मध्यकाल ↓
मूल्यों एवं नैतिकता के स्रोत → धर्म एवं धर्मग्रन्थ
↳ की बुनावट सामाजिक / सामूहिक परिदृश्य में

आधुनिककाल
मूल्यों, मर्यादाओं, नैतिकता का निर्धारण
व्यक्ति के द्वारा वैयक्तिक दृष्टिकोण के आधार पर
अस्मितामूलक लेखन → अस्मिता की तलाश

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

'अनुकूल सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के परिणाम की बजाय भारतीय चेतना आयातित उदारवादी दृष्टिकोण की अधिक उपज है।'

— मेहता -मालती का उपन्यास

↓

दो धाराओं में विभक्तिकरण

- समष्टि - व्यष्टि
- मध्यकालीन - आधुनिककालीन
- समाज - व्यक्ति
- तर्क - आस्था
- बौद्धिकता - भावनात्मकता

} मध्यवर्गीय चेतना में स्थान
↓
किंतु अनिश्चितता की बड़ी उपाधि है

- विभाजित व्यक्तित्व
- अतृप्त आकांक्षाओं के मानव की ओर
↓
आधुनिक परिप्रेक्ष्य में एक मुकम्मल व्यक्तित्व की तलाश

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

२

इस ↓

→ सांस्कृतिक चेतना को भारतेंदु युग से लेकर छायावाद तक अभिव्यक्ति मिली है।

→ चेतना स्थिर न रहकर विकासशील रही।

→ सांस्कृतिक चेतना + आधुनिकता का समावेश → द्विवेदी युग

→ सांस्कृति चेतना + आधुनिकता का उत्कृष्ट रूप → छायावाद ↓

आधुनिक मनुष्य के अस्तित्व की पहचान

वैयक्तिकता का निरूपण/ व्यक्ति प्रमुख

~~व्यक्ति~~ ↓

व्यक्ति से समष्टि की यात्रा → प्रगतिवाद

व्यष्टि – समष्टि दो किन्तु आनुपातिक संतुलन के साथ निरूपण ⟶ प्रयोगवाद

↓

समाज की नकारा नहीं, किंतु व्यक्ति की महत्ता की

समाज को उतना ही महत्व जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक हो। — अज्ञेय की कविता में।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"मुक्तिबोध" - व्यक्ति/व्यष्टि को समष्टि पर वरीयता नहीं देते। वे व्यक्ति की भूमिका को उतना ही स्वीकार करते हैं जितना समाज के उत्कर्ष के लिए उपादेयतापूर्ण है।

आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त नवजागरण परक चेतना के स्वरूप के प्रश्न पर विचार करें।

"मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
मुझे फेंको मत।"

"कौन जाने इतिहास की गति से
सहसा मंथर पड़ जाने पर
इतिहास की सच्चाई इस
टूटे हुए पहिये का सहारा ले।"

- धर्मवीर भारती

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

भारतीय एवं इस्लामिक संस्कृतियों की टकराहट

1- दोनों धार्मिक व आध्यात्मिक आधार लिए है

2 पुरोहितों का वर्चस्व व उलेमाओं के वर्चस्व को सुनिश्चित करती है

3 आस्था और भावुकता को दोनों में स्थान

4 सामंतवादी जमींदारी व्यवस्था व इक्तादारी व्यवस्था

अतः ये संस्कृतियाँ इतनी भी विदृश नहीं हैं कि कोई रचनात्मक ऊर्जा का उद्भव हुआ हो

यद्यपि कला एवं स्थापत्यकला के विकास में यह कुछ हद तक उचित है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

भारतीय - पाश्चात्य संस्कृति

① आस्था - भावुकता — तर्क + बौद्धिकता

② — पूँजीवादी व्यवस्था
— प्रगतिशील वैचारिकता
— आधुनिकता का पर्याय

अतः व्यापक विसदृशता के फलस्वरूप यहाँ इन संस्कृतियों की टकराहट को रचनात्मक ऊर्जा अर्थात् नवजागरण का नाम देना औचित्यपूर्ण है क्योंकि इस ऊर्जा की व्यापकता भारतीय समाज, संस्कृति, चिंतन, जीवनशैली, विचारशीलता, अभिव्यक्ति पक्ष एवं राजनीतिक व आर्थिक सभी महत्वपूर्ण आयामों पर प्रदर्शित होनी थी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ बंगाल पुनर्जागरण से भिन्नता

पूर्वार्द्ध
↓
पश्चिमी संपर्क प्रभावी
↓
तर्क – बौद्ध की ओर
रुझान

उत्तरार्द्ध
↓
भारतीय तत्वों और
सांस्कृतिक तत्वों की
ओर बल
↓
बंकिमचंद्र चटर्जी
विवेकानंद
↓
शामिल संप्रदायिकता बढ़ी
बाल्मिया

सांप्रदायिक एवं धर्म
निरपेक्ष स्वरूप
↓
उत्तर भारत
बंगाल

ध्येय IAS most trusted since 2003
Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

भारतीय नवजागरण [डॉ. रामविलास शर्मा]

मध्ययुगीन सांस्कृतिक जागरण → लोक जागरण

आधुनिक सांस्कृतिक जागरण → नवजागरण

↓

सामंत विरोधी मूल्य

↓

प्रबोधन के करीब चिंतन → मध्यवर्ग से सीधा जुड़ाव

↓

अधिकारों व आकांक्षाओं की पूर्ति के बीच राज्य, धर्म आदि की बाधा नहीं चाहता बल्कि

↓

स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, लोकतांत्रिक मूल्य, राष्ट्रीय स्वातंत्र्य, राष्ट्रीय मानता जैसे मूल्यों की चाह रखता है।

पश्चिमी रेनेशां के समकक्ष स्थापित होता है।

↓

→ चर्च व्यवस्था, भारत का पुरोहितवाद

↓

फिर भी पश्चिम के रेनेशां एवं भारतीय नवजागरण को एक नहीं कहा जा सकता।

↓

मूल कारणों में समानता है किंतु परिणामों के स्तर पर विविधता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

"कम कीर्ति अकबर की नहीं"- - - - - -

डॉ॰ नामवर सिंह -> 'गुप्तजी ने 'भारत-भारती' में खण्डित राष्ट्रीय चेतना का वर्णन किया है।"

पुरोत्थानवाद व संप्रदायवाद के आरोप का आधार प्रदान करते हैं - यवनों

अकबर को जातीय गौरव का प्रतीक है। गुप्त जी ने अकबर को अशोक के समकक्ष स्थान प्रदान करते हैं जो हिंदुत्व के प्रति ग्रस्त होने के गुप्त जी पर आरोप को खारिज करता है।

↓

अकबर की प्रशंसा इसीलिए उन्होंने की क्योंकि अकबर की सोच सांप्रदायिकता के संकीर्ण दायरे में भी कैद नहीं थी - यह सोच। संकेत गुप्त जी की व्यापक दृष्टि का है।

गुप्त जी 'हिन्दु' के अर्थ को संकीर्ण धार्मिक अर्थ में नहीं बल्कि समग्रता में। लेकर

* "कलिया आख्यान" में कहते हैं - हिंदुस्तान में रहने वाला हर व्यक्ति हिंदू है चाहे वह किसी जाति का हो धर्म, संप्रदाय

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

गुप्त जी के समय 'हिन्दु' शब्द का वर्तमान की तरह सांप्रदायीकरण नहीं था; परंतु यह वर्तमान संदर्भ में भी उनकी ये पंक्तियाँ

"क्या सांप्रदायिकता से कभी एक फिर बहता अहो
बनती नहीं है एक माला विविध सुमनों से अहो।"

→ खड़ी बोली के लिपि एक राजभाषा भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने का यह शुरुआती चरण था जिसमें 'शब्दों' की प्रचलता ~~मैथाल~~ कम उपस्थिति थी

→ गुप्त जी को यह श्रेय मिलना चाहिए कि काव्य भाषा के रूप में उन्होंने हिन्दी (खड़ी बोली) को प्रतिष्ठा दिलायी जिसमें 'तुकान्तता' एवं अभिधा शक्ति की निर्णायक भूमिका रही। यहाँ अनुप्रास की व्यापक योजना भी की गयी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

वेदना की आराधिका : महादेवी

(i) महादेवी: छायावाद की आधार स्तंभ

↓

पर उनकी पीड़ा दोहरी है

- आत्माभिव्यक्ति एवं प्रेम पर बंदिशों के कारण
- स्त्री होने के कारण

(ii) यही कारण है कि वे अपने 'प्रेम' को प्रेम कहने के बजाय आध्यात्मिकता के आवरण में प्रस्तुत करती है।

"मैं कण-कण में डाल रही अलि आँसू के"

(iii) आध्यात्मिक एवं दार्शनिक आधार की वजह से इन्हें आधुनिक मीरा भी कहा जाता है

↓

दार्शनिकता का आधार

↓

- गाँधीवादी आत्मपीड़न का दर्शन
- बौद्ध दुःखवाद एवं करुणावाद

(iv) जगत की स्वार्थपरता की झलक

"मत व्यथित हो फूल
किसको सुख दिया संसार ने!"

"विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना"

(v) पीड़ा के प्रति रोमांटिक दृष्टिकोण

"तुमको पीड़ा में ढूँढा,
तुममें ढूँढूँगी पीड़ा,
बन्द नहीं होगी यह
मेरे प्राणों की क्रीड़ा"

वेदना की अतल गहराइयों में उतरकर पीड़ा के कारणों की खोज

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS® most trusted since 2003

"दुःख मेरे जीवन का ऐसा काव्य है जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है।" – महादेवी

↓

व्यापक मानवतावादी चेतना का संकेत

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"एक और मन रहा राम का ---

→ पौराणिक राम में नवीनता का समावेश करते हुए उन्हें आधुनिकयुगीन मध्यवर्गीय व्यक्ति में रूपान्तरण → आशा एवं निराशा के गहन द्वन्द्व का भाव द्वारा चित्रण किया गया।

→ राम के प्रति निराला सांकेतिक प्रतीक योजना का सहारा लेते हैं जिसके कारण ही निराला के राम कभी निराला के प्रतीक बन जाते हैं, तो कभी उनके युग निर्माता गांधी के प्रतीक बन जाते हैं तो कभी संघर्षशील आधुनिक युवा।

→ देवी द्वारा अंतिम इंदीवर चुराये जाने की पृष्ठभूमि में महत्ती पराजय की आशंका रामके भीतर आत्माधिक्कार के बोध को जन्म देती है लेकिन इससे पहले कि राम निराश और हताश होते उनका दूसरा मन सक्रिय होता है। यह दूसरा मन हर व्यक्ति के भीतर मौजूद है और इसका संबंध जुड़ता है — मुक्तिबोध की जीवटता व जिजीविषा

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

और इसके कारण उसके भीतर व दीनता और पलायन का भाव नहीं आता।

→ यह दूसरा मन बुद्धि के दरवाजे पर दस्तक देता है और वह उसे निराश नहीं करती। आसन्न संकट के समाधान की ओर इशारा करती है --- "यह है उपाय --- कहती थी माता मुझे सदा राजीवनयन" यहाँ पर आकर 'दृढ़ आराधना और मौलिक शक्ति की कल्पना' में बौद्धिकता का समावेश होता है जो भारतीय नवजागरण की महत्वपूर्ण विशेषता है। दृढ़ आराधना के पहले भी 'हनुमान ऊर्ध्वगमन प्रसंग' में बौद्धिकता का अभाव उसकी विफलता का आधार तैयार करता है।

→ यही बौद्धिकता आत्म हनन की उस शर्त को पूरा करने का आधार तैयार करती है जिसके बिना दृढ़ आराधना तार्किक परिणति तक नहीं पहुँचती। यह आत्महनन ही है जो

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

दृढ़ आराधना का आराधना से अलगाती है

→ यहाँ पर आकर राम के व्यक्तित्व की दृढ़ता मूर्त हो उठी। निराला ने राम को एक आत्मधिक्कार के बोध की मनोदशा से बाहर निकलने के लिए उसी तरह स्मृति संचारी भाव का सहारा लिया है जिस तरह पुष्प वाटिका मिलन प्रसंग में। बस फर्क यह है कि वहाँ पर सीता की कुमारिका छवि की स्मृति राम को उसी आहत मनोदशा से बाहर निकालती है और यहाँ पर माता की स्मृति।

→ इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो शक्ति पूजा के जरिये सांस्कृतिक अस्मिता की तलाश यहाँ पर आकर मुकम्मल रूप लेती दिखायी पड़ती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

छायावादी कविता अंततः कर्मवाद की प्रेरणा देती है।
प्रसाद शैव दर्शन के आधार पर, निराला अद्वैत वाद के आधार पर और पंत सर्वात्मवाद के आधार पर

i) छायावाद पर पलायनवाद का आरोप लगाया गया

- "ले चल मुझे भुलावा देकर"
- "मुझे जाना है जग के पार"
- रहस्यात्मकता और उस पर आध्यात्मिकता का आवरण

ii) दर असल ये सारी चीजें साधन हैं
↓
राष्ट्रीय आंदोलन की असफलता से जनित निराशा और हताशा से अब उबरने का
↓
इसके लिए रचनात्मक प्रेरणा एवं रचनात्मक ऊर्जा हासिल करेगा

बहुत कुछ इसकी भूमिका रचनात्मक कार्यक्रम वाली है।
↓
(iii) इसका प्रमाण है "राम की शक्तिपूजा"
↓
निराला प्रकृति अद्वैतवाद के धरातल पर मौलिक शक्ति की कल्पना कर रहे हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ समन्विति → गांधी द्वारा अहिंसात्मक सत्याग्रह की संकल्पना

→ प्रसाद की कामायनी

निराशा व हताशा से घिरे मनु का श्रद्धा का द्वारा आह्वान

" शक्ति के विद्युत कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं हो निरुपाय
समन्वित करो समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए

" ज्ञान, क्रिया और इच्छा के समन्वय से समरसतावादी आनंदवाद की ओर प्रेरणा।

→ पंत → एक ही सत्ता में सभी सत्ताओं को निहित मानते हैं —→ सर्वात्मवाद

→ राष्ट्र की बिखरी हुई शक्तियों व ऊर्जा को समवेत करने का आग्रह करते हैं —

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"पूर्ण तंत्र मानव वह ईश्वर"

राष्ट्रीय आंदोलनों की असफलता भारतीयों में हताशा व निराशा को जन्म दे रही थी फलतः अकर्मण्यता छाय रही थी। ऐसी ही स्थितियों से बाहर निकलने के लिए इन रचनाकारों ने प्रेरणाएँ एवं कर्म की ओर उन्मुख होने के संदेश दिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न 5 – उत्तर छायावाद छायावाद के प्रति प्रतिक्रिया है तो छायावाद का विस्तार भी। इस कथन पर विचार करते हुए उत्तर छायावाद के वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिए।

(i) द्विवेदी युगीन स्वच्छंदतावादी काव्य धारा, जो कभी छा० को छूती है और कभी उसे झटकती है दिखाई पड़ती है; अंततः उत्तर छा० के रूप में तार्किक परिणति

(ii) प्रतिक्रिया

(iii) छा० के विस्तार के रूप में

• छायावादी वैयक्तिकता व रोमांटिकता स्व-दुखों से संबद्ध होकर ओज और मस्ती के स्वर में रूपांतरित हुई

• यही रोमांटिकता नवजागरण के संदर्भों से जुड़कर उत्सर्गधर्मी राष्ट्रीयता में तब्दील हो गयी।

"मुझे तोड़ लेना वन माली उस पथ पर तुम देना फेंक मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

लेकिन उत्तर छायावाद की भिन्न एवं विशिष्ट पहचान भी है जिसका श्रेय है
छायावाद के प्रति इसके प्रतिक्रिया के भाव को जाता है

(i) छायावादी अयथार्थपरकता की प्रतिक्रिया में यथार्थपरकता का आग्रह

यथार्थपरकता का यह आग्रह नारी चेतना व प्रेम दृष्टि के धरातल पर भी दिखता है
↓
छायावादी अशरीरी प्रेम की प्रतिक्रिया में ↓ शरीरी प्रेम के आग्रह के साथ

रूप की आराधना का मार्ग आलिंगन नहीं तो और क्या है

(ii) मानवतावादी चेतना → रोमांटिक के बजाय वह सामाजिक चेतना से परिपूर्ण

(iii) छायावादी वायवीयता की प्रतिक्रिया में अभिधात्मकता का प्रयोग

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

उत्तर छा० छायावाद से जुड़ने और छूटने दोनों का आग्रह लेकर उपस्थित हुआ है।

" श्वानों को मिलता दूध ---

" हटो व्योम के मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं ---

" रोटी दो उन्हें मत दो दर्शन
जिनको भूख लगी है,
दर्शन देना उन्हें दगा है,
झूठ है और ठगी है। "

— दिनकर

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न छायावादी काव्यान्दोलन का आंतरिक उद्वेलन उसे स्वभावतः ही प्रगतिवाद की ओर ठेले लिये जा रहा है। कथन पर विचार करते हुए बताइए कि तद्युगीन राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों ने इस रूपांतरण को किन रूपों में प्रभावित किया?

↓

छायावादी कविता का आरम्भिक रुझान

- रहस्यात्मकता की ओर
- पलायनवाद की गंध

↓

- छायावाद की व्यापक आलोचना

↓

- छायावादी-विरोधी मानसिकता का प्रभावी होना

इस पृष्ठभूमि में युगीन परिस्थितियों के प्रति छायावाद को अनुक्रियाशील होना पड़ा फलतः →

↓

छायावाद को विकासशील स्वरूप प्राप्त हुआ जो

↓

प्रगतिवाद का आधार तय करता है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ निराला में यह अनुक्रियाशीलता अधिक है –

– भिक्षुक, बादल राग, सरोज स्मृति व गान आदि।

→ परवर्ती चरण में वामपंथ एवं समाजवाद के बढ़ते प्रभाव की पृष्ठभूमि में –

प्रसाद – स्कंदगुप्त →

अन्न पर स्वत्व है भूखों का ——

पंत – युगांत के जरिये छायावाद के अंत की घोषणा।

↓

"रूपाभ" पत्रिका का संपादन

→ प्रगतिवाद का सैद्धान्तिक घोषणापत्र बना।

– युगवाणी के जरिये नये युग की वाणी का संकेत

निष्कर्ष निराला और पंत द्वारा रूपान्तरण की इस प्रक्रिया का नेतृत्व प्रदान किया गया। परंतु इसके बीज छायावाद में मानवतावाद के जरिये।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

प्रश्न 'प्रगतिवाद छायावाद के प्रति प्रतिक्रिया है और यह प्रतिक्रियावादिता उसकी कमजोरी बन जाती है।' विचार कीजिए।

1- * निराला और पंत द्वारा छायावादी प्रगतिशील चेतना के प्रगतिवाद में रूपांतरण का आधार तैयार किया जाना

↓

तथापि इसका छायावाद के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में सामने आना

2- छायावादी अतिशय अनुभूतिशीलता की प्रतिक्रिया में वैचारिकता के आग्रह के साथ प्रगतिवाद का आगमन

↓

जो समाजवादी यथार्थ के रूप में आया

↓

जिसका सैद्धांतिक आधार मार्क्सवाद ने तैयार किया

↓

लेकिन →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

इस क्रम में भाववाद निरंतर अनुभूति निरपेक्ष होता चला गया और इसका यथार्थ से दूर हो जाना तथा विचारबाजी व नारेबाजी में परिणति होना

3- छायावादी अयथार्थपरकता की प्रतिक्रिया में यथार्थपरकता का आग्रह जो प्रकट हुआ-

(a). प्रकृति सौंदर्य चेतना के धरातल पर जिसके ~~प्रकृ~~ इसके केंद्र में उपयोगितावादी आग्रह उपस्थित है।

↓

- सौंदर्य को देखने की एकांगी दृष्टि
- सौंदर्य को समग्रता में देखना संभव नहीं रहा

(b) छायावादी अशरीरी प्रेम की प्रतिक्रिया में शरीरी प्रेम के आग्रह के साथ उपस्थिति

↓

- कहीं न कहीं नारी के अंतर्मन में ~~झां~~ झाँकने की उनकी क्षमता को कम करता है
प्रभावित

"योनि मात्र रह गई मानवी
निज आत्मा का कर अर्पन"
— पंत

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

c- तद्युगीन राष्ट्रीय चिंतन और उनकी चिंताओं से साक्षात्कार

- साम्प्रदायिकता पर प्रहार (बाधक के रूप में इसकी पहचान करता है। जबकि छायावाद इस पर मौन रहता है।)
- सत्तापरिवर्तन बनाम व्यवस्थापरिवर्तन के द्वन्द्व में ये
  ↓
  राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्ति देते हैं
  ↓
  इस क्रम में इनका स्वाभाविक रुझान व्यवस्थापरिवर्तन की ओर होता है
  ↓
  राष्ट्रीय आंदोलन के मध्यवर्ग के प्रति इन नकारात्मकता का दिखती पड़ता।

d - व्यंग्यात्मकता

समाज के विद्रूप यथार्थ के साथ साक्षात्कार

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

4- छायावादी लाक्षणिकता की प्रतिक्रिया में अभिधात्मकता का आग्रह

- शिल्प एवं काव्य सौंदर्य की उपेक्षा
- जनवादी लोकभाषा एवं आंचलिक लोकोक्तियों का प्रभाव

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ए. प्रयोगवाद को छायावाद और प्रगतिवाद के प्रति प्रतिक्रिया मानना उचित नहीं है। इसके कारण प्रयोगवाद की स्वतंत्र समझ विकसित नहीं हो पाती है। ध्यान का विस्तार करें।

प्रयोगवाद की बात करनी है

→ प्रगतिवाद के उद्भव के मूल में
↓
तत्कालीन समाज में बढ़ती मार्क्सवादी एवं समाजवादी चेतना का प्रभाव
↓
जो रूप-सौंदर्य, व रहस्यवाद की उपेक्षा करता है

जबकि ये तत्व मनोरम रूप से छायावाद के विशिष्ट लक्षण रहे हैं
↓
और इनके विरोध के कारण ही प्रगतिवाद को उसकी प्रतिक्रिया माना जाता है
↓
वहीं दूसरी ओर

किन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रयोगवाद की उत्पत्ति
की परिस्थितियाँ
↓
शिल्प के आधार पर
नवीनता का अन्वेषण

⇒ प्रतिक्रिया मानना
उचित नहीं

- प्रतिक्रिया मानने का आधार ↓
- क्यों उचित नहीं ?
- स्वतंत्र समझ का विकसित न होना

प्रयोगवाद → अयथार्थपरकता के विरुद्ध प्रतिक्रिया है।

- छायावादी अतिशय अनुभूतिशीलता — यथार्थवाद से दूर ले जाती है — पलायनवाद, अतिभावुकता
- प्रगतिवादी अतिवैचारिकता
  - प्रचारवादी व नारेवाजी वाली अभिव्यक्ति

अतः प्रयोगवाद में

यह विचार प्रमुख रहा → अनुभूति विचारों से खाली नहीं होती
→ विचार अनुभूति - निरपेक्ष नहीं होते।

इसलिए प्रयोगवाद का आगमन अनुभूति और विचारों के संश्लेषण के रूप में होता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

अनुभूति एवं विचारों का यही संश्लेषण प्रयोगवादी यथार्थपरकता के रूप में सामने आता है

जीवन की समझ— छायावाद और प्रगतिवाद जीवन को पक्षों में बाँट कर देखते हैं।

↓

अतः जीवन की एक मुकम्मल समझ नहीं बन पाती

छायावाद जीवन को उदात्त व अनुदात्त में बाँटता है
↓
और आग्रह उदात्त की ओर

प्रगतिवाद
↓
उपयोगी व अनुपयोगी करके
↓
और आग्रह अनुपयोगी की ओर

• जीवन के सत्य को

जबकि प्रयोगवाद में जीवन के सत्य को संपूर्णता में पाने की चाह दर्शाता है

↓ यह प्रवृत्ति —

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रयोगवाद में वाद-विरोध को लाता है 3

~~यह जीवन के सत्य [illegible] मानने के लिए अनिवार्य पूर्व शर्त है परन्तु~~

'वाद-विरोध' जीवन के सत्य को संपूर्णता में समझने की पूर्व शर्त तो है परन्तु काफी नहीं

↓

जो प्रयोगवादी कवियों को नवीन राहों के अन्वेषण की ओर ले जाता है 4

↓

यह अन्वेषण उद्घाटित करता है कि

↓

जीवन एक सत्य नहीं,
बल्कि खण्ड-खण्ड सत्यों की एक शृंखला है

↓

और इस रूप में 'जीवन के सत्य से साक्षात्कार प्रयोग-दर-प्रयोग की अपेक्षा करता है 5

↓

जो बिना साहस और जोखिम के संभव नहीं

↓

और फिर इसी आत्म-स्थिति एवं आत्म विस्तार 6 की प्रवृत्ति में व्यक्तिवादी चेतना आकार लेती है 7

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रयोगवाद : प्रगतिवाद के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में

परिप्रेक्ष्य

(i) वाद-विरोधी

(ii) व्यक्तिवादी चेतना

(iii) रूप एवं संरचना को महत्व देना [शिल्प के नवीन प्रयोग]

[प्रयोग दोहरा साधन है]

→ नवीन सत्य के संधान का

→ नवीन सत्य की अभिव्यक्ति हेतु नवीन भाषा एवं शब्द की तलाश

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रयोगवाद : छायावाद के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में

परिप्रेक्ष्य

छायावाद का विस्तार

- प्रयोगवादी व्यक्तिवादी चेतना
- प्रयोगवादी आत्मनिर्माण एवं आत्मविस्तार

प्रयोगवादी रूपगत प्रयोगशीलता
↓
इस प्रयोगवाद छायावाद के विस्तार के रूप में सामने आता है, परन्तु →

छायावाद के प्रति प्रतिक्रिया

प्रयोगवाद ↓

- अनुभूति एवं विचार के संश्लेषण के रूप में उपस्थित होता है
↓
इस प्रकार छायावादी अतिशय अनुभूतिशीलता का निषेध होता है
↓
- प्रयोगवाद जीवन को संपूर्णतः में देखने का हिमायती है
↓
लघु, उपेक्षित, तिरस्कृत, अनुपात्त आदि में सौंदर्य की तलाश करता है
↓
जो छायावादी उदात्तता की प्रतिक्रिया स्वरूप है।

- नारी चेतना व प्रेम चिंता
↓
शारीरी प्रेम का आग्रह
↓
जो यौन कुण्ठा व्यक्त यौन प्रतीकों

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS® most trusted since 2003

के जरिये प्रकट होकर आता है [अज्ञेय, शकुंतला माथुर आदि]

- <u>यथार्थपरकता का आग्रह</u> 5

छायावादी कल्पनाशीलता एवं अयथार्थपरकता का निषेध

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रगतिवाद के परिप्रेक्ष्य में प्रयोगवाद

प्रगतिवाद के प्रति प्रतिक्रिया

1- प्रगतिवादी अति वैचारिकता के प्रति प्रतिक्रिया
↓
• विचार एवं अनुभूति के संश्लेषण को महत्व देना

2- मार्क्सवाद के प्रति वैचारिक प्रतिबद्धता के प्रति प्रतिक्रिया
↓
• वाद-विरोध के रूप में सामने आती है

3- व्यक्तिवादी एवं वैयक्तिक के प्रति उपेक्षा के प्रति प्रतिक्रिया
↓
• व्यक्तिवाद को महत्व देना

4- रूप तत्व की उपेक्षा के प्रति प्रतिक्रिया
↓
• रूपगत एवं सोद्देश्य प्रयोगशीलता का आग्रह

प्रगतिवाद का विस्तार एवं विकास
↓
1- मार्क्सवाद से प्रभावित कवि भी शामिल, यहाँ तक कि बहुसंख्यक भी हैं

• सौंदर्य-चेतना के धरातल पर अंतर यह है कि प्रगतिवाद ने उपयोगिता में सौंदर्य देखा जबकि प्रयो० लघु, उपेक्षित, तिरस्कृत व अनुदात्त में सौंदर्य की खोज करता है

2- नारी एवं प्रेम चेतना के धरातल पर
↓
शरीरी प्रेम का आग्रह

3- यथार्थपरकता का आग्रह अंतर यह कि प्रगतिवाद में यह समष्टि में है जबकि प्रयोगवाद में व्यष्टि में।
(समष्टिगत, व्यष्टिगत)

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रगतिवाद

जिन संदर्भों में यह ~~प्रयोगवाद~~ प्रगतिवाद की सीमाओं को दूर करता है –

- व्यक्ति एवं व्यक्तित्व को अहमियत
- रूप को महत्व देना
- अनुभूति से संबद्ध विचारों को महत्व देना
- प्रयोगवाद का विरोध मार्क्सवाद से नहीं है बल्कि उसकी एकांगी व्याख्या की प्रकृति से है तथा उसकी नकारात्मकता से है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

(ब) प्रतिक्रिया मानना क्यों उचित नहीं ?

1- प्रयोगवाद दोनों काव्यांदोलनों की सीमाओं की समझ रखता है और उनसे बाहर निकलने की कोशिश की है

↓

जो हिंदी साहित्य को समृद्ध करती है।

2- प्रयोगवादी काव्यांदोलन 'न्यू क्रिटिसिज्म मूवमेंट' एवं टी.एस. इलियट के प्रभाव में आकार ग्रहण करता है

↓

3- अतः प्रयोगवादी काव्यांदोलन स्थानीय परिस्थितियों की उपज नहीं बल्कि पाश्चात्य प्रभाव इसके आविर्भाव की मुख्य आधार भूमि है।

4- फ्रांस के प्रतीकवाद का प्रभाव

↓

जो प्रतीकों के जरिये अभिव्यक्ति को महत्व दिया देता है

→ फ्रॉयड का प्रभाव → ये प्रतीक यौन प्रतीकों में परिवर्तित हो जाते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ प्रयोगवादी कविता में बौद्धिकता का प्रबल आग्रह है → यहाँ प्रयोगवादी कविता रोमांटिकता से गैर-रोमांटिकता की ओर अग्रसर होती है।

→ सामाजिक रूढ़ियों के प्रति प्रबल तेवर

दरअसल प्रयोगवादी कविता छायावाद एवं प्रगतिवाद के प्रति प्रतिक्रिया नहीं है। इसे इस रूप में देखना उचित प्रतीत नहीं होता; लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि छायावाद व प्रगतिवाद की प्रयोगवाद के स्वरूप निर्धारण में कोई भूमिका नहीं है।

गहराई से विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष उभर कर सामने आता है कि प्रयोगवादी काव्यांदोलन स्थानीय परिस्थितियों की उपज नहीं, यह पाश्चात्य साहित्य से संपर्क का परिणाम है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

तारसप्तक से जुड़े कुछ कवियों ने यदि मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति वैचारिक प्रतिबद्धता को बनाये रखते हुए प्रयोगवाद के जरिये प्रगतिवाद की धारा को समृद्ध करने का प्रयास किया तो कुछ ने प्रगतिवाद से इतर एक भिन्न काव्यांदोलन का रूप देने का प्रयास किया। इस क्रम में दोनों ही श्रेणी के रचनाकार पश्चिम के न्यू क्रिटिसिज्म ब्रूकमेर व टी० एस० इलियट के प्रभाव में आते हैं। प्रत्यक्षतः या परोक्षतः। इसी प्रभाव में वे कविता के रूप व संरचना को महत्व देते हुए हिन्दी कविता को एक अलग दिशा देने की कोशिश करते हैं — विशेषतः अज्ञेय न केवल हिंदी कविता को बौद्धिकता के करीब लाने की कोशिश करते हैं बल्कि इसे मैं रोमांटिकता से गैर रोमांटिकता की ओर ले जाने की कोशिश करते हैं।

यही कोशिश प्रयोगवादी कविता

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

की पृथक एवं विशिष्ट पहचान निर्मित करती है जिसे तब तक पहचानना मुश्किल है जब तक प्रगति प्रतिक्रियावादी मानसिकता के साथ प्रयोग वाली कविता को देखने की कोशिश की जाएगी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

छायावादोत्तर काव्यांदोलन

छायावाद की प्रतिक्रिया में काव्यांदोलन

- 1930 के दशक में
  - ↓ दो काव्यांदोलन चले
  - → एक दूसरे से पृथक थे तथा एक-दूसरे से घुले हुए भी चले
  - ↓ उत्तर छायावाद एवं प्रगतिवाद
- 1943- तारसप्तक
  - ↓ प्रयोगवाद की शुरुआत
  - ↓ प्रेरणा
    - प्रगतिवाद की सीमाएँ
    - व्यक्तिवादी चेतना का उभार
    - सामूहिकता से मोहभंग
    - अस्तित्ववादी चिंतन की बढ़ती लोकप्रियता की पृष्ठभूमि में

रूस पर जर्मनी का आक्रमण (1941)

उत्तर छा. एवं प्रगतिवाद में पूर्णतः पार्थक्य

- उत्तर छायावाद → महत्वपूर्ण है → राष्ट्रीय आंदोलन को
  - राजनीतिक मुक्ति सर्वोपरि
- प्रगतिवाद → व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर राष्ट्रीय आंदोलन के विरोध में आये
  - सामाजिक-आर्थिक मुक्ति को राजनीतिक मुक्ति पर प्राथमिकता

1941 तक द्वितीय विश्वयुद्ध का स्वरूप साम्राज्यवादी से जनवादी युद्ध हो जाता है → रूस के युद्ध में शामिल होने के बाद

अगले से भी अगले पृष्ठ पर →

ध्येय IAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

उत्तर छायावाद – प्रगतिवाद

साम्य

① दोनों का आगमन छायावादी अयथार्थता की प्रतिक्रिया में
↓
यथार्थपरकता के आग्रह के साथ

② प्रगतिशील चेतना का आग्रह मौजूद

③ छायावादी अशरीरी प्रेम की प्रतिक्रिया में शरीरी प्रेम का आग्रह

④

⑤ शिल्प और भाषा की तुलना में संवेदना को अधिक महत्त्व

वैषम्य

उत्तर छा॰		प्रगति॰
×	1- वैचारिक प्रतिबद्धता को लेकर	✓
सामाजिक यथार्थ ~~वाद पर समान~~	2- यथार्थवाद के स्वरूप की भिन्नता	समाजवादी
राजनीतिक मुक्ति ✓	3- राष्ट्रीय आंदो॰ को लेकर भिन्नता	सामाजिक-आर्थिक मुक्ति ✓
साध्य भी और साधन भी (समय सापेक्ष)	4- साहित्यिक दृष्टि में भिन्न	साधन है, साध्य नहीं।
	5- सौंदर्यचेतना	उपयोगिता का आग्रह
✓ ←	6- रोमांटिक भाव-बोध को लेकर	— × (भिन्न स्तर पर) ↓ (वैचारिक स्तर पर)
व्यापक	7- मानवतावाद के स्तर पर	सीमित
✓	8- व्यष्टि-समष्टि का संतुलन	× (अभाव)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

→ प्रयोगवाद की इस धारा का आग्रह करते हुए अज्ञेय का आगमन

⇒ प्रगतिवाद की सीमाएँ -

- मार्क्सवाद की संकीर्ण नजरिये से व्याख्या
- व्यक्ति एवं व्यक्तित्व की उपेक्षा
- रूपतत्वों की उपेक्षा

↓

इस काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि - मुक्तिबोध

अज्ञेय एवं मुक्तिबोध दोनों प्रयोगशील हैं लेकिन भिन्न कारणों से।

→ 1951 - दूसरा सप्तक → साथ ही नयी कविता की शुरुआत

↓

प्रयोगवाद के अंतर्विरोधों का उभर कर सामने आना

। नई कविता

समष्टिवादी धारा	व्यष्टिवादी धारा
प्रतिनिधि - मुक्तिबोध	- अज्ञेय

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

1960 का दशक → समकालीन कविता
↓
व्यवस्था विरोध को आधार बनाती है।
(मुक्तिबोध का विस्तार यहाँ तक भी)

1960 के अंत में → जनवादी कविता
↓
~~क्रान्तिकारी~~ क्रांतिधर्मी
चेतना में परिवर्तित

नागार्जुन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

प्रश्न → "नई कविता प्रयोगवाद की तार्किक परिणति है।" कथन पर विचार कीजिए।

नई कविता की शुरुआत
↓
~~1945 - दूसरा सप्तक~~
→ 1951 - दूसरा सप्तक
'नई कविता'
↓
जगदीशचंद्र माथुर

प्रयोगवादी कई कवि भी शामिल

तार्किक परिणति
↓
गिरिजाकुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र

- प्रयोगधर्मिता के स्तर पर
- व्यक्तिवादी चेतना का प्रसार
- शिल्प के चमत्कार से ⟶ संवेदना के धरातल पर प्रगतिशीलता की व्यापकता
- प्रयोगवादी व्यक्तिपरकता से ⟶ समष्टि की ओर विस्तार
- लघु मानव की संकल्पना, कुंठा व सूक्ष्मतम भावों ⟶ की खुली अभिव्यक्ति की उपस्थिति

Model on next pg.

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रयोगवाद का ही नई कविता में रूपान्तरण

दूसरा सप्तक, 1951

→ अज्ञेय का वक्तव्य

- खुद को प्रयोगवादी की बजाय नया कवि कहना

→ 'नई कविता' आंदोलन में अधिकांश प्रयोगवादी कवियों की सक्रियता

→ प्रयोगवाद के अंतर्विरोधों के आलोक में नई कविता की धाराओं का विभाजन

साम्यता के धरातल

- प्रयोग की उपस्थिति (रूपतत्व का महत्व)
- अनुभूति की प्रामाणिकता
- वाद-विरोध की प्रवृत्ति
- व्यक्ति एवं व्यक्तित्व को महत्व
- बहु वैचारिकता (एकसे अधिक विचारधारा के लोगों की सक्रियता)

→ लेकिन, नई कविता की प्रयोगवाद से भिन्न एवं विशिष्ट पहचान भी है।

- नई कविता में प्रयोग तो है, किंतु सोद्देश्य प्रयोगशीलता ××
- व्यक्ति एवं व्यक्तिवादी चेतना तो है, पर समष्टि एवं व्यष्टि के बीच संतुलन ✓
- प्रयोगवादी निषेधवादी मानसिकता ××

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

- आधुनिक भावबोध की संकल्पना

(जिस प्रकार सोद्देश्य प्रयोगवादिता प्रयोगवादी कवियों को एक प्लेटफॉर्म पर लाती है उसी तरह आधुनिक भाव बोध नई कविता की विशिष्टताएँ)

क्षणवाद, द्वन्द्व, तनाव, पीड़ावाद, मूल्यहीनता

- प्रयोगवादी प्रतिक्रियावादिता से मुक्त कविता

↓

संतुलनकारी दृष्टि [प्रेम व सेक्स के संबंध में भी संतुलन]

- भारतीय जमीन से जुड़ी कविता है

(प्रयोगवादी कविता पर भारतीय जमीन से कटे हुए होने का आरोप लगाया जाता है।)

स्वतंत्रता से मोहभंग के परिप्रेक्ष्य में

यही कारण है कि प्रयोगवाद के रूपांतरण के बाद भी नई कविता की अपनी विशेषताएँ हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

· कुकुरमुत्ता से

" रोज पड़ता रहा पानी -- ---

"कुकुरमुत्ता बनाम गुलाब"

प्रतीक है-
- भौतिक जड़वाद का,
- भारतीय प्रगतिवादियों के बड़बोलेपन का,

न कि सर्वहारा वर्ग का

प्रतीक है-
- भावनावाद का,
- संस्कृति का

न कि सामंतवाद का,
न कि पूंजीवाद का

→ कलिया नवाब द्वारा कुकुरमुत्ता
→ नवाब का आदेश --
→ गोली और बहार के बाद
→ ---- रोके नहीं रुकता ----
→ निराला ने कु० को उपहासात्मक स्थिति में ला दिया
→ कविता का संदेश ?
→ क्या कुकुरमुत्ता की कुंठा, गुलाब पर उसके आरोप

निराला ; प्रगतिवादी चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रगतिवादियों पर व्यंग्य भी करते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

निराला द्वारा नववेदांतवाद की प्रतिष्ठा

नववेदांतवाद बनाम **मार्क्सवाद**

- नववेदांतवाद → रोटी के साथ विचार-शुद्धि के प्रश्न का हल
  - रोटी → भौतिक जड़वाद का प्रतीक कुकुरमुत्ता (के द्वारा हल)
  - विचार-शुद्धि → भावनावाद का प्रतीक गुलाब
- मार्क्सवाद → केवल रोटी के प्रश्न का समाधान → विचार शुद्धि का प्रश्न अनुत्तरित है। → अधूरा दर्शन

→ पूर्ण दर्शन
  → संदेश -- बीच सामंजस्य का कुकुरमुत्ता और गुलाब के

• गेहूँ और गुलाब (रामवृक्ष बेनीपुरी)

→ मनुष्य रूप में पशु की जरूरत	→ मनुष्य की सांस्कृतिक एवं वैचारिक पहलू की जरूरत

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

→ निराला ने कविता में अभिजात्य का निषेध नहीं किया बल्कि उन्होंने अभिजातवर्ग को जनोन्मुखी बनाने का संकेत किया है।

→ समन्वयवादी भाषायी चेतना → लोकशब्द –

'तू हरामी खानदानी।' | भाषायी श्लीलत्व की कमी।

'चाहिए तुमको सदा मेहरुन्निसा' – ऐतिहासिक चरित्र द्वारा चारित्री सार्थकता

'पेट में डंड (पेले) हैं चूहे, जबाँ पर लफ्ज़ प्यारा।'

↓ मुहावरेदार भाषा

↓ देशज श्लीलता के दायरे का अतिक्रमण

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

आधुनिक हिंदी कविता में प्रगतिशील चेतना

हिंदी कविता का आरम्भ से ही लोकोन्मुखी स्वरूप लेकिन

नवजागरण और इसकी आधुनिकता की पृष्ठभूमि में

↓

इसकी प्रगतिशील चेतना का केंद्र में आना

अक्सर इस पर प्रगतिवादियों दावेदारी रही

↓

प्रश्न उठता है कि

↓

क्या इसका दायरा प्रगतिवाद तक सीमित है ?

भारतेंदुयुग व द्विवेदीयुग से होते हुए छायावादी दौर में इसका जोर पकड़ना

↓

मार्क्सवाद या वामपंथ की बढ़ती हुई लोकप्रियता की पृष्ठभूमि में

- निराला की रचनाओं में — उदाहरण -
- उत्तरछायावादी रचनाओं में — उदा०

शोषित-उत्पीड़ित वर्ग के प्रति कल्याण के भाव के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त

→ प्रति प्रतिबद्धता के संदर्भ में

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ प्रगतिवाद द्वारा इसे सैद्धांतिक आधार प्रदान किया जाना (थोड़ा विस्तार में)

→ यही प्रगतिशील चेतना 'नई कविता' होते हुए समकालीन कविता के व्यवस्था-विरोधी मूल्य, जनवादी कविता की क्रांतिधर्मी चेतना में रूपान्तरित हुई।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

जनवादी कविता की क्रांतिधर्मी चेतना

- प्रगतिवाद की प्रगतिशील चेतना ही जनवादी कविता की क्रांतिधर्मी चेतना में रूपांतरित हुई। → समकालीन कविता के व्यवस्था-विरोध की चरम परिणति
  - नक्सलवादी आंदोलन
  - माओवादी विचारधारा
  - → स्वतंत्रता के प्रति मोहभंग की पृष्ठभूमि
- कविता को क्रांति के उपकरण में तब्दील करने की हड़बड़ी
  - ↓ जमीनी यथार्थ से न जुड़ना
    - प्रतीकात्मक धरातल पर अभिव्यक्ति
    - सत्ता को दमनास्त्र मानना
    - बम, गोला, बारूद, बंदूक की भरमार
  - व्यवस्था में शामिल होकर व्यवस्था-विरोध संभव नहीं
  - → ऐसी स्थिति में प्रतिक्रियावादी साहित्य की रचना

सीमाएँ

- उबाल ही उबाल → संतुलित बुद्धि का अभाव
- व्यवस्था के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति
  - ↓ नकारात्मक भावों की प्रधानता
  - ↓ अपनी मध्यवर्गीय चेतना के दायरे से बाहर
- नक्सल विकल्प पक्ष → विकल्प का अभाव

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

- जनवादी कविता को संकीर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करना।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

हिंदी की रसवादी आलोचना

- रसवाद की परंपरागत धारा
  - रीतिकालीन रीतिनिरूपक आचार्य
    - (आनंदवाद के परिप्रेक्ष्य में)
      - → रूप को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया गया।
      - → मनोरंजन को कविता का उद्देश्य माना गया।
- रसवाद की आधुनिक धारा
  - रस की लोकमंगलवादी धारा
  - रस की आत्मनिष्ठ आनंदवादी धारा

⇒ "कला कला के लिए है न कि कला जीवन के लिए।"

⟹ रसवाद क्या है –

- रस को काव्य की आत्मा मानता है,
- रस-सृष्टि को कविता का उद्देश्य।

काव्य / साहित्य की सार्थकता को इस दृष्टि से देखता है कि वह रस की निष्पत्ति कराने में सक्षम है अथवा नहीं।

→ इसके लिए रसवादी आलोचक 'साधारणीकरण' पर बल देते हैं।

साधारणीकरण ↓ पाठक का रचनाकार की अनुभूति के साथ तादात्मीकरण ↓ पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रिया उनकी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

नहीं रह जाती बल्कि वह पाठकों में उतर आती है
↓
इसे ही रामचन्द्र शुक्ल जी ने 'हृदय की मुक्तावस्था' कहा है

→ कविता हमें स्व के संकीर्ण दायरे से निकालकर लोक हृदय की ओर ले जाती है

→

⟹ साहित्य की समाज सापेक्षता की दृष्टि से साहित्य की उद्देश्यपरकता पर ध्यान देने वाले आलोचकों ने रीतिवादी आचार्यों की आलोचना को उचित आलोचना नहीं माना
↓
प्रमुख रहे – आचार्य शुक्ल
↓
रस की लोकमंगलकारी धारा

SN में]
संकेतात्मकता के साथ
बातों को स्पष्टतः रखना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

रस की अवधारणा

सिद्धावस्था
↓
~~[illegible]~~ रस
बीजरस- श्रृंगार
सौंदर्यवाद

साधनावस्था
↓
करुणरस - बीजरस

→ डॉ. नगेंद्र द्वारा रस की पुनर्व्याख्या -

स्वच्छंदतावादी आलोचक

रस की आत्मनिष्ठ आनंदवादी व्याख्या की जिसने छायावादी एवं रीतिकालीन रचना कर्म को अपनी परिधि में जगह दी जो आचार्य शुक्ल ने अनदेखा कर दिया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS® most trusted since 2003

प्रश्न : "'दिव्या' विप्लव प्रणय की करुण-गाथा है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?

सहमति का आधार

- दिव्या
- पृथुसेन

दोनों के पक्ष को बराबर स्थान दें

मधुरी प्रकरण →

मारिश - दिव्या प्रसंग में प्रवृत्ति व निवृत्ति का द्वन्द्व

→ मराली प्रसंग

→ पंथशाला प्रसंग

असहमति का आधार

↓

विप्लव प्रणय की गाथा यशपाल के लिए साध्य नहीं साधन है

↓

नारी की त्रासद स्थिति का साक्षात्कार करवाना

↓

इस परिप्रेक्ष्य में नारी चेतना पर विचार करवाना

निष्कर्ष ↓ संतुलनकारी

↓

अपने दायरे में संतुलन साधते हुए विप्लव प्रणय की करुण - गाथा है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न – "'दिव्या' जीवनराग की स्वीकृति का साहित्य है।"

उपन्यास के कथानक व घटनाओं की पुनर्व्याख्या का दायरा बढ़ाना-संभावना

उपन्यास में और दिव्या में भी
↓
यह जीवनधर्मिता आरंभ से ही मौजूद है। → मधुपर्व का आयोजन
↓
उत्सवधर्मिता एवं जीवनराग

→ दिव्या में कला के प्रति अनुराग
↓
इनकी जीवनधर्मिता एवं प्रकृति की ओर संकेत करता है।

रंगशाला में दिव्या

यशपाल मार्क्सवाद से कहीं अधिक मानववाद है
↓
इन दोनों ने यशपाल को इन अलौकिक दर्शनों के विरोध में खड़ा किया जो जीवन का निषेध करते थे।

जोवाक्षों द्वारा

मारिश वैचारिक धरातल पर ← → दिव्या व्यावहारिक धरातल पर

→ यही विमर्शित होता है – पृथुसेन के संसर्ग में आकर। पृथुसेन के प्रति उसका समर्पित होना तथा गर्भधारण करना

→ पृथुसेन से अलग होकर भी गर्भस्थ भ्रूण के परिप्रेक्ष्य में जीवनराग को स्वीकार करती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

यही जीवन धर्मिता उसे दासत्व को कभी स्वीकार करने को प्रवृत्त करती है और वह बौद्ध धर्म की शरण लेना चाहती है।

→ प्रवृत्ति, जीवन धर्मिता या जीवनराग पीछे छूटता दिखायी पड़ता है जब हमारा साक्षात्कार जीवन के प्रति उदासीन स्त्रियां से होता है जिसने निवृत्ति को ओढ़ रखा है; लेकिन निवृत्ति के भीतर प्रवृत्ति की प्रबल चाह है। यह चाह छुपी नहीं रहती, प्रकट होती है – मालविका के मधुर आगमन की पृष्ठभूमि में।

→ प्रवृत्ति-निवृत्ति का द्वन्द्व मालविका के परिप्रेक्ष्य में प्रवृत्ति के पक्ष में तार्किक परिणति प्राप्त करता है

↓

इसी क्रम में – भाग्यवाद और कर्मफलवाद का खण्डन करता हुआ मालविका अमरता की लौकिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करता है। मनुष्य की संतति परंपरा के संदर्भ में।

↓

इस तरह मालविका न केवल स्त्रियां की उदासीनता को तोड़ता है बल्कि जनसामान्य को भी संबोधित करता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

एक ओर संवेदनहीन बौद्ध धर्म है जहाँ जिसके समानांतर मशाल मार्क्स के जरिये धर्महीन समाज की अवधारणा को आकार देता है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

इतिहास लेखन

- आचार्य शुक्ल
- आचार्य द्विवेदी
- समकालीन इ० लेखन
- पूर्ववर्ती इतिहास-ले०

प्रश्न - 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास के जरिये 'ग्रियर्सन' और 'मिश्रबंधु विनोद' की कोशिशों को तार्किक परिणति तक पहुँचाया।' कथन पर प्रकाश डालिए।

ग्रियर्सन का प्रयास
↓
- सर्वप्रथम वैज्ञानिक रूप से साहित्येतिहास का काल विभाजन एवं कालक्रमानुसार वर्णित किया
- कालवि नामकरण की परंपरा की शुरुआत
  ↓
  इतिहास अध्ययन में सुगमता
-

मिश्रबंधु विनोद
से
↓
- साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर
  ↓
  काल विभाजन एवं उसका नामकरण
- कवियों के बारे में आलोचनात्मक दृष्टि व कमियों का विश्लेषण

आचार्य शुक्ल
↓
→ उत्कृष्ट रूप में काल विभाजन, साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा कवियों की रचना दृष्टि पर विवेचना प्रस्तुत की
↓
ग्रियर्सन का वैज्ञानिक अध्ययन तो मिश्रबंधुओं की साहित्यिक तथ्यों से साहित्येतिहास लेखन को प्रामाणिक बनाया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

हिन्दी साहित्य का इतिहास

ग्रियर्सन की कोशिशों की तार्किक परिणति
↓
कोशिशें
↓

a- काल विभाजन एवं नामकरण की पहली कोशिश

b- कालखण्ड की साहित्यिक प्रवृत्तियों का भी संकेत अन्य रचनाओं को कुछल पाते में डालते हैं

c- भक्तिकाल एवं उसमें भी तुलसीदास को अधिक महत्व देना

मिश्रबंधुओं की कोशिशों की तार्किक परिणति
↓
कोशिशें

→ वैज्ञानिक ढाँचे के साथ

→ युगीन प्रवृत्तियों को नामकरण का आधार बनाया व अनेक सैद्धांतिक मानदण्डों का भी उल्लेख किया

→ ग्रियर्सन के समय का इतिहास-बोध आचार्य शुक्ल के यहाँ विकसित होते दिखायी देता है

ग्रियर्सन के यहाँ इतिहासलेखन पर जो साम्राज्यवादी मानसिकता का दबाव था उससे वे मुक्त रहते हैं,

साहित्य की समाज सापेक्षता के आधार पर इतिहास की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

मिश्रबंधुओं की कोशिशें -

a- साहित्य का वाचांग (वि. मिश्रबंधु विनोद)
↓
हिंदी के रचनाकारों एवं रचनाओं की विश्वसनीय जानकारियाँ उपलब्ध हैं।

b- काल विभाजन एवं नामकरण के लिए शोधग्रन्थ के रूप में आचार्य शुक्ल ने इसका प्रयोग किया।
अतिवादी मानसिकता की उपाधियों से हिंदी साहित्य को मुक्ति दिलाते हैं।

c- आचार्य शुक्ल की कोशिशों के कारण ही भक्तिकाल हिंदी के साहित्य के केंद्र में तथा तुलसीदास भक्तिकाल के केंद्र में दिखायी देते हैं जिनके जरिये शिवसिंह की कोशिश तार्किक परिणति लेती नजर आती हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⟹ यद्यपि आचार्य शुक्ल पर विधेयवाद / प्रत्यक्षवाद का प्रभाव है लेकिन वे इसके दायरे का अतिक्रमण भी करते हैं। जहाँ विधेयवाद साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब मात्र समझता है वहीं आचार्य शुक्ल ने साहित्य व समाज के पारस्परिक संबंधों पर ध्यान देते हैं।

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⟹ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और साहित्येतिहास लेखन

योगदान

पृष्ठभूमि

आचार्य शुक्ल की साहित्येतिहास-लेखन सीमाओं के संदर्भ में
↓
a- परंपरा को अपेक्षित महत्व नहीं मिला

b- या तो वे युगीन परिस्थितियों की जटिलता को समझ नहीं पाये या उसे अपने 'साहित्य---' में अपेक्षित महत्व नहीं दिया
(जैसे कि केवल वीरगाथात्मकता को देखना)

c- गांधीवाद की बढ़ती लोकप्रियता की पृष्ठभूमि में वे समन्वयचेतना व दूरदर्शिता से प्रेरित थे-
(तुलसी को अतिमहत्व दिया जाना)

वामपंथी चेतना के बढ़ते हुए प्रभाव में ...
↓
→ आचार्य द्विवेदी वामपंथी तो नहीं हैं लेकिन इस विचारधारा ने परोक्षतः इनकी दृष्टि को प्रभावित किया।
↓
लोक-शास्त्र का द्वन्द्व

राष्ट्रवादी चेतना का उभार-
↓
हिंदी की भूमिका व साहित्य की पुनर्व्याख्या की चुनौती

Mode of Asiatic Society (MARKS)
↓
पूर्वी समाज गतिशील समाज है। इसे कोई बदल नहीं सकता है।

इस्लाम का आगमन
↓
भारतीय समाज की चेतना जागृति

Asiatic Mode of Production

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ आचार्य द्विवेदी → मनुष्य को साहित्य का लक्ष्य घोषित करते हैं।

→ युगीन परिस्थितियों की जटिलता को भी महत्व देते हैं और उनकी प्रवृत्तियों के पारस्परिक संबंध पर बल देते हैं।

समानता के दो धरातल

① मनुष्य को साहित्य का लक्ष्य (द्विवेदी)
→ उसी के लिए लोकमंगल की संरचना (शुक्ल)

② निखिल विश्व के साथ एकत्व की साधना ही साहित्य की साधना है,
→ शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंधों और रक्षा का निर्धारण कविता ही करती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ रूपरेखा के बिंदु – ① काल विभाजन — संवत विक्रम / सन ईस्वी (हिंदी)

② – नामकरण – आदिकाल

③ – सिद्ध-नाथ साहित्य की साहित्यिकता

④ – भक्ति आंदोलन के प्रेरणास्रोत — इस्लाम की भूमिका

कुछ हद तक, मुख्यतः परंपरा, लोक-संस्कृति इन्हें के आलोक में भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास है।

⑤. लोकधर्म

- तुलसी के लोकधर्म के करीब
- कबीर के लोकधर्म के करीब

⑥. रीतिकाल (बहुत गहरा मतभेद नहीं लेकिन)

- उत्तरवर्ती संस्कृति-साहित्य से रीति कालीन साहित्य का संबंध जोड़ते हैं परंतु संबंध के तार्किक कारण नहीं बताते
- परंतु यहाँ ये इस संबंध को कारण सहित तार्किक रूप में स्थापित करते हैं।

→ 'सूर-तुलसी-जायसी' की त्रिवेणी → कबीर को छोड़ देते हैं → कबीर को समानांतर लाकर खड़ा करते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ छायावाद के प्रति विरोधी स्वर

→ छायावाद को भी जगह देते हैं

सीमाएँ

① शुक्ल जी के 15-16 साल बाद भी लिखने के बावजूद ~~भक्ति काल~~ तक ही सीमित रहा, मुग़लकाल अधूरेपन का भास

② भाषा को अत्यधिक महत्व

③ आर्य - अनार्य संस्कृति का द्वन्द्व ही अधिक उभारा । (नस्लीय इतिहास के आरोप

④ आचार्य शुक्ल के प्रति ज्यादा अनुदार दिखते देते हैं।

~~⑤ भारतीय चिंतनधारा का ऐतिहासिक विकास~~

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न - 'आचार्य शुक्ल और आचार्य द्विवेदी आलोचक और इतिहास लेखक के रूप में एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी नहीं पूरक हैं।' समीक्षा कीजिए।
(लिखवाई)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

हिंदी कविता और रहस्यवाद

"चिंतन के धरातल पर जो अद्वैतवाद है, भाव के धरातल पर वही रहस्यवाद है।" - शुक्ल जी।

"मेरा रहस्यवाद धर्म और ईश्वर की ओर उन्मुख (मध्यकालीन रहस्यवाद) नहीं। मैं उस असीम शक्ति से जुड़ना चाहता हूँ, अभिभूत होना चाहता हूँ जो मेरे भीतर है।"

- अज्ञेय जी (इत्यलम)

नवरहस्यवाद
↓
[आधुनिकतावाद मानवतावादी चिंतन के धरातल पर]

↓

- सिद्धों-नाथों के यहाँ मौजूद रहस्यवाद का विकसित रूप कबीर के यहाँ मिलता है
  - साधनात्मक → हठयोग की प्रधानता
  - भावनात्मक → प्रेम तत्व की मौजूदगी
- यही भावनात्मक रह० सूफी चिंतन की पृष्ठभूमि में विकसित होता है। (जायसी)
- आधुनिकता बनाम रहस्यवाद
  ↓
  हिंदी कविता के धरातल पर यह विरोधाभास मिलता है
  ↓
  औपनिवेशिक शासन द्वारा अभिव्यक्ति पर आरोपित बंदिशें
  - ↳ जड़ सामाजिकता का दबाव
  - ↳ सांस्कृतिक आदिमता बोध

↓

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

इन तीनों की पृष्ठभूमि में छायावादी रहस्यवाद आकार ग्रहण करता है।

↓

इसीलिए इसका स्वरूप जितना अलौकिक है उतना ही लौकिक है - विभिन्न स्वरूप

↓

निराला - वेदांती रह०

प्रसाद - शैववादी आनंदवाद

पंत - प्राकृतिक रहस्यवाद

महादेवी - लौकिक प्रेम की अलौकिक अभिव्यक्ति

अज्ञेय - सृजनात्मक रहस्यवाद

"मेरे प्रियतम को भाता है- तम के परदे में आना।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

हिंदी आलोचना

1. शुक्लपूर्व हि. आ.
   - भारतेंदु युग
   - द्विवेदी युग
2. शुक्लयुगीन हि. आ.
   - आ. शुक्ल
   - अन्य आ.
3. शुक्लोत्तर आ.
   - उत्तर छायावादी आ.
   - प्रगतिवादी आ.
4. स्वातंत्र्योत्तर कालीन आ.
   - समकालीन हि. आ.
     - रूपवादी/नई समीक्षा
     - वस्तुवादी
       - समन्वयवादी
       - प्रगतिवादी
     - कवि-लेखक आलोचक

आयाम

① सैद्धांतिक आ.

↓

सै. मानदण्डों का निर्धारण जिनके आधार पर कोई भी आलोचक किसी रचना की ओर उन्मुख होता है जैसे-

शुक्ल जी का निबंध – 'कविता क्या है'

प्रेमचंद जी " " – 'साहित्य का उद्देश्य'

> कविता व साहित्य

→ रीति निरूपक आचार्यों द्वारा की गयी आलोचना/समीक्षा

→ भारतेंदु का निबंध → 'नाटक' [नाटक के उद्देश्य को तद्युगीन परिस्थितियों में पुनर्परिभाषित किया

↓

नाटक का प्रमुख उद्देश्य

↓ देशवत्सलता

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

~~गई~~

→ बाल कृष्ण भट्ट → निबंध → 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है'
↓
रीतिवादी मानसिकता को तोड़ता हुआ निबंध

→ भारतेंदु युग → (पुस्तक समीक्षा) टीकाओं तथा इतिहास लेखन के स्व-रूप में हिंदी आलो॰ उभार का सामने आती है
↓
शैशवावस्था

पुस्तक परिचय

②. व्याख्यात्मक आलो॰

शुरुआत भारतेंदु युग में हो चुकी थी।

→ लल्लू लाल, प्रभु → बिहारी सतसई की आलो॰

(द्विवेदी युग) → आचार्य म॰ द्वि॰ → 1. लोकोन्मुखी धारा (आ॰ द्वी)
2. रीतिवादी धारा
↓
पद्म सिंह शर्मा →

निषेध करते हुए

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

तुलनात्मक आलोचना का श्रेय किसे जाता है - पद्म सिंह शर्मा

→ मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ आचार्य म० द्विवेदी की हिंदी आ० की लोकोन्मुखी धारा को पुष्ट करती हैं - "केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए। उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥"

हिंदी आ० की लोकोन्मुखी धारा

- **भा० युग**
  - ↓ साहित्य को समाज-सापेक्ष बनाने की कोशिश
  - ↓ 'नाटक' व 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।'
  - ↓ रीतिवादी मानसिकता का निषेध है परंतु प्रत्यक्षतः नहीं, वरन परोक्षतः।
- **द्विवेदी युग**
  - ↓ रीतिवादी मानसिकता का निषेध मुखर होता है
  - ↓ रीतिवादी धारा के समानांतर लोकोन्मुखी धारा स्थापित होती है।
  - ↓ मनोरंजकता का निषेध नहीं, वरन साहित्य की सामाजिक सोद्देश्यता पर / समाज-सापेक्षता पर बल दिया गया।
- **आचार्य शुक्ल**
  - ↓ यह लोको० धारा विकसित होती है
  - ↓ द्विवेदीयुगीन दोनों धाराओं का समेकन
    - रस-सृष्टि ↓ कविता का उद्देश्य ↓ रस को काव्य की आत्मा मानना
    - लोकमंगल ↓ कविता का उद्देश्य ↓ साहित्य की समाज सापेक्षता पर बल

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रगतिवादी आ०

सैद्धांतिक वैचारिक आधार मिलता है → मार्क्सवाद से।

यह साहित्य को साध्य मानने की बजाय साधन मानती है।

म० द्विवेदी ने आ० की शुरुआत करके 'सरस्वती पत्रिका' के संपादन के रूप में की। सामाजिक सोद्देश्यता एवं प्रगतिशील चेतना बल दिया। अनुशासन प्रियता।

→ निबंध → 'उर्मिला विषयक उदासीनता'

अपने समय के ही रचनाकारों को नहीं बल्कि अपने परवर्ती रचनाकारों को भी लेखन-विधाओं की विविधता के आयाम खोले -

यशोधरा, जयद्रथ वध, रश्मिरथी जैसी कृतियों की रचना की गयी।

→ खड़ी बोली को गद्य एवं पद्य की भाषा के रूप में लोकप्रिय बनाया एवं मान्यता दिलाई।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ 'हीरा डोम' → दलित चेतना पर आधारित कृति

→ पठनीयता, बोधगम्यता, संप्रेषणीयता एवं व्याकरण सम्मतता पर बल। सरल व सहज भाषा के हिमायती → खड़ी बोली के मानक स्वरूप के गठन व्याकरणिक संरचना के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका।

→ नाटक की रंगमंचीयता पर बल दिया।

→ ये समकालीनता के आग्रह से बेहद उपस्थित होते हैं और अपेक्षा करते हैं कि साहित्य में समसामयिक जीवन की तस्वीर होनी चाहिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

आचार्य शुक्ल पर बुद्धिवाद का प्रभाव

बुद्धिवादी दर्शन

↓

केंद्र में - व्यक्ति | तर्क के आधार पर वैयक्तिकता की अवधारणा

पश्चिम में समाजवादी नारे एवं भारतीय 'व्यवस्था विरोधी नारों' का आधार, लेकिन पश्चिम जितना गहरा नहीं।

→ स्वच्छंदतावाद (अनुभूतिपरकता) का निषेध

→ अलौकिकता का निषेध

→ भावना, आस्था " "

'चिंतामणि' के सभी निबंधों में पश्चि० मनोविश्लेषवाद के आधार पर भाव-विषयक निबंधों पर बुद्धिवाद का प्रभाव।

↓

बाह्य जगत से अंतर्जगत की ओर

→ कर्म सौंदर्य की संकल्पना

→ लोकमंगल की साधनावस्था → लोकमंगल के उद्देश्य से संचालित

⟹ कर्म सौंदर्य के आधार न कि रूप सौंदर्य के आधार

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ इसीलिए उन्होंने तुलसी और उनके मानस को अधिक महत्व दिया।

साधनावस्था
↓
उद्देश्य → लोकमंगल
सौंदर्य → कर्मसौंदर्य
बीजभाव – करुणा
बीज रस – करुण

आचार्य शुक्ल द्वारा सिद्ध-नाथ, कबीर तथा छायावाद की के साथ न्याय न किया जाना –

→ सि० साहित्य का एक बड़ा हिस्सा – रहस्यात्मकता – जीवन जगत निरपेक्ष स्वरूप, साधना, हठयोग आदि से भरा पड़ा है

→ कबीर की रचना संसार का भी बहुत ब्रह्म, जीव, जगत, माया, गुरु की परिधि में सिमट है।

बहुत छोटा हिस्सा – जीवन जगत से

कबीर के मामले में शुक्ल जी का विरोध उनकी रूढ़ रहस्यात्मकता के चलते ही किया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ छायावादी कविता का बड़ा भाग रहस्यात्मकता के आवरण में है।

→ आचार्य शुक्ल → रसवादी आलोचक → साहित्य की सार्थकता की पड़ताल रसवादी दृष्टिकोण से करते हैं कोई कृति रस की सृष्टि कराने में समर्थ है या नहीं। इसी रसवादी आग्रह के चलते उन्होंने मुक्तक की तुलना में प्रबंध काव्य को अधिक वरीयता दी। रसोद्रेक

→ लोकमंगल को साहित्य का उद्देश्य मानना
↓
की सिद्धि के लिए साहित्य की समाज-सापेक्षता पर बल देते हैं।

→ उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवादी आग्रह उनकी आलोचना दृष्टि के केंद्र में है इसीलिए

→ जो साहित्य समाज सापेक्ष नहीं होगा वह तद्युगीन चिंताओं से निरपेक्ष होगा।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

आचार्य शुक्ल साहित्य में 'संवेदना' को सबसे अधिक महत्व देते हैं। राष्ट्रवाद के मूल में वे देश की प्रकृति एवं संस्कृति को स्थापित करते हैं।

" एसी. युक्त कमरों में बैठकर जीडीपी के आंकड़ों को पढ़ने वाला व्यक्ति यदि अपने देश को जानने का दावा करता है तो उसका यह दावा झूठा और खोखला है।

डॉ० रामविलास शर्मा द्वारा उनके आलोचकीय व्यक्तित्व का मूल्यांकन

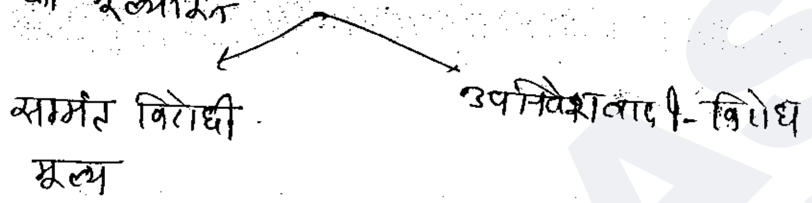

विशेष

आचार्य शुक्ल ने प्रसाद की 'लहर', पंत के प्राकृतिक अद्वैतवाद तथा निराला के संपूर्ण रचनाकर्म की तारीफ की है।

पंत के युगांत जैसी कृतियों के संदर्भ में वे उन्होंने कहा भी है कि अब छायावादी रचनाकार अपनी बंधी-बंधाई परिपाटी से बाहर निकल रहे हैं।

→ जायसी, पंत

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

के रहस्यवाद से शुक्ल जी को शिकायत xx
↓
पंत → प्रकृति के धरातल पर रहस्य... है
जो जीवन जगत से निरपेक्ष नहीं है,

जायसी के रहस्यवाद → केन्द्र में भाव है
↓
जिसमें रस की सृष्टि करने में
प्रबल संभावना है — शुक्ल जी के

→ जायसी पर सर्ववादी चिंतन का प्रभाव है।
वेदांती अद्वैतवादी चिंतन के दो पक्ष

ब्रह्म-जीव की एकता पर बल | ब्रह्म-जगत की एकता पर बल] – कबीर ने इसे अपेक्षित महत्व नहीं दिया

जो वेदांती अ... के दोनों पक्षों को लेकर चलता है।

→ 'पद्मावत' प्रकृति के नाना विधि रूपों में ब्रह्म के स्वरूप को व्यक्त होते हुए देखा है जो जीवन जगत से निरपेक्ष नहीं हो पाता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

आचार्य शुक्ल – रहस्यवाद के उग्ररूप के विरोधी हैं जो भौतिक जगत के विरुद्ध है और जो रस-सृष्टि की संभावनाओं का निषेध करता है।

उत्तर छायावादी आलोचक
↓
आचार्य ह० द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ॰ नगेन्द्र

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न. 'कविता क्या है' निबंध में आचार्य शुक्ल की कविता-विषयक दृष्टि को अभिव्यक्ति देता हुआ रसवाद की नये सिरे से व्याख्या करता है।' विचार करें।

- 'कविता क्या है' निबंध का महत्व
  - कविता-विषयक दृष्टि का उद्घाटन करता हुआ उनकी सैद्धांतिक आलोचना के मानदंडों का निर्धारण
- कविता-विषयक दृष्टि
  - भारतीय रसवाद का असर
    - रस को काव्य की आत्मा मानना
    - रस-सृष्टि को कविता का उद्देश्य मानना
  - 'तेन' के विधेयवाद का असर
    - लोकमंगल को कविता का उद्देश्य मानना
    - लोकमंगल के आधार पर काव्य का वर्गीकरण
      - लोकमंगल की साधनावस्था
        - विरुद्धों का सामंजस्य
        - बीज भाव - करुणा; बीज रस - करुणा; सौंदर्य - कर्मसौंदर्य
          - मैथ्यू अर्नोल्ड के कर्मवाद से संबंध
      - लोकमंगल की सिद्धावस्था
        - बीज भाव - प्रेम; बीजरस - श्रृंगार; सौंदर्य - रूपसौं०
- कविता को भावयोग की संज्ञा

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

रस सृष्टि – हृदय की मुक्तावस्था
↓
(रस दशा)।
↓
साधारणीकरण
↓
रस की निष्पत्ति का मार्ग

↓

इसीलिए वे काव्य में प्रबंध को अधिक महत्व देते हैं, मुक्तक की तुलना में।
↓
प्रबंध में रस-सृष्टि की संभावना अपेक्षाकृत अधिक होती है

→ रहस्यवाद-विरोधी दृष्टि → रसवादी व्याख्या से जोड़कर देखा जाना चाहिए
↓
साहित्य की समाजसापेक्षता का आग्रह

भाषा की समासशक्ति तथा कल्पना की समाहार शक्ति > मुक्तक के संदर्भ में शुक्ल जी का मुहावरा →

रसवादी की लोकमंगलकारी व्याख्या

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

→ कविता और रस के अंतर्संबंध की व्याख्या करते हुए
↓
रस की लोकमंगलवादी अवधारणा
↓
इसके लिए रिचर्ड्स के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव

इसी कारण,

- तुलसी को सूर से कहीं बड़े कवि के रूप में देखना क्यों-

→ जीवन जगत के व्यापक चित्र की मौजूदगी,

→ तुलसी की पहचान 'मानस' को लेकर जो कि एक प्रबंध रचना है,

→ शुक्ल की आलोचना दृष्टि 'मानस' में उभरने वाली तुलसी की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि के अनुरूप आकार ग्रहण करती आती है।

शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह का नाम ही कविता है।
↓
कैसे-

कविता हमें 'स्व' के संकीर्ण दायरे से बाहर निकालकर लोक-हृदय में लीन होने की दशा में ले जाती है जहाँ पर हम अपने सुख से सुखी व अपने दुःख से दुःखी न होकर दूसरों के सुख से सुखी और दूसरों के दुःख से दुःखी होते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

→ सूर पर चर्चा के क्रम में –

'शब्द-क्रीड़ा' की चर्चा करते हैं –

भाव-प्रेरित शब्द क्रीड़ा	भावहीन शब्द-क्रीड़ा
↓	↓
भाव-प्रेरित वचनवक्रता	उक्ति वैचित्र्य एवं शब्द-चमत्कार/ बुद्धि प्रेरित वक्रता
↓	
उपालम्भ के लिए गढ़ा गया नया शब्द (मुहावरा)	

→ प्रकृति ~~चित्रण~~ विषयक → कवि-व्यक्तित्व की संवेदनशीलता का पैमाना
↓

→ रीतिवादी मानसिकता का असर
↓
- काव्य में बिम्बग्रहण को अपेक्षित बतलाते हैं,
- अलंकारों की बात करते हुए आते हैं।
- कविता को कविता के रूप में देखे जाने के पक्षधर (किसी बाहरी कारक का प्रभाव नहीं बल्कि आंतरिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति है-कविता)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न - नई समीक्षा पुरानी समीक्षा से किस प्रकार भिन्न है? इसने किस प्रकार हिंदी समीक्षा को नया आयाम प्रदान किया?

नई समीक्षा से आशय और पुरानी समीक्षा से इसकी भिन्नता

1- नई समीक्षा द्वारा प्रगतिवादी यांत्रिकता का विरोध करते हुए व्यक्ति की अनुभूति एवं भोगे हुए यथार्थ पर बल,

2- स्वच्छंदतावादी आलोचना के रोमांटिक भावबोध का विरोध करते हुए जीवन की व्याख्या गैर-रोमांटिक तरीके से, प्रमुख जहाँ बौद्धिक मानसिकता प्रभावी है।

3- नई समीक्षा कविता को कविता के रूप में देखे जाने की बात करती है।

4- इसकी दृष्टि में साहित्य में कथ्य एवं शिल्प दोनों का महत्व है लेकिन शिल्प का महत्व कहीं अधिक निर्णायक है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

5. इसका जोर रचना की स्वायत्तता पर है,
6. और इसीलिए यह रचनाओं के मूल्यांकन के लिए साहित्यिक प्रतिमानों की वकालत करती है, साहित्येतर प्रतिमानों

→ समाज सापेक्षता
→ मनोवैज्ञानिक
→ वैचारिक प्रतिबद्धता / जवाबदेही

6. रचना को मूलतः भाषिक संरचना माना और इसीलिए उसमें निहित अर्थ की खोज को भाषिक संरचना से ही जोड़ दिया।

7. रचना का दायित्व समाज को बदलना नहीं, अधिक से अधिक व्यक्ति को संस्कारित करना है,

8. भोगने वाले प्राणी और रचनेवाले कलाकार के भेद पर बल

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(2) स्वच्छंदतावाद को नवजागरण के संदर्भों से [illegible] [illegible]

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(2) स्वच्छंदतावाद का नवजागरण के संदर्भों से संबंधित होना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

नवीन आयाम प्रदान किया

आचार्य शुक्ल के
यहाँ नई समीक्षा के रूप

- कविता को कविता के रूप में देखे जाने की बात → रस को कविता की आत्मा; रस व्याप्ति – कविता का उद्देश्य

- साहित्य में कविता के दो ही रूप स्वीकार करते हैं – सुंदर, असुंदर (इनके अलावा सभी रूप साहित्येतर प्रतिमानों में)

- भाषा की पिरोबद्ता के विश्वासी → बिम्बग्रहण को कविता के लिए अपेक्षित बताया

- कविता का वर्गीकरण – सिद्धावस्था, साधनावस्था

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

शुक्लोत्तर आलोचकों के यहाँ –

① - नन्द दुलारे वाजपेयी - कविता - कविता के रूप में
- भाषा के नवीनीकरण पर बल

② - डॉ० नगेंद्र

③ - रूपवादी आलोचना की धारा

④ - कवि-लेखक - आलोचकों की धारा
↳ अज्ञेय, नन्द किशोर नवल

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 'पद्मावत' पर अभारतीयता का आरोप उचित नहीं इसकी प्रकृति देसी है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

अभारतीयता के तत्व ?

1. मसनवी शैली
2. लौकिक प्रेम का निरूपण
3. सूफी मत का प्रभाव
4.

देसी प्रकृति की उपस्थिति

- → भारतीय लोक-कथाओं को प्रेमाख्यानक का रूप दिया जाना
- → अवधी (लोक भाषा) का विशुद्ध प्रयोग
- → सांस्कृतिक समन्वय की चेतना

निष्कर्ष

कथन के पक्ष में संतुलित निष्कर्ष

इन्होंने पद्मावत को अभारतीय नहीं रहने दिया।

1. सूफी प्रभाव को भारतीयता के आवरण में लपेटकर प्रस्तुत करना और उसे भारतीयता के साथ घुला-मिला देना।
2. भारतीय संस्कृति की सामासिक चेतना की उपस्थिति।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

अभारतीयता का आक्षेप (आधार)

① - रहस्यवाद के धरातल पर (दार्शनिक आधार) → सूफीदर्शन के तत्व

- → इश्क मजाजी से इश्क हकीकी तक
- → ब्रह्म - जीव - संबंध का पार्थक्य
- → अलौकिक ब्रह्म 'रूप' के रूप में लौकिक (अलौकिक नूर लौकिक हूर)
- → इस्लाम का उदारवादी स्वरूप
  - दुनियावी की स्वीकृति रूपी मजाजी प्रेम की प्रधानता
- → सर्ववादी चिंतन
  - वेदांती अद्वैतवाद से प्रभावित

दो पक्ष

- ब्रह्म जीव की एकता
  - → शंकराचार्य के अद्वैतवादी चिंतन में स्वीकृति
  - → कबीर के दर्शन में उपस्थिति ← 'जल में कुंभ, कुंभ में जल'
- ब्रह्म और जगत की एकता
  - अद्वैतवाद में जो ब्रह्म ज्ञान का विषय है उसे ही जायसी ने प्रेम का विषय बना दिया है
  - ब्रह्म का अलौकिक सौंदर्य प्रकृति के विविध स्वरूपों में मुखरित हुआ है और जायसी स्वयं भी इस सौंदर्य -

② - प्रेम प्रकृति

③ - विरह वेदना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

से साक्षात्कार करते हैं और पाठकों को भी इससे परिचित कराते हैं।

↓

इसीलिए ~~श्री~~ जायसी का रहस्यवाद जीवन जगत सापेक्ष है ——→ और शुक्ल जी यहाँ जायसी ~~कि~~ ~~का~~ के रहस्यवाद की तारीफ किये बिना नहीं रहते।

→ हठयोग साधना, बहुदेववादी स्वरूप का समावेश

→ प्रेम पद्धति के धरातल पर पद्मावत

भारतीय | **अभारतीय**

भारतीय	अभारतीय
भारत में भी मौजूद ←	विवाह पूर्व प्रेम
→ शकुंतला, राम सीता, नलदमयंती	- विवाहेतर
→ लोक निरपेक्ष प्रतीत होता है पर है नहीं ←	- जीवन-निरपेक्ष प्रेम
रत्नसेन का वापस देश आना, पद्मावती का गोराबादल से रत्नसेन की आर्त पुकार	प्रेम की परिणति भोग में
→ भारत में भी मौजूद (कालिदास-मेघदूत, / पद्मावत नागमती के विरह के कारण दीर्घ ←	- पुरुषों में विरह की अधिकता
# कबीर के प्रेम से पद्मावत की निकटता	- पुरुषों की व्याकुल चेष्टा
	- ऊहात्मकता
हर जगह ऐसा नहीं है। ←	- प्रेम में आद्योपांत गंभीरता का बना रहना

"पद्मावत की आत्मा अभारतीय है यद्यपि निश्चित रूप से इसे भारतीय आवरण दिया गया है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

कबीर एवं जायसी - दोनों के प्रेम की प्रकृति उत्सर्गधर्मी है, अहं का विसर्जन दोनों ⇒
पीड़ा और वेदना ⇒
प्रेम अलौकिक सन्दर्भों से सदंर्भित है ⇒

प्रश्न 'पद्मावत' में नागमती के विरह का क्या स्वरूप है? उदाहरण देकर समझाइए।

प्रश्न 'पद्मावत' में जायसी की समन्वय चेतना की विवेचना कीजिए।

प्रश्न आचार्य शुक्ल रहस्यवाद विरोधी आलोचक हैं। इसीलिए उनका कबीर से विरोध है, लेकिन जायसी की चर्चा करते हुए जायसी के रहस्यवाद के प्रति उनका स्वर प्रशंसामूलक हो जाता है। शुक्ल जी के इस विरोधाभास की व्याख्या कीजिए आप किस प्रकार करेंगे?

प्रश्न - सूर और जायसी के विरह चित्रण का वैशिष्ट्य उद्घाटित करते हुए बतलाइए कि आप किन्हें विरह-श्रृंगार का श्रेष्ठ कवि मानते हैं और क्यों?

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न ⟹ तुलसी के प्रबंध-कौशल के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन कीजिए।

प्रबंध काव्य
- महाकाव्य → संपूर्ण जीवन का चित्रण
- खण्डकाव्य → जीवन के किसी एक या दो पक्षों

कवितावली → निर्विवाद रूप से मुक्तक है → छंद एक-दूसरे से मुक्त हो और अपने आप में पूर्ण अर्थ रखते हैं → अमरगीत मुक्तक काव्य

→ प्रबंधाभास मुक्तक काव्य

प्रबंध काव्य → छंद एक-दूसरे पर निर्भर

⇒ कवितावली प्रबंध काव्य न होते हुए भी प्रबंध होने का आभास दिलाता है।

→ कथानक विभिन्न काण्डों में विभाजन प्रबंध की याद दिलाता है

→ कई बार कवितावली के विभिन्न छंद मिलकर कथानक को आकार प्रदान करते दिखायी देते हैं (उत्तरकाण्ड में तत्कालीन जीवन के यथार्थ के वर्णन के संदर्भ में) (तथा कलि संकट एवं कलि वर्णन)

→

∅ निस्संदेह कवितावली प्रबंध होने का आभास देता है परंतु यह मूलतः मुक्तक काव्य है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

महाकाव्य

1. विशाल चित्रफलक
   - ↓ वस्तु योजना
     - ↓ आधिकारिक कथा और प्रासंगिक कथा का संतुलित निर्वाह
     - ↓ सर्गबद्धता की उपस्थिति
2. उदात्त एवं युगनिरपेक्ष नायक
   - ↓ धीरोदात्त नायक
3. समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि चरित्रों का अंकन
   - ↓ पात्रयोजना
     - ↓ आनुपातिक संतुलन का निर्वाह
4. → मंगलकारी उद्देश्य
   → महान् महत् संदेश
5. समकालीन यथार्थ का अंकन
   - ↓ उत्कृष्ट भाषा शिल्प
     - ↓ संवाद योजना
     - ↓ रसयोजना
       - ↓ एकाधिक रसों की योजना
     - ↓ प्रतीक एवं अलंकार
       - ↓ छंद एवं भाषा

∝

तुलसी की भक्ति

↑

ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी

प्रेमचंद के 'गोदान' पर नंददुलारे वाजपेयी की समीक्षा)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

रहस्यवाद

① आशय
↓
ब्रह्म, जीव और जगत
के अन्तर्संबंधों को
उद्घाटित करते हुए
अमूर्त ब्रह्म से मूर्त
जीव के मिलन की प्रक्रिया को
उद्घाटित करने वाला दर्शन

↳ "चिंतन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है भाव के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।" शुक्ल जी

↳ आदिकाल में - सिद्ध-नाथ से लेकर आधुनिक काल में अज्ञेय तक के यहाँ रहस्यवाद मौजूद है।

② मध्यकालीन रह०
↓
- कबीर (साधनात्मक रह०) ↓ लोकनिरपेक्ष स्वरूप ग्रहण करता हुआ
- जायसी (भावनात्मक रह०) ↓ लोकसापेक्ष स्वरूप ग्रहण करता है।

③. छायावादी रह० (नई रूप) →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

बाधक तत्वों की पहचान करते हुए वर्ण, जाति धर्म व संप्रदाय तथा लिंग की विभाजनकारी भूमिका का निषेध भी करते हैं जिसकी पृष्ठभूमि में आ० हि० सा० की प्रगतिशील चेतना आधार ग्रहण करती हुई राष्ट्रीय एकता के मार्ग को प्रशस्त करती है।

3- रीतिवादी मानसिकता का विरोध करते हुए साहित्य दृष्टि में बदलाव का आधार तैयार करते हैं और साहित्य की समाज सापेक्षता पर बल देते हुए इसे राष्ट्रीय चेतना एवं प्रगतिशील चेतना के प्रचार-प्रसार के रूप में समाहित करते हैं।

4- हिन्दी साहित्य को स्वरूपगत विविधता प्रदान करना और इसकी पृष्ठभूमि में गद्य लेखन की सशक्त परिपाटी का विकास

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

5- एक ओर देश वत्सलता को नाटक का उद्देश्य घोषित करना, दूसरी ओर नाटक की लोकप्रियता पर जोर देते हुए साहित्य व समाज (विशेषतः अशिक्षित समाज) के बीच अंतराल को पाटने की कोशिश की गयी।

6- गद्यभाषा के रूप में खड़ी बोली को पहचान दिलाने व उसे आधुनिक नवजागरणपरक चेतना की अभिव्यक्ति में समर्थ बनाने में उनकी महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका रही।

7- यह सबकुछ भारतेंदु ने अकेले नहीं किया। उन्होंने अपने समय के अन्य लेखकों को भी ऐसा करने हेतु प्रेरित किया और इसमें उनके प्रेरणादायी व्यक्तित्व एवं कृतित्व की भूमिका निर्णायक रही। इसके लिए उन्होंने पत्रकारिता को एक आंदोलन में तब्दील कर दिया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

8- स्पष्ट है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य द्विवेदी युग व छायावाद में जो दिशा ग्रहण करता है और जिस उत्कर्ष पर पहुँचता है उसकी पृष्ठभूमि को तैयार होते भारतेंदु युग में देखा जा सकता है।

II part

1- यद्यपि यह नवीन चेतना निरापद नहीं है; यहाँ यदि देशभक्ति है तो राजभक्ति भी; तर्क एवं बौद्धिकता है तो आस्था एवं भावनात्मकता भी; धर्म निरपेक्ष रूझान है तो संप्रदाय-प्रवर्तित भक्ति भी; खड़ी बोली है तो ब्रजभाषा भी है। ऐसे ही आधुनिक मानसिकता है तो रीतिवादी प्रभाव भी; आधुनिकता है तो परंपरा भी. मतलब यह कि यह काव्यचेतना अंतर्विरोधी है और इस अंतर्विरोध का संबंध यदि ब्रिटिश औपनिवेशिक परिस्थितियों से जुड़ता है तो भारतेंदु

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

की सामाजिक-पारिवारिक पृष्ठभूमि से भी। साथ ही इस युगीन पृष्ठभूमि से भी इसका संबंध है जहाँ मध्यकाल समाप्त और आधुनिक काल का आरम्भ होरहा है।

लेकिन, यह प्रगतिशील चेतना है जो भारतेंदु की भिन्न एवं विशिष्ट पहचान को निर्मित करती है। यह भारतेंदु से कहीं अधिक उनके युग का अन्तर्विरोध है और इन अंतर्विरोधों के कारण आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक के रूप में भारतेंदु की उपादेयता कम नहीं होती।

---*---

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न "भारतेंदु आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक हैं, पर उनकी काव्यचेतना अंतर्विरोधी थी" कथन पर विचार करें।

प्रश्न 'भारतेंदु हरिश्चन्द्र के प्रेरणादायी व्यक्तित्व व कृतित्व ने हिंदी साहित्य को नयी प्रासंगिकता एवं जीवन स्फूर्ति से मण्डित किया।' कथन की प्रामाणिकता स्पष्ट कीजिए।

| आधुनिक हिंदी सा० के जनक? |

→ गद्य साहित्य में

- नाटक, प्रहसन, अनूदित रचना विधाओं की शुरुआत
- खड़ी बोली की काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठा

- नागरी प्रचारिणी सभा
- भारतेंदु मण्डल

| काव्य चेतना में अंतर्वि० |

→ तात्कालिक सामाजिक-राजनीतिक परि०

→ मनोवैज्ञानिक बदलाव
↓
सांस्कृतिक संक्रमण

→ भारतेंदु का राष्ट्रीय एवं समाजबोध

→ उनकी पारि० वारि० पृष्ठभूमि

(कारण)

→ भारतीय समाज-संस्कृति का नवीन दौर से गुजरना

→ कई आंतरिक-बाह्य द्वन्द्वों की उपस्थिति

- भाषायी अंतर्विरोध, ब्रज vs खड़ी बोली
- सुधारवादी vs पुनरोत्थानवादी

संतुलित निष्कर्ष

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

निराला का वेदांती रहस्यवाद

रहस्यवाद छायावाद की महत्वपूर्ण विशेषता है लेकिन यह मध्यकालीन रहस्यवाद से भिन्न और विशिष्ट है। यह अपने स्वरूप में जितना अलौकिक है उतना ही लौकिक और इसकी पुष्टि निराला की कविताओं से होती है जिनका आधार है विवेकानंद व टैगोर का नववेदान्तवाद।

↓

शक्तिपूजा में अभिव्यक्त

होते हुए देखा जा सकता है जिसे आधार मिला है — प्रकृति अद्वैतवादी चिंतन से।

↓

"भूधर की परिकल्पना शक्ति से
साधक की " शक्ति के पदतल के ओर से

"होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
यह कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन

आंतरिक व बाह्य तत्वों का समन्वय

↓

रहस्यवाद की अभिव्यक्ति

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ कुकुरमुत्ता और गुलाब के सामंजस्य रूप में भी प्रोसेस (प्रोग्रेस?) वेदांती रहस्यवाद की झलक

→ निराला एक बिंदु पर आकर अपनी इस वेदांती आस्था को सांस्कृतिक चेतना से जोड़ देते हैं –

तुम तुंग हिमालय शृंग
और मैं चंचल गति सुर-सरिता"

→ 'गीतिका' में भी इसकी झलक

'कौन तम के पार' गीत में
↓
"शून्य सृष्टि में मेरे प्राण
प्राप्त करें शून्यता सृष्टि की
मेरे जग हो अंतर्धान
तब भी क्या ऐसे ही तम में
अटकेगा जर्जर स्पंदन"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

निराला वेदांती रूप को सांस्कृतिक अस्तित्व/अस्मिता की तलाश के एक उपकरण के रूप में तब्दील करते दिखायी देते हैं।

→ यह तलाश सहायक है – तद्युगीन राष्ट्रीय चुनौतियों से निपटने के लिए।

→ आत्म विश्वास से हीन भारतीय जनता में आत्म विश्वास पैदा करते हुए।

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in

ध्येयIAS most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS
most trusted since 2003

रीतिकाल

प्रश्न 'संभव है कि रीतिकाल में स्वच्छंदतावाद के कुछ तत्व मौजूद हों, लेकिन रीतिकाल को स्वच्छंदतावाद से जोड़कर देखना उचित नहीं है।'

] कहाँ तक उचित xx

स्वच्छंदतावादी तत्वों की मौजूदगी
↓
रीतिमुक्त साहित्य में
↓
'स्वच्छ' के बीज
↓
→ अनुभूति की गहनता,
→ प्रकृति प्रेम,
→ इहलौकिकता
→ सहजता
} कविताओं की चिंताओं के केंद्र में व्यक्ति

• घनानंद, ठाकुर, बोधा, आलम आदि
→ रीतिवादी मानसिकता व दरबारी संस्कृति का निषेध
"लोग हैं लागि कवित्त बनावत
मोहे तो मेरे कवित्त बनावत"

परंतु, रीतिमुक्त धारा के अलावा शेष रीतिकालीन साहित्य में इसकी उपस्थिति नहीं मिलती।

→ बड़ी मात्रा में रीतिग्रंथों की रचना एवं काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों की स्थापना

→ स्वच्छंदतावाद आधुनिक कालीन अवधारणा है, रीतिकाल मध्यकालीन

→ दोनों काल के साहित्य की उपादेयता, संभावना एवं कथ्य-वस्तु का क्षेत्र भिन्न है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न रीतिकालीन साहित्य के समुचित एवं प्रासंगिक अनुवादन के प्रतिमान क्या हो सकते हैं?

किस प्रकार रीतिकालीन साहित्य आज भी हिंदी साहित्य के पाठकों के लिए प्रासंगिक है?

↓

उन पाठकों के लिए जो 'कला कला के लिए' सिद्धांत में विश्वास रखते हैं।

↓

रस को काव्य की आत्मा मानते हैं।

संस्कृत आचार्यों के विपरीत आचार्यत्व एवं कविकर्म को एक दूसरे से सम्बद्ध करने वाले पाठक

मनोरंजन को साहित्य के केंद्र में रखना

↓

अपने युग की जनता को हताशा व निराशा से बाहर निकालना

ईश्वर की जगह मनुष्य को केंद्र में रखकर आधुनिकता की ओर प्रस्थान

व्यक्ति

वीर रस की कविताओं में जातीय स्वाभिमान एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्ति मिली

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

रीतिकाल और ललित कलाएँ

↓ लालित्य एवं सौंदर्य पर बल

↓

→ रीतिकालीन कविता → बिम्बात्मकता को धारण करती है।

→ दरबारी दरबारी कविता होने से कवियों द्वारा श्रृंगार चित्रण किया जाता

↓

(स्थूलता एवं मांसल अभिव्यक्ति)

↓

'नैन नचाय कह्यो मुस्काय,
लला फिरि आइयो खेलन होरी।'

→ अतः ललित कला के अनेक स्वरूपों एवं दृश्यों को समाहित किये है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न→ 'बिहारी की कविता के साक्ष्य से बताइए कि कवि की धर्म और दर्शन के क्षेत्र में पैठ थी।'

बिहारी - रीति कालीन कवि

↓

रीतिकालीन कविता

↓

भक्त कवियों के माधुर्यपरक श्रृंगार का विस्तार

↓

इसमें भी बिहारी

अगलेपृष्ठ पर →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

* बिहारी की काव्य कला

1- यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है, तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता। कथन पर विचार करते हुए बिहारी की काव्य कला के वैशिष्ट्य का उद्घाटन करें।

2- बिहारी का काव्य कल्पना की समाहार शक्ति एवं भाषा की समास शक्ति का बेजोड़ समन्वय है। बिहारी सतसई पर प्रकाश डालिए।
(मूल्यांकन)

3- 'कविता उनकी श्रृंगारी है किंतु प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती।' कथन के आलोक में बिहारी की प्रेम एवं श्रृंगार चेतना के वैशिष्ट्य का उद्घाटन करें।

4- बिहारी की कविता के साक्ष्य से बताइए कि कवि की धर्म और दर्शन के क्षेत्र में पैठ थी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

उत्तर (4) →

→ निष्कर्ष

बिहारी: रीतिकालीन कवि
↓
रीतिकालीन कविता भक्त कवियों के माधुर्यपरक श्रृंगार का विस्तार है।
↓
इसमें भी (बिहारी)

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि

श्रृंगारी के साथ-साथ भक्त कवि भी

प्रमाण
↓
मंगलाचरण से बिहारी सतसई की शुरुआत
↓
राधा-कृष्ण की भक्ति में अपनी आस्था का प्रदर्शन
↓
परंतु इस भक्ति के प्रति उनका नजरिया

नीति संबंधी रचनाएँ
↓
• बढ़त-बढ़त संपत्ति सलिल
• दुसह दुराज प्रजानु के

रीतिवादी है
↓
पुष्टि
↓
(i) रीति को मुक्ति का जरिया बतलाना
(ii) तजि तीरथ हरि—
(iii) ज्यों-ज्यों बूड़ै श्याम रंग———
(iv) दई-दई क्यों करत है, दई-दई सु कुबूल

"तजि तीरथ हरि राधिका (आशो) की याद ← दिलाता है ↓
'संभोग से समाधि की ओर'

↓
राधा-कृष्ण का अभिसार स्थल ही काशी और प्रयाग के तीर्थस्थल के समान हो जाता है।

→ वात्सल्य को भी श्रृंगार में तब्दील करना
← फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

बिहारी का काव्य : कल्पना की समाहार शक्ति एवं भाषा की समास शक्ति का बेजोड़ उदाहरण

कल्पना की समाहार शक्ति

- प्रेम के विविध रूपों, अनुभूतियों एवं उनसे जनित मनोवृत्तियों का चित्रण कर पाना
- दो ही पंक्तियों में अनेक दृश्य चित्रों का अंकन
- नायिका के शारीरिक लक्षणों के साथ ही अन्तर्वृत्तियों की भावानुकूल कल्पना / बिम्ब उभारना

भाषा की सामासिकता

- श्लेष व यमक और रूपक का प्रयोग
- एक शब्द को ही पूरे वाक्य की सामर्थ्य प्रदान कर देना,
"कहत नटत रीझत -----"

fair

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

बिहारी : मुक्तक के रचनाकार एवं बिहारी सतसई मुक्तक काव्य परंपरा का उत्कर्ष है।

↓

आचार्य शुक्ल की दृष्टि में मुक्तक की सफलता दो बातों पर निर्भर है

- कल्पना की समाहार शक्ति
- भाषा की समास शक्ति

कल्पना की समाहार शक्ति

↓

जरूरत क्यों

↓

1- अपने व्यापक अनुभव संसार से अपनी कल्पना शक्ति के सहारे उन व्यापक खण्ड दृश्यों का चयन करना होता है जो हृदयस्पर्शी और मार्मिक हों

भाषा की समाहार शक्ति

2- इन खण्ड दृश्यों को संयोजित कर एक वृहद कल्पना का रूप देना

3- इस क्रम में इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि मुक्तक रचनाकार होने के नाते कवि के पास प्रसंगों के संकेत देने का शक्ति स्थान नहीं होती क्योंकि वह कल्पना के लिए जगह पाठक में उत्सुकता रहना

प्रभावी अभिव्यक्ति → वृहद कल्पना को ←

↓

समासशक्ति के द्वारा (कम से कम शब्दों में)

↓

इसके लिए आवश्यक है - काव्यशास्त्र का ज्ञान

↓

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

बिहारी के लिए यह चुनौती और भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि वे दोहा छंद (48 मात्राओं वाला सबसे छोटे छंद) में रचना करते हैं।

→ इसी सन्दर्भ में वे अन्योक्ति पद्धति का प्रयोग करते हैं ताकि सामंती दबाव को हल्का किया जा सके — "नहिं पराग नहिं मधुर मधु"...

→ विहसति बुलाई

→ तजि नीरप हीर राधिका

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"वक्त का तकाजा है तूफां से जूझो
कबतक चलोगे किनारे - किनारे।"

"दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साईंहि न भूल
दई-दई क्यों करत है, दई-दई सु कबूल

श्लेष (दई-दई) — यमक (दई-दई) — बिहारी

दैव - देन

---

* उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, पुनरोक्ति, यमक, श्लेष
* रूपकातिशयोक्ति, व्यतिरेक, अनुप्रास

"चमक, तमक (उत्तेजित), हाँसी, ससक, मसक, झपटि, लपटनि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति और मुकति अति हानि ॥"

मदिरोन्मत्तता — कामोत्तेजना

सार क्रिया पद ← सार क्रियाओं के वाक्य

→ दृश्य, गति व ध्वनि की संश्लिष्ट बिंब की रचना

→ जब रति ही मुक्ति दिलाने की सामर्थ्य रखती हो तो मुक्ति के अन्य मार्गों की तलाश बेकार है।

→ आंतरिक उत्तेजना का बाह्य प्रकटीकरण

→ 'संभोग से समाधि की ओर' ओशो रजनीश की कृति की याद दिलाता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

बिहारी के यहाँ माधुर्य → शृंगार में
वात्सल्य → "

→ यह दोहा बिहारी के अर्थगर्भत्व प्रकट करता है, जिसमें उनके 'नेत्रीनाद कवित्त रस सरस राज रति रंग' का समन्वय हुआ है।

→ ब्रजभाषा का साहित्यिक उत्कर्ष लक्षित हुआ है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न 'छायावाद स्वच्छंदतावाद की तार्किक परिणति है।' कथन के औचित्य की समीक्षा करें।

स्वच्छंदतावाद से आशय

"बंधन विरोध" और इसकी पृष्ठभूमि में मुक्ति का स्वर छायावाद का मूल स्वर है

↓

द्विवेदी युग में इसकी पहली झलक मिलती है।

↓

श्रीधर पाठक, रूपनारायण पाण्डेय, मुकुटधर पाण्डेय

↓

द्विवेदीयुगीन अनुशासनवादी धारा के समानांतर धारा है।

छायावाद के रूप में यह स्व० चेतना नवजागरण की पृष्ठभूमि में तार्किक परिणति प्राप्त करती है

(1) स्वच्छ०

(i) आत्माभिव्यक्ति के रूप में

(ii) व्यक्ति की मुक्ति की प्रस्तावना है।

(iii) प्रकृति की ओर ले जाती है

(iv) प्रेम स्वच्छंदी चेतना का आधार बनता है

(iv) छायावादी पीड़ावाद

तुमको पीड़ा में ढूंढा,
तुममें ढूंढूगी पीड़ा

दर्द का हद से गुजर जाना दर्द की दवा बन जाना है।

(v) छन्दों के बन्धन से मुक्ति की प्रस्तावना → मुक्त छंद की स्थापना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

(2) स्वच्छंदतावाद का नवजागरण के संदर्भों से संबंधित होना

- सामाजिक बंधनों से मुक्ति की चाह
- राष्ट्र की मुक्ति का आधार तैयार करते हुए मानव मात्र की मुक्ति की ओर ले जाती है।
- मुक्ति की यह चाह रहस्यवाद का आधार तैयार करती है।
  - अज्ञात के प्रति चिर जिज्ञासा
  - प्रकृति के प्रति असीम सौंदर्य की स्थापना

(3) यद्यपि छायावाद के समानांतर भी स्वच्छंदतावाद की एक धारा दिखायी पड़ती है जिसका नेतृत्व करते हैं-

- सियाराम शरण गुप्त
- माखनलाल चतुर्वेदी
- बालकृष्ण शर्मा नवीन
- सुभद्रा कुमारी चौहान

इसी छायावाद के विस्तार में प्रेम एवं कल्पना का सुन्दर चित्रण मिलता है।

कथन के समर्थन में निष्कर्ष

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

⇒ छायावाद की "मैं" शैली

~~आत्मानुभूति~~ आत्माभिव्यक्ति की पृष्ठभूमि

पश्चिमी उदारवादी चिंतन, जो व्यक्ति और व्यक्तिवादी चेतना को महत्व देता है

↓

जो भारतीय सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम न होकर पश्चिम के प्रभाव में होने वाले वैचारिक परिवर्तनों का परिणाम है।

↓

स्वच्छंदतावाद के प्रभाव के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

यह आत्माभिव्यक्ति

↓

जड़ सामाजिकता के प्रति विद्रोह के रूप में सामने आती है

↓

इसके पीछे व्यापक मानवतावादी चेतना की प्रेरणा भी मौजूद है

"मैंने 'मैं' शैली अपनाई, देखा एक दुःखी निज भाई।"
–निराला

"वह बालिका, मेरी मनोरम मित्र थी।"
– पंत

"मैं फिर भी दुःख की बदली।"

"मेरे प्रियतम को भाता है तम के परदे में आना"

यह आत्माभिव्यक्ति भक्तिकालीन अभिव्यक्ति से भिन्न है।

भक्तिकवियों की आत्मा० ईश्वर के प्रति है, आध्यात्मिक है किंतु छा० कवियों की आत्मा० लौकिक जग के धरातल पर है जिसमें जीवन जगत से जुड़ाव है।

↓

स्वप्न की आत्मा० रे माकूल अवसर की तलाश छा० कवियों को प्रकृति की ओर ले जाता है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न "छायावादी कवियों के लिए प्रकृति एक ऐसे प्लेटफॉर्म के रूप में आती है जहाँ से वे विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान करते हैं।" कथन के आलोक में छायावादी प्रवृत्तियों की प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं को रेखांकित करें।

छायावाद: पृष्ठभूमि

- राष्ट्रीय नवजागरण
  - पश्चिमी संस्कृति एवं पश्चिमी चिंतन का बढ़ता प्रभाव
- सामा० - मा० परिवर्तन

→ व्यक्तिवादी चेतना का आधार तैयार होना, लेकिन सामा० जड़ता मौजूद है।

- अंततः यह व्यक्तिवादी चेतना इन कवियों को ① आत्माभिव्यक्ति की ओर ले जाती है जिसमें जड़ समाज बाधक है।

↓

फलतः इन कवियों को अनुकूल अवसर की तलाश, ② आत्मविस्तार की प्रेरित करती है

→ ③ इस क्रम में वह प्रकृति-प्रेम की ओर उन्मुख होता है और उसपर से धार्मिक आवरण से हटाकर उसके नैसर्गिक रूप को उभारता है

↓

प्रकृति में निहित संभावनाओं से साक्षात्कार होता है

↓

अपनी प्रवृत्तियाँ ग्रहण करती है →

"वन, गुहा, मठ, तट अंचल में, मैं खोजरहा अपना विकास।"
— कामायनी (मनु)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ यह प्रकृति प्रेम उसकी स्वच्छंद चेतना व स्वातंत्र्य चेतना को उद्घोषित करती है।

↓

सौंदर्य के साथ ही इन कवियों का साक्षात्कार प्रकृति की सीमाओं से भी होता है। प्रकृति सहानुभूति और संवेदना नहीं जानती।

↓

→ पुनः एक कवि जड़ सामाजिकता की ओर लौटकर उससे विद्रोह करता है → वैयक्तिक धरातल पर

→ वह लौटता है नारी के पास - संवेदना और सहानुभूति की चाह में

असफलता/वर्जनाओं से → ④ पीड़ावाद की उत्पत्ति

⑤ अतिशय भावुकता, कल्पना, अज्ञात की ओर प्रेरित होना

और इसी क्रम में ⑥ छायावादी रहस्यवाद का आधार तैयार करता है - जो अपने कई रूपों में प्रस्फुटित होता है - अज्ञात के प्रति जिज्ञासा, समर्पण, प्लेटोनिक प्रेम, पलायनवाद आदि।

⑦ → नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारा गया।

"तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की।"
— कामायनी

"सब कुछ दे दूँ न कुछ लूँ" वाला भाव
— पंकज घोषाल

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

⑧ राष्ट्रीय - सांस्कृतिक चेतना की ओर झुकाव

शब्द पर आरोपित बंधन

⑨ मानवतावादी चेतना

भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर

⑩ मुक्त छंद की प्रस्तावना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Q. "प्रगतिवाद की कोख से निकली प्रयोगवादी काव्य धारा ने प्रगतिवादी काव्यांदोलन को कमजोर करने के बजाय इसे समृद्ध ही किया।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं ?

→ प्रश्न के तीन भाग

- सहमति का आधार
- असहमति का आधार
- उपसंहार (संतुलित एवं तर्कपूर्ण) पक्ष/विपक्ष में

प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया के रूप में प्रयोगवाद को देखा जा रहा है

↓

साथ ही

प्रयोगवाद को प्रगतिवाद के भीतर आकार ग्रहण करते भी दिखाया जा रहा है।

• अज्ञेय को छोड़कर प्रयोगवाद के (सप्तक के) सभी 6 कवि प्रत्यक्षतः - अप्रत्यक्षतः प्रगतिवाद से जुड़े रहे ——→ फिर भी कवि प्रयोगवादी क्यों कहलाए

इसलिए कि ↓

प्रयोग प्रगतिवाद द्वारा, रूप-सौंदर्य, व्यक्ति - व्यक्तित्व को नकारने से तथा साहित्य की व्याख्या मार्क्सवादी दृष्टिकोण से किये जाने आदि से आहत थे

↓

वे मानते थे कि यह मार्क्सवादी आंदोलन प्रगतिवादी आंदोलन को कमजोर करेगा।

↓

अतः यह स्थिति प्रगतिवाद को एक नये रूप में ढकेल रही थी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

और इस प्रकार प्रगतिवादी कविता प्रगतिवाद की धरातल को छोड़ने व यथार्थ से विचलित होने का भी आक्षेप लगता है

2- असहमति का आधार

(i) सोद्देश्य प्रयोगशीलता का आग्रह

यह प्रगतिवादी कविता को प्रगतिवादी यथार्थ से दूर ले जाता है

(ii) प्रयोगवादी कविता के केंद्र में व्यक्ति है जो सामाजिक उपेक्षा करती दिखायी देती है

(iii) प्रयोगवादी सौंदर्य चेतना भी प्रगतिवादी सौंदर्य चेतना से प्रस्थान

(प्रगतिवादी सौंदर्य-चेतना का आधार - उपयोगितावाद है

प्रयोगवादी ⟶ व्यक्तिगत भावों का निरूपण, लघुता, उपेक्षा आदि में ढूढ़ते हैं।

⟶

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

3. उपसंहार की दृष्टि से -

1 (i) निश्चित रूप से प्रयोगवादी कविता में प्रतिक्रिया का भाव प्रबल है। इस भाव के लिए कुछ हद तक प्रगतिवादी कवि भी जिम्मेदार हैं जिन्होंने प्रयोगवाद के सौंदर्य चित्रण की खिल्ली उड़ायी। उसे नकारने का प्रयास किया।

(ii) किसी निष्कर्ष तक पहुँचने से पूर्व इस द्वन्द्व की तार्किक व सार्थक परिणति को देखना होगा। जो प्रयोगवाद के नई कविता में रूपांतरण में व्यक्त होती है जहाँ पर प्रयोगवादी कवि अधिक संतुलित दृष्टि अपनाते हुए दिख भी देते हैं और जहाँ पर अज्ञेय एवं मुक्तिबोध का फर्क स्पष्ट हो जाता है।

↓

- प्रगति-प्रयोग दोनों के स्वर -
- व्यष्टि की समष्टि की -
- पूरी कोशिश है कि प्रगतिवादी चेतना से संपृक्त काव्य नायक के आत्मसंघर्ष का यथार्थ, के धरातल पर उतारते हुए उसे वर्गसंघर्ष का निरूपण करते हैं।"

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Q- "प्रगति और प्रयोग के सामंजस्य ने नई कविता को समृद्ध किया। इसीलिए इसे प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की सम्मिलित विरासत मानना उचित ही है।" समीक्षा करें।

1- सामंजस्य ने नई कविता को समृद्ध किया

पिछले उत्तरों से संदर्भ लें (उदाहरण सहित)

2-

2- क्या यह दोनों की सम्मिलित विरासत माना जा सकता है

- हाँ
  - प्रेरणा/समृद्धि मिली
- नहीं
  - तीनों की मूलवर्ती चेतनाएँ भिन्न हैं
    - प्रगतिवाद → मार्क्सवाद के प्रति वैचारिक प्रतिबद्धता → • वाद-विरोध की प्रवृत्ति
    - प्रयोगवाद — मार्क्सवाद मौजूद पर उसकी वैचारिक प्रति. XX
    - नई कविता — न मार्क्सवाद के प्रति वै० प्रति० है
      - • प्रयोग तो है किंतु सौद्देश्य प्रयोगशीलता का आग्रह नहीं

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

नई कविता 7

आधुनिक भाव बोध इसमें एक सामान्य दृष्टि लगता है

↓

प्रगतिवाद व प्रयोगवाद में XX

अतः नई कविता एक स्वतंत्र काव्य आंदोलन है।

यद्यपि इसने समृद्धि अपनी इन दोनों धाराओं से

पायी लेकिन इसे उनकी विरासत मान लेना

उचित नहीं है।

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

Q. "छायावादी कविता की प्रगतिशील चेतना ही समकालीन कविता के व्यवस्था-विरोधी मूल्य के रूप में परिणति प्राप्त करती है।" विचार करें।

1. छायावादी कविता का विकासशील स्वरूप → 1920 के अंत में आकार ग्रहण करती प्रगतिशील चेतना

↓

2- निराला-पंत के नेतृत्व में यही प्रगतिशील चेतना प्रगतिवाद में रूपान्तरित होती है। यहाँ संस्थागत वैचारिक आधार मिला

↓

(प्रगतिशील लेखक संघ एवं मार्क्सवाद)

4- प्रयोगवाद के रूप में विचलन का संकेत → हिंदी कविता प्रगतिशील चेतना से दूर पड़ती दिखायी देती है।

↓

लेकिन

यही प्रगतिशील चेतना नई कविता में ——)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

समष्टिवादी धारा के अंतर्गत 'मुक्तिबोध' की कविता में मिलती है।

5- आजादी से मोहभंग

↓

लोकतांत्रिक व्यवस्था के अलोकतांत्रिक स्वरूप की पृष्ठभूमि में समकालीन कविता में

↓

व्यवस्था विरोधी मूल्यों का उदय हुआ।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Q- "छायावाद स्वच्छंदतावाद की तार्किक परिणति नहीं है वरन यह उसके समानांतर चलने वाली धारा है जिसने स्वच्छंदतावाद के विकास को बाधित किया"

परीक्षण (examine) कीजिए।

1- कथन के पीछे के कारण

(i) स्वच्छंदतावादी काव्यधारा द्विवेदी युग में मौजूद थी - श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय

(ii) छायावाद के समानांतर एक काव्य धारा थी -
सुभद्रा कुमारी चौहान, सियाराम शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन'

(iii) यही धारा उत्तर छायावाद के रूप में तार्किक परिणति प्राप्त करती है।

2- कथन कहाँ तक उचित है

(i) छायावाद के आविर्भाव की पृष्ठभूमि

a- नवजागरण की धारा (भारतेन्दु युग से प्रवाहमान)

b- द्विवेदी युगीन स्वच्छंदतावादी धारा

- दोनों की -

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

क्रिया-प्रतिक्रिया से छायावाद को तार्किक परिणति मिलती है

[नवजागरण के केंद्र में - समष्टि का भाव
राष्ट्र " "
समाज " "

स्वच्छंदतावाद के केंद्र में - व्यक्ति

छायावादी कविता के केंद्र में → व्यक्ति भी
राष्ट्र "
समाज "

↓

यहाँ स्वच्छंदतावाद राष्ट्रीय चेतना से संपृक्त होकर आ रहा

↓

इस प्रकार छायावाद स्व० को व्यापक आधार भी देता है

↓

उत्तर छायावादी चेतना भी इस प्रभाव से संपृक्त रही है

ओज और मस्ती का स्वर

उत्सर्गधर्मी राष्ट्रवादिता + दोनों भी हैं जैसे "सरफरोशी की तमन्ना........"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

उपसंहार दृष्टि →

कथन से असहमति तर्कपूर्णता के साथ।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Q- "मुक्तिबोध अपने दौर में जितने प्रासंगिक थे, उससे कहीं अधिक आज प्रासंगिक हैं।" औचित्य-निर्धारित करें।

1- LPG आधारित समृद्ध संवृद्धि मॉडल की परिणति हमारे सामने

- बढ़ता सामाजिक-आर्थिक वैषम्य
- उपभोक्तावादी संस्कृति का बढ़ता हुआ वर्चस्व } संवेदनहीनता की ओर ले जा रहा है।

2- मन के स्तर पर असमंजस, किंकर्तव्यविमूढ़ता

"यह तय करो कि
कि तुम किधर हो" मुक्तिबोध

→ आज आधे लोगों ने विषयों पर चुप्पी साध ली है, कुछ को चुप कराया जा रहा है (अभिव्यक्ति की आज़ादी)

"कविता में कहने की आदत नहीं,
पर कह दूँ ...."

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"अब अभिव्यक्ति के
सारे खतरे उठाने ही होंगे,
तोड़ने ही होंगे गढ़
और मठ सब।"

"अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया
मर गया देश,
अरे जीवित रह गये तुम"

"मरे हुए लोग जो अपनी आत्मा भी बेच चुके
वे मरे हुए देश को भी
भुनाना चाहते हैं।"

मुक्तिबोध की चिंता इन 50-70 सालों में धूमिल नहीं हैं उसकी प्रासंगिकता और बढ़ गयी क्योंकि उन्होंने राष्ट्रीय खतरे की जो चिंताएँ पृष्ठभूमि के तौर पर व्यक्त कीं थी वे आज वास्तविकता में उभर कर आयी हैं अतः मुक्तिबोध आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गये हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

9. "छायावाद स्थूल के खिलाफ सूक्ष्म का विद्रोह नहीं, स्थूल और सूक्ष्म का सामंजस्य है।" विवेचना करें।

1- स्थूल के खिलाफ सूक्ष्म का विद्रोह। डॉ॰ नगेंद्र

द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता/स्थूलता की ~~विरुद्ध~~ प्रतिक्रिया में

रीतिवादी मानसिकता की प्रतिक्रिया में

2- सूक्ष्मता की चर्चा उदाहरण सहित

(i) छायावादी कवियों की आत्मनिष्ठ अंतर्दृष्टि

(ii) बहिर्जगत के बजाय अंतर्जगत पर बल
↓ अनुभूति की प्रधानता
↓ समष्टि से व्यष्टि की ओर उन्मुखता

(iii) प्रकृति चेतना का बारीक चित्रण

Ex, नारी चेतना, सौंदर्य व कल्पना, सांस्कृतिक अभिजात्यबोध की सूक्ष्मता

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(iv) कथाबोध कमजोर पड़ जाता है और उसमें अनुभूतियों की सघनता व सौंदर्यपरकता पर बल

(v) अंतर्निहित अनु॰ की आभि॰ के लिए अभिधा के बजाय लक्षणा पर बल

→ इसकी सीमाएँ

(i) नारी सौंदर्य चेतना का मांसल चित्रण (जूही की कली) - रीति कालीन स्थूलता

(ii) स्थूलता व सूक्ष्मता एक सहसंबंध भी है,

$ "नीचे जल था, ऊपर हिम था -- -' (प्रसाद)

→ छायावादी कविता जितना स्थूलता के करीब है उतनी ही सूक्ष्मता के।

(कामसर्ग) शारीरिक मौलिक कल्पना

महादेवी वर्मा, " ऐसा कहना स्थूल की परिभाषा को संकीर्ण करना होगा। सूक्ष्म स्थूल से पृथक होकर अपना कोई अस्तित्व नहीं रखता। स्थूल व सूक्ष्म की यही विरलता छायावादी आलोचना की पहचान है "

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

नई समीक्षा ने हिंदी समीक्षा को क्या नया आयाम दिए?

→ हिंदी आलोचना में साहित्येतर प्रतिमानों के हस्तक्षेप पर रोक लगाती है,

→ भाषिक वैशिष्ट्य को हिंदी समीक्षा के केंद्र में लाकर स्थापित करना,

→ प्रगतिवादी अतिरिक्त वैचारिक दबाव से हि० स० को मुक्त करना,

→ हिंदी स० को पश्चिमी समीक्षा/आलोचना के अधिक करीब ले आती है

- निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत (टी एस इलियट)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

(भावबोध के नयेपन का धरातल)

नवगीत का विकासशील स्वरूप

① 'नवगीत' आंदोलन का जनक

नई कविता से भिन्न एवं विशिष्ट पहचान → रोमांटिक।

→ प्यार किस देवता से कम है तेरा/ प्यार की आरती है गत भेरा
~~मंजिलें~~ जिंदगी की अधेरी गलियों में, इसकी ज्योत है हर कदम मेरा।

② उद्भव काल - प्रथम चरण - (1935-50)

↓

'बेला', अजनबीपन, अस्तित्ववादी चिंतन से प्रभावित

↓

लयात्मकता,
संवेदनशीलता,
रागात्मकता,
आधुनिकता,

→ दिया तुम्हारा चेहरा ऐसे, जैसे छाया कमलकोश की
आँगन की देहरी पर बैठी लिये बुनाई बाल
मेरी आँगन जुड़ी रह गई, आंखों में सावन लहराया

③ विकास काल 1950's

आंचलिकता एवं लोकजीवन से जुड़ाव

प्रयोगवादी कवियों ने इसमें काफी योगदान दिया

→ शिल्पगत, भाषागत वैशिष्ट्य

↓

'नवगीत' संज्ञा का इस्तेमाल

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

③ संघर्ष काल 1960 आदयक

↓

पृथक ~~पत्र~~ पहचान के लिए नवगीत का संघर्ष

↓

आधुनिक भाव बोध से जुड़ा

यथार्थ जीवन की त्रासदी की अभिव्यक्ति

eg → देश हैं हम, महज राजधानी नहीं,

हम बदलते हुए भी न बदले कभी

लड़खड़ाए कभी और संभले कभी

हम हजारों वर्षों से जी रहे हैं।

जिंदगी वही नयी या पुरानी नहीं।

④ उत्थान काल 1970s

पृथक काव्यांदोलन के रूप में पहचान मिला।

↓

विषयगत विविधता / भाषिक प्रयोगशीलता

↓

सैद्धांतिक आधार का निर्माण

↓ आधुनिकता एवं भारतीयता को जोड़ते हुए

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

आधुनिक काव्यधारा के रूप में अपनी पहचान बनाना।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न 'गोदान की कथावस्तु विशृंखल है। इसकी यही विशृंखलता इसे महाकाव्यात्मक औदात्य प्रदान करती है।' विचार कीजिए।

विशृंखल प्रकृति

- मुख्य कथा के साथ अनेक अवांतर कथाओं की उपस्थिति
  (ग्रामीण-शहरी विशृंखलता)
- घटनाओं की विविधता और प्रतिक्रिया स्वरूप बदलता सामाजिक मनोविज्ञान

महाकाव्यात्मक औदात्य कैसे प्रदान करती है

- उपन्यास की व्यापकता को समृद्ध करती है और जीवन व समाज के अनेक छुए-अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करती है।
- जो अंतर्द्वन्द्वों की तीव्रता को बताता है

- नदी के दो तट पृथक दिखते हैं लेकिन वे वस्तुतः असंबद्ध नहीं रहते हैं उसी तरह गोदान विखरा हुआ लगता है लेकिन उसके तटों के बीच विशाल भारतीय संस्कृति व समाज के जीवन मूल्यों और उतार-चढ़ाव की परिस्थितियों में रसी-बसी जलधारा प्रवाहमान है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

गोदान की विशृंखलता

↓

शहरी व ग्रामीण कथाओं की असम्बद्धता से जुड़ी है।

परिणाम

- ग्रामीण एवं कृषक जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण पूर्णता से संभव
- ग्रामीण जीवन में शहरी हस्तक्षेप का उद्घाटन भी संभव
- औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के विद्रूप प्रभाव का भी उद्घाटन संभव
- मूल्यों के संक्रमण को दिखा पाना संभव हुआ
- मध्यवर्ग के अंतर्विरोधों का उद्घाटन संभव
- संक्रमण के दौर से गुजर रहे भारतीय समाज का पूर्णता से चित्रण
- स्त्रियों की विसंगतिपरक जिंदगी

मेहता व मालती के जरिये निम्नवर्गीय मुक्ति में मध्यवर्ग की भूमिका के नये आयाम की तलाश

↓

व्यक्तित्वांतरण

- गोबर के जरिये शहरी एवं औद्योगिक जीवन की स्थितियों को उद्घाटित किया

→ राजनीति, चुनाव, अवसरवादिता आदि का विशद वर्णन हो सका।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न → "गोदान भारतीय जन जीवन में पश्चिमी हस्तक्षेप की कथा है, और इस रूप में यह आज भी प्रासंगिक है"

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यास 'गोदान' यूं तो भारतीय कृषक जीवन की विसंगतियों एवं सामाजिक-प्रशासनिक संरचना की गाथा है लेकिन इसमें शहरी जीवन से ग्रामीण जीवन की संबद्धता ने इसे एक नया स्वरूप प्रदान किया है। मिस मालती का चरित्र एवं औद्योगीकरण से जनित स्थितियाँ इसका प्रबल उदाहरण हैं।

गोदान में पश्चिमी हस्तक्षेप	आज के समय में इसकी प्रासंगिकता
→ मालती की आरंभिक वैचारिकता, स्वच्छंद एवं चपल स्वभाव, पुरुषों के साथ निर्द्वन्द्व भाव से बात करना, मदिरापान करना आदि	① महिला सशक्तीकरण के लिए अनेक आंदोलन ② स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलते आयाम
→ मिल के मजदूरों द्वारा अपने अधिकारों के लिए हड़तालें करना	③ श्रम सुधार एवं श्रम कल्याण के प्रयास

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ ③ गोदान द्वारा आधुनिक मूल्यों की बात करना

④ वर्तमान में अधिकार चीनना

↓

इस नवजागरण की पृष्ठभूमि में गोदान की रचना

↓

जिसका स्वरूप

↓

पूर्वी - पश्चिमी संस्कृति की टकराहट की पृष्ठभूमि में;

और जो गोदान तक आते - आते

सामाजिक - आर्थिक संदर्भों से रूदर्भित होता है।

↓

होरी के बहाने कृषक से मजदूर में रूपांतरण की प्रक्रिया को दर्शाना

↓

जो, संभव होता है

↓

- औपनिवेशिक शासन के हस्तक्षेप
- महाजनी के हस्तक्षेप के जरिये
- शहरी पूँजीवादी उपभोक्तावादी मूल्यों के हस्तक्षेप से

↓

यह हस्तक्षेप होरी को ही रूपांतरित नहीं करता बल्कि भारतीय समाज में सांस्कृतिक - वैचारिक रूपांतरण को भी जन्म देता है।

↓

इस आधार पर

↓

- पाश्चिमी उदारवादी चिंतन
- प्रेम, विवाह, सेक्स आदि → नारी चेतना
- व्यक्तिवादी मूल्य
- समाजवादी आदर्श

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

यह हस्तक्षेप कोई आकस्मिक घटना नहीं बल्कि एक सतत प्रक्रिया है जो आज भी जारी है और इसी संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न "गोदान का होरी प्रेमचंद का आत्म प्रक्षेप है।" इस कथन के औचित्य का निर्धारण कीजिए।

→ प्रेमचंद के निजी जीवन का ग्रामीण, निर्धनता, उपेक्षा और अभावों से गहरा संबंध

→ उनकी आदर्शोन्मुखी विचारधारा का यथार्थोन्मुखी चिंतन में तब्दील होना

→ अपने दृष्टिकोण के अनुकूल होरी के माध्यम से सामाजिक व राजनीतिक विद्रूपताओं को उजागर करना

→ जमींदारी प्रथा, सामाजिक बहिष्कार, सांप्रदायिकता एवं ब्राह्मणवादी आडम्बरयुक्त प्रवृत्ति के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करना

→ प्रेमचंद ने होरी के साथ अपनी हर वेदना में फिर से जिया है

↓

होरी की मौत को गहरे समझने की बात उन्होंने स्वयं स्वीकार की

⇒ गोदान में प्रेमचन्द का सामाजिक बोध

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

कलाकार

⇒ " रचने वाले प्राणी और भोगने वाले प्राणी में हमेशा एक अंतर होता है। जितना बड़ा यह अंतर होगा, रचना उतनी ही महान होगी।"

प्रेमचंद ऐसे कलाकार के लिए थे जिनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था; दुनिया के इस आदर्श का निर्वाह आसान नहीं होता। तब तो और भी नहीं जब रचनाकार व्यक्ति की तुलना में समष्टि को कहीं अधिक महत्व देता लेकिन डॉ० रामविलास शर्मा ने इस आलोक में टिप्पणी करते हुए कहा है -
" यदि प्रेमचंद ने होरी को अपना हृदय दिया है तो मेहता को अपना मस्तिष्क।" - और इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो यदि होरी प्रेमचंद का आत्म प्रक्षेप प्रतीत होता है तो इसे अस्वाभाविक नहीं माना जाना चाहिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

आत्म प्रक्षेप माने जाने का आधार -

1- आलोचकों ने होरी की गौ लालसा की तुलना प्रेमचंद की प्रेस की लालसा से की - " यह प्रेमचंद की प्रेस-लालसा ही थी जो गोदान में होरी की गौ लालसा में प्रकट हुई। दोनों की व्याख्या एक समान परिणति होती है।

2- 'उपेन्द्र नाथ 'अश्क' को लिखे पत्र में प्रेमचन्द ने व्यक्त किया, " भाई मनुष्य का वश हो तो कहीं देहात में जा बसे। दो-चार जानवर पाल ले और जीवन को देहातियों की सेवा में व्यतीत करे।' प्रेमचन्द का यह सपना एक ओर उनके मोहभंग को दर्शाता है तो दूसरी ओर होरी के साथ उनके मिटते फर्क को भी जिसकी सोच थी, -" किसानी में जो मान मरजाद है, वह मजूरी में कहाँ।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

3- होरी स्वनिर्मित ग्रामीण समाज के जिन मूल्यों के साथ जीना चाहता है - भाईचारा, बंधुत्व, प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, त्याग आदि में जो उसकी गहरी आस्था है, संयुक्त पारिवारिक चेतना के प्रति उसमें जो प्रबल आग्रह है वह सब होरी को प्रेमचंद का प्रतिबिंब बनाता है।

→ होरी की वर्ग चेतना - "इस दुनिया में मोटा होना बेहयाई है 100 के पतले होने पर एक मोटा होता है"

⟹ आत्मप्रक्षेप नहीं है -

1- प्रश्न यह उठता है कि यदि होरी प्रेमचंद का आत्मप्रक्षेप है तो गोबर, धनिया, झुनिया, मेहता और मालती किनके जीवन और विचारों का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं?

2- ऐसी स्थिति में हमें यह स्वीकार करना होगा कि होरी की तरह प्रेमचंद भी धर्मभीरु थे, खुशामदी थे

होरी का कर्ज कर्मी व डीलडौल एवं उसकी छवि जो बनती है दिखाई देती है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

और उसका भी मानना था कि 'छोटे बड़े सब भगवान के घर से बनकर आते हैं' या फिर 'जब दूसरों के पाँव तले गर्दन दबी हो तो कुशल इसी में है कि तलवों को सहलाने में ही साथ हो'। यहाँ मानना होगा कि प्रेमचंद भी होरी की तरह दब्बू थे जो प्रेमचंद ने जो जीवन जिया है उसके साथ अन्याय है।

3- प्रेमचंद का यह कहना भी इस धारणा का खण्डन करता है कि- "मैं अपने पात्रों को अपने बच्चों की तरह पालता, पोसता और बड़ा करता हूँ पर किसी भी पिता की तरह यह नहीं जानता कि आगे चलकर वे कैसे होंगे।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि होरी कई स्थानों पर प्रेमचंद के भावों और विचारों का उसी तरह निर्वाह करता आता है जिसतरह गोदान के अन्य पात्र। ये पात्र प्रेमचंद के

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

भावों और विचारों से नहीं बने परन्तु प्रेमचंद के भाव और विचार समाज में मौजूद इन पात्रों से बने इसलिए होरी को प्रेमचंद का ~~प्रतीक~~ आत्मप्रक्षेप मानना उचित प्रतीत नहीं होता।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न - 'प्रेमचंद गोदान में समस्याओं को तो चित्रित करते हैं लेकिन समाधान नहीं देते।" उनकी यथार्थवादी दृष्टि ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

→ अबतक जितने उपन्यास लिखे उन्हें समस्या के समाधान की पहुँच प्रदान की परंतु गोदान का अंत यथार्थवाद के धरातल पर होता है। गोदान के नायक होरी को प्रेमचंद मार देते हैं और धनिया भी लगभग मृत्यु सदृश स्थिति में पहुँच जाती है।

→ न तो इसके सहलाकर खुशामद करने वाला होरी बच पाता है और न ही धनिया सामान्य स्थापित कर पाती है जो सोचती है कि इसमें यदि जमींदार के खेत जोते हैं तो वह अपना काम ही तो कर रहा था उसके लिए क्यों सलामी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ यह स्थिति प्रेमचंद के आदर्शवादी काल्पनिक समाधानों से मोहभंग की ओर संकेत करती है।

→ गोदान में प्रेमचंद फिराक के करीब खड़े दिखते हैं जिन्होंने कहा है- " फिराक केवल प्रश्न उठाता है समाधान न कोई इनके पास, मूल समस्याओं का केवल हाल ' क्योंकि समाधान के बारे में वे कहते हैं -

" जो कुछ खुलता सामने, समस्या है केवल

असली जिन पर वश्न के ताले हैं-

उनका शायद हो हुआ मुक्ता के और

हम तो प्रश्नों का रूप सजाने वाले हैं, "

[दृष्टान्त]

⟹

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

⟹ गोदान से गुजरते हुए ऐसा प्रतीत होता है, पर वास्तविकता ऐसी नहीं; समाधान के संकेत गोदान में बिखरे पड़े हैं जरूर है असंगतो को पकड़ने की और उन्हें संकल्पनाओं में रूपान्तरित करने की। अब तक की व्याख्याओं की गोदान की शिकायत इस बात से है कि गोदान में प्रेमचन्द को समाधान देने की जल्दबाजी नहीं। समस्या को उसके बहुविध परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करने में उनकी रुचि कहीं अधिक है। इसे कुछ उदाहरणों के जरिये समझा जा सकता है। जैसे-

(1) कृषक समस्या का समाधान गोबर के रूप में है तो दूसरा संकेत रामसेवक के प्रतिरोध में है

(2) वैवाहिक संस्था / जड़ता की समस्या के समाधान की संभावनाएं सच्चरित्र में

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

3- अलगयोझा के संबंधो का दृष्यों पर प्रतिकूल असर में संयुक्त परिवार की चेतना भोला का वापस आना गोबर में बदलाव आना

4 - शोषित वर्ग संगठित एवं शोषक वर्ग का विरोध

5- किसानो को सूदखोरी व महाजनी के चंगुल से निकालने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था का निर्माण व सूदखोरी की दरो को निर्धारित करना

6 - पंचायत, बिरादरी, धर्म, स्वराज आदि का शोषण के रूप में तब्दील होते चला जाना और जिसका समाधान धनिया एवं गोबर की जागरूकता में है।

7- अछूत समस्या के समाधान की संभावना को गांधीवादी आन्दोलन की चेतना में मिलना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

9- प्रेमचंद के उपन्यासों में अभिव्यक्त यथार्थवादी चेतना के विविध स्वरूपों का उद्घाटन कीजिए।

- हिंदी उपन्यास के धरातल पर।
  - यथार्थवाद की प्रतिष्ठा का श्रेय प्रेमचंद को है।
- यथार्थवाद का स्वरूप
  - सामाजिक यथार्थवाद (साध्य)
  - मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद (साधन)
  - अंतर्संबंध
    - ↓ सामाजिक यथार्थ के विविध पहलुओं के उद्घाटन की व्याख्या की
    - ↓ व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में भी (मनो० यथा०)
- प्रेमचंद के उपन्यास

आलोचनात्मक यथार्थवाद का भी प्रयोग होता है। सामंती समाज की विद्रूपताओं के उद्घाटन के लिए ↓ लियो टॉलस्टॉय की रचनाओं में।

- चरित्रों को महत्व मिला है

"मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्रों पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों का उद्घाटन उपन्यास का मूल तत्व है।"

प्रेमचंद के पाँव यथार्थ की जमीन पर टिके हुए हैं, उनकी नजरें आसमान (आदर्शों) पर टिकी हैं और उन्होंने आदर्श को आसमान से उतार कर जमीन पर ला दिया।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⇒ आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद से यथार्थवाद की ओर

सेवासदन ——————→ कर्मभूमि व गोदान

संक्रमणशीलता

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

1. रंगमंचीय संभावनाओं की दृष्टि से किये गये प्रयोग के रूप में 'आ० का एक दिन' नाटक पर विचार कीजिए।

2. 'आ० - - ' नाटक भारतीय स्त्री की नियतिपरक विडंबनाओं को उद्घाटित करता है'

3. 'आ० — का कालिदास दुर्बल नहीं है, मोम, स्थिर और अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित है।'

4. 'विलोम अपेक्षाकृत सबल है।' इस कथन की औचित्य की समीक्षा कीजिए।

5. प्रेक्षकों पर संप्रेषणगत प्रभाव की दृष्टि से प्रसाद व राकेश के नाटकों का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

6. कालिदास क्या है - एक सफल विलोम और विलोम - एक असफल कालिदास! इस कथन की मीमांसा कीजिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

7- प्रसाद की राष्ट्रीयता की विवेचना करते हुए बतलाइये कि यह मोहन राकेश एवं भारतेंदु की राष्ट्र-दृष्टि से किस प्रकार भिन्न है? और इसने किस प्रकार स्कंद-गुप्त नाटक की अभिप्राय को प्रभावित किया है?

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

नाटक - रंगमंच संबंध

नाटक के लिए रंगमंच

BT → दोनों के समक्ष पारसी रंगमंच की चुनौती → PL

PL ↓ रंगदृष्टि ↓ तीन बातें

1. पर्याप्त द्रव्य
2. कुशल अभिनेता
3. सुरुचिसंपन्न दर्शक

BT ↓ रंगमंच के लिए नाटक

लेकिन

→ अभिनेयता सरल, सहज एवं रोचक रूप में

→ कम संसाधनों में ही भारतेंदु के नाटक खेले जा सकते थे

→ भारतेंदु स्वयं मंचन की करते थे अतः अभिनय तत्त्वों की व्यावहारिक समझ थी।

→ नाटक का उद्देश्य - देश की जनता को जागरूक, शिक्षित एवं संवेदनशील बनाना

अभिनेयता का तत्व उपेक्षित जैसे SG -

वस्तुयोजना की असंबद्धता
↓
दृश्यों की असंबद्धता
↓
कथित एवं वर्जित दृश्यों की योजना

पात्रों के बीच आनुपातिक असंबद्धता

→ संवादयोजना में असंतुलन
↳ लंबे स्वगत कथन
अनावश्यक लंबे गीत

→ संस्कृतनिष्ठ हिंदी

→ दार्शनिकता का दबाव

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

नाटक : अभिनेयता

- नाटक-रंगमंच के संबंध के बारे में नाटककार का दृष्टिकोण और इसका अभिनेयता पर प्रभाव
- वस्तुयोजना व दृश्य-योजना
- पात्र योजना
- संवाद-योजना / गीतियोजना
- अभिनय-संकेत
  - इसी के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष
  - भाषा
  - ध्वनि एवं प्रकाश संकेत

→ प्रत्येक नाटककार के कुछ वैशिष्ट्य हैं जिनके बारे में चर्चा की जानी चाहिए।

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⇒ नाटकों की रंगमंचीयता के आधार पर भारतेंदु के भारत-दुर्दशा एवं प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक की तुलना →

	भारत दुर्दशा / भारतेंदु	स्कंदगुप्त / प्रसाद
① वस्तु योजना — AKED ↓ सुसंबद्ध, वस्तु एवं दृश्य योजना	सुव्यवस्थित, परंतु 5वाँ अंक → विचलन फिर भी वह सहायक के रूप में सामने आया है	• वस्तु योजना - दृश्य योजना असंतुलित • बड़ा आकार (लगभग 30-35 सालों की अवधि के प्रसंग) • कथानक में बिखराव ↓ दर्शक को नाटक से जोड़े रखने में मुश्किल
② पात्र योजना — AKED सहायक है ↓ सीमित संख्या, आनुपातिक स्थान, परिस्थितियों के अनुसार पात्र आकार ग्रहण करते हैं।	प्रतीकात्मकता, अभिनेयता को कुछ हद तक बाधित करती (ये पात्र मनोभावों के प्रतीक हैं)	→ बाधक → पात्रों की संख्या अधिक, • उनके बीच आनुपातिक संबंध का निर्वाह न हो पाना

→ पात्रों का अंतर्द्वन्द्व नाटक के अंत तक आपस में घुलमिल जाता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

	BD	SG
③ संवाद योजना AKED ↓ अनुकूल, रोचक, भावुकता एवं संवेदनीय प्रभाव लिये ✓	सुरुचिपूर्ण, परंतु कहीं-कहीं लम्बे स्वगत कथन तथा अनावश्यक दोहराव भरे गीत	• दार्शनिकता का दबाव ↓ संप्रेषण में बाधक • लम्बे स्वगत कथन • गीतों की अधिकता • कई बार अनावश्यक गीतों की असम्बद्ध योजना
④ अभिनय संकेत आंगिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य AKED ↓ पर्याप्त एवं प्रासंगिक	अनुकूल	• असजगता • कठिनाई
⑤ ध्वनि एवं प्रकाश संकेत AKED → सबसे अधिक प्रभावी राकेश - प्रयोगधर्मी नाटककार ✓ बिम्बों एवं प्रतीकों की योजना विशेष	पर्याप्त	• अनुकूल नहीं

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

6. भाषा	BD	SG
AREO ↓ • सरल, सुबोध, अनुभूतिपरक – गहराई एवं पात्रानुकूल भाषा ... "प्रसाद की भाषा जानने की भाषा है जबकि राकेश की भाषा जीने की भाषा है।"	अभिनेयता में बाधक ↓ भुजनिष्ठता, अरबी-फारसी शब्दों की बहुलता ↓ लेकिन हास्य व्यंग्य की योजना तथा लोकभाषा का समावेश इन कमियों को बहुत हद तक दूर करता दिखायी देता है।	→ संस्कृत निष्ठ, ऐतिहासिक वातावरण एवं पारिभाषिक शब्दावली को बनाये रखने की कोशिश → संप्रेषण एवं अभिनेयता दोनों में बाधक → भाषायी आभिजात्यता का प्रभाव

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

नुक्कड़ नाट्यशैली

① परिचय

जनता की समस्याओं को सड़कों पर उठाने व जागरूकता फैलाने का माध्यम

रंगमंच को लेकर शहर व गाँवों में व्याप्त दूरी को पाटने की कोशिश

रंगमंचीय औपचारिकताओं से रंगमंच का मुक्त हो जाना

② पृष्ठभूमि

हबीब तनवीर, बर्नाड ब्रेख्त

- वैचारिक प्रेरणा
- तद्‌युगीन परिस्थितियाँ (नक्सलवाद, आपातकालीन विरोधी आंदोलनों आदि)
- व्यवस्था विरोधी चेतना
  (समस्या नाटक के रूप में व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करना

③ उद्देश्यपरकता - संवेदना व शिल्प दोनों के धरातल पर।

④ सीधे दर्शकों तक पहुँचने की कोशिश

न तो सुखांत है, न ही दुःखांत

समस्या का बहुविध आयामों में प्रस्तुतीकरण

सामाजिक, व राजनीतिक बदलावों का आधार

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

नाट्यधारा

- भारतेंदु के नाटकों से प्रेरणा (अंधेर नगरी)
- नाट्य रूपांतरण की प्रवृत्ति (पूस की रात जैसी कहानियों का)
- इस धारा के लिए पृथक रूप से भी नाटक लिखे गये
- संख्यागत परिप्रेक्ष्य
  - 'इप्टा' का गहरा प्रभाव
  - वामपंथी ट्रेड यूनियन जैसे संगठन

सीमाएँ

1- समाजवादी विचारधारा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता
अभिजात वर्ग के प्रति घृणा, शोषित वर्ग के प्रति पक्षधरता

2- प्रचारात्मकता व नारात्मकता का आरोप लगाया है

3- अभिजात वर्ग में कम ही लोकप्रियता। ××

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न, क्या आपको लगता है कि भारत-दुर्दशा एक दुःखांत एवं त्रासद रचना है? इस नाटक के नायकत्व एवं रूपबंध के आलोक में इस प्रश्न पर विचार करें।

- **दुःखांत + त्रासद रचना कैसे?**
  - अंत
    - 'भारत' की मूर्च्छावस्था + भारत भाग्य की आत्महत्या
    - ↓ त्रासद प्रभाव होता है। (करुणा का भाव)
  - ① अंत को लेकर विवाद है और इसका संबंध है नायकत्व से
    - ↓ दावेदारी
      - भारत
      - भारतभारत
  - ② प्रतीकात्मकता को लेकर विवाद
    - भारत भाग्य की
      - वह नायक है या सहनायक
      - वह भारत की नियति है या सौभाग्य का प्रतीक है। } यहाँ वह नियतिवाद का ही प्रतीक है
  - रूपबंध
- **कैसे नहीं?**
- **निष्कर्ष**

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

रूपबंध

- नाटक का शीर्षक
- नाटक का दुःखद एवं त्रासद वातावरण
- जिसे निर्मित करने में सहायक है- विसादृश्य-निरूपण
  - अतीत के गौरव के सापेक्ष वर्तमान की दुर्दशा
  - तीसरे और चौथे अंक में आक्रमण की सुनियोजित तैयारी करना, पाँचवे अंक में प्रतिकार के हवा-हवाई प्रयास।
- पाँचवा अंक स्वतंत्र प्रहसन का रूप लेता हुआ त्रासद प्रभाव को हल्का कर देता है।
  - छठे अंक में विसादृश्य निरूपण और आत्महत्या का प्रसंग त्रासद प्रभाव को सघन बना देता है

निष्कर्ष → त्रासद प्रतीत होता है किंतु है नहीं। आशा की प्रत्याशा के साथ नाटक का यथार्थपरक अंत कि अब भारत अपने भाग्य और नियति के सहारे नहीं बल्कि अपने चिंतन और कर्मों को अपनी उन्नति का आधार बनायेगा।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न - 'भारत-दुर्दशा' नाटक के ज़रिये भारतेंदु ने नवीन नाट्य शैली की तलाश करते हुए हिंदी रंग मंच को नयी दिशा देने की कोशिश की है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं?

हिंदी रंग मंच पर भारतेंदु से पूर्व का प्रभाव ↓

- पारसी थिएटर
- लोकनाट्य

एकमात्र मुख्य बल - मनोरंजन एवं चमक-दमक पर ही

भारतेंदु की नवीन शैली ↓

- पारसी थिएटर की निम्नस्तरीय विचारधारा से हटते हुए ↓

- नाटक का उद्देश्य पूर्णता के,
- देश के यथार्थ को जनता के समक्ष रखकर उन्हें चिंतन के लिए प्रेरित किया
- सरल व सुबोध कथनों द्वारा अभिनेय दृश्यों को शामिल किया
- रंगमंच की सुगमता के अनुसार रंग संयोजन व स्पष्ट संकेत विधान किया

शुरुआत भारतेंदु से हुई जिनका विस्तार एवं परिष्कार जयशंकर प्रसाद व उनके बाद मोहन राकेश की नाट्य शैलियों में आकार पाती गयी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

नवीन नाट्य शैली की तलाश

→ हिंदी रंगमंच को नवीन दिशा

पृष्ठभूमि
- नवजागरण
- पारसी रंगमंच द्वारा प्रस्तुत चुनौती
- पश्चिमी नाट्यशास्त्र से संपर्क

आशय
- पूर्वी एवं पश्चिमी नाट्य तत्वों का संश्लेषण
  - प्रयास - भारतेंदु द्वारा जिसकी तार्किक परिणति होती है - जयशंकर प्रसाद के नाटकों में

पूर्वी तत्व
- मंगलाचरण से शुरुआत
- लोकनाट्य तत्वों का समावेश
-

पश्चिमी तत्व

(i) – कोरस की तर्ज पर योगी की लावनी

(ii) – वर्जित दृश्यों की योजना (युद्ध, चुम्बन, आलिंगन, आत्महत्या के दृश्य)

(iii) – पात्र योजना
- पात्रों का आत्मपरिचय
- पात्रों की प्रतीकात्मकता

स्त्रियां राजनीति के प्रतीक

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(iv) नाटक का रूप बंध

→ मध्य में चरम सीमा (भारतीय परंपरा में चरम बिंदु नाटक के अंत में होता है।)

(v) नाटक का अंत दुःखांत या सुखांत किया जाता।

(vi) नाटक का उद्देश्य

↓

'नाटक' के नामक निबंध में भारतेंदु ने 'देशवत्सलता' को नाटक का पाँचवां तत्व बताया है

(vii) व्यक्ति वैचित्र्यवाद की शुरुआत

(viii) शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद व पाश्चात्य नाटकों के संपर्क में आये।

⟹ हिंदी रंगमंच को नवीन दिशा

↓

इस नवीन नाट्य शैली के जरिये-

- जातीय चेतना से संपृक्त हिंदी रंगमंच की तलाश
- और उसे पारसी रंगमंच के समानांतर खड़ा करना
- हिंदी रंगमंच को रंगमंचीय औपचारिकताओं से मुक्त करना तथा उसे सुदूर गाँवों तक पहुँचाने का प्रयास।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न, यदि भारतेंदु चाहते, तो ईश्वर या मानवीय नेतृत्व के माध्यम से भारत की दुर्दशा की समस्या का समाधान कर सकते थे, किंतु उनके सामाजिक उद्देश्यों एवं यथार्थवादी दृष्टि ने नाटक में समाधान नहीं आने दिया।

दुर्दशा का समाधान संभव था

↓

विकल्प थे

- ईश्वर के माध्यम से
- मानवीय नेतृत्व के माध्यम से

↓

कारण

↓

- भारतीय नवजागरण का धर्म के आवरण में आना
- वैष्णव धर्म व संस्कारों में भारतेंदु की गहरी आस्था
- कुछ ऐसा ही समाधान 'अंधेर नगरी' व 'नीलदेवी' में मौजूद है।

- दुर्दशा का कारण ईश्वर का कोप भी है।

परंतु समाधान नहीं

↓

क्यों नहीं हुआ

- सामाजिक उद्देश्य
- यथार्थवादी दृष्टि

↓

(i) – नवजागरण

(ii) – तद्युगीन परिस्थितियों में ऐसा संभव नहीं था

↓

प्रमाण है – पाँचवां अंक

↓

- कवि का लिजलिजा व्यक्तित्व
- दूसरे देशी में भीरु तत्व
- एडीटर के हवा हवाई सुझाव
- बंगाली का बड़बोलापन

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

(iv) नाटक का रूप बंध

→ मध्य में चरम सीमा (भारतीय परंपरा में चरम बिंदु नाटक के अंत में होता है।)

(v) नाटक का अंत दुःखांत या त्रासद किया जाता।

(vi) नाटक का उद्देश्य

↓

'नाटक' के नामक निबंध में भारतेंदु ने 'देशवत्सलता' को नाटक का पाँचवा तत्व बताया है।

(vii) व्यक्ति वैचित्र्यवाद की शुरुआत

(viii) शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद व पाश्चात्य नाटकों के संपर्क में आये।

⟹ हिंदी रंगमंच को नवीन दिशा

↓

इस नवीन नाट्य शैली के जरिये -

- जातीय चेतना से संपृक्त हिंदी रंगमंच की तलाश
- और उसे पारसी रंगमंच के समानांतर खड़ा करना
- हिंदी रंगमंच को रंगमंचीय औपचारिकताओं से मुक्त करना तथा उसे सुदूर गाँवों तक पहुँचाने का प्रयास।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न, यदि भारतेंदु चाहते, तो ईश्वर या मानवीय नेतृत्व के माध्यम से भारत की दुर्दशा की समस्या का समाधान कर सकते थे, किंतु उनके सामाजिक उद्देश्यों एवं यथार्थवादी दृष्टि ने नाटक में समाधान नहीं आने दिया।

- दुर्दशा का समाधान संभव था
  - विकल्प थे
    - ईश्वर के माध्यम से
    - मानवीय नेतृत्व के माध्यम से
    - कारण
      - भारतीय नवजा. का धर्म के आवरण में आना
      - वैष्णव धर्म व संस्कारों में भारतेंदु की गहरी आस्था
      - कुछ ऐसा ही समाधान 'अंधेर नगरी' व 'नीलदेवी' में मौजूद है।
      - दुर्दशा का कारण ईश्वर का कोप भी है।
- परंतु समाधान नही
  - क्यों नहीं हुआ
    - सामाजिक उद्देश्य
    - यथार्थवादी दृष्टि
      - (i) – नवजागरण
      - (ii) – तद्युगीन परिस्थितियों में ऐसा संभव नहीं था
        - प्रमाण है – पाँचवा अंक
          - कवि का लिजलिजा व्यक्ति
          - दूसरे देशों में भीरु तत्व
          - एडीटर के हवा हवाई सुझाव
          - बंगाली का वाक्‌विलास →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

(iii) प्रयासों की निरर्थकता और निराशा को उजागर करने में अधिक रुचि

↓

और इसीलिए उन्होंने भारतीयों का ईश्वर व महारानी से मोहभंग कराया

*(iv) ऐसा कोई भी समाधान काल्पनिक होता और आरोपित होता।

⟹ सामाजिक उद्देश्य

i) जब तक नवजागरण के बाधक तत्व मौजूद

↓

वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र आदि की विभाजनकारी भूमिका का विरोध करते हुए

↓

प्रगतिशील सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति दी

(ii) इस सामा० उद्देश्य का संबंध उनकी मानवतावादी चेतना से जुड़ता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

देश की बहुविधि समस्याओं से जनता को अवगत कराते हुए वे दर्शकों एवं पाठकों के समक्ष स्वयं समाधान का दायरा विस्तृत करते हैं क्योंकि आत्मविश्वास से हीन जनता द्वारा देश का उत्थान व उद्धार संभव नहीं है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ उनकी इतिहास व कल्पना के बीच (सामाजिक-सांस्कृतिक) आनुपातिक संतुलन अद्वितीय है।

→ ऐतिहासिक चरित्रों में मानवीय संवेदना की स्थापना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न 'भारतेंदु की 'भारत-दुर्दशा' में अभिव्यक्त राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना ही स्कंदगुप्त नाटक में तार्किक परिणति प्राप्त करती है।' विचार करें।

1. नवजागरण चेतना के प्रति और उसकी प्रतिनिधि रचनाएँ

2. (i) नवजागरण का स्वरूप स्थिर न होकर विकासशील रहा है

(ii) भारत-दुर्दशा - सामा० राज्य के बहाने
↓
वैचारिक मंथन का आह्वान
↓
नवजागरण के विरोधों की अभिव्यक्ति मिली
↓
स्कंदगुप्त नाटक तक आते-आते यह अंतर्द्वन्द्व समाप्त हो जाता है

(iii) नवजागरण की अति अतीतोन्मुखता की प्रवृत्ति
↓
वर्तमान की कीमत पर प्रायः अतीत के गौरव के गायन।

कवि

B — P

कहीं अधिक व्यावहारिक
↓
इतिहास बोध यथार्थपरक है।

(iv) राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता बोध कहीं अधिक मुखर
↓
पश्चिमी संस्कृति का प्रत्यालोचन।
↓
भारतीय राष्ट्रीयता की संकल्पना → राष्ट्रवाद

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

(v) पराधीनता / दुर्दशा के कारणों की तलाश

↓

एकदम से ↑ व्यक्ति

↓

धर्म, जाति, सम्प्रदाय, लिंग, क्षेत्र

↓

(vi) इनकी विभाजनकारी भूमिका की व्याख्या

आलोचना – एक०

(vii) नव जागरण की आधुनिकता भारत-दुर्दशा में

अपरिपक्व रूप में परंतु एक० में व्याख्यायित

↓

इसीलिए व्यक्तिगत अस्मिता, नारी अस्मिता

का आग्रह एक० में अवस्थित मिलता है।

(vii) राष्ट्रीय चेतना का उद्बोधनात्मक स्वरूप

↓

जागरण के आह्वान / संदेश में रूपान्तरित

↓

(viii) उत्सर्गधर्मी राष्ट्रचेतना / राष्ट्रीयता के

रूप में उभरती है जो भारत-दुर्दशा में व्यक्त अनुपस्थित

है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ इसीलिए क्षेत्रीयता बनाम राष्ट्रीयता का द्वन्द्व और सामंजस्य का भा० में अभाव

जबकि स्क० में ✓

- आदर्श राज्य के मूल्यों की पहचान
- समतावादी समाज का आदर्श भी प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्षतः

भारत-दुर्दशा में अभिव्यक्त राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना ही स्कंदगुप्त नाटक में तार्किक परिणति पाती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न "प्रसाद यदि आज होते, तो उससे कहीं अधिक विचलित होते जितने वे अपने युग में थे।" कथन पर विचार करते हुए स्कंदगुप्त की प्रासंगिकता का परीक्षण करें।

प्रश्न है- स्कंद गुप्त की प्रासंगिकता

इस नाटक में प्रसाद की जिस सोच को अभिव्यक्ति मिली है, वह कहीं न कहीं तद्युगीन परिस्थितियों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया है।

जैसे - प्रसं

- राष्ट्र की अवधारणा
- राष्ट्रवाद
- सामा० - आर्थिक वैषम्य के आलोक में समाजवादी रुझान
- नारी चेतना → पर्दादित के माध्यम से
- संस्कृति एवं सांस्कृतिक अस्मिता
- सांप्रदायिकता एवं धर्मनिरपेक्षता
- सत्ता एवं जनता के संबंध में
- क्षेत्रवाद बनाम राष्ट्रवाद
- आंतरिक सुरक्षा के संदर्भ में।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

स्कंदगुप्त जैसे नाटक, जिसमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति मिली है, कभी अप्रासंगिक नहीं होता। यह प्रतिक्रिया है 1920 के दशक के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के प्रति।

'स्कंदगुप्त' की रचना के 9 दशक गुजरने वाले हैं लेकिन जो सोच उस राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य को परिचालित कर रही थी, कहीं न कहीं वह सोच आज भी विद्यमान है। इसीलिए स्कंदगुप्त में चित्रित संकट जितना प्रसाद के समय का है उतना ही आज के समय का भी।

ऐसी स्थिति में धातुसेन के जरिये प्रसाद ने जो चेतावनी दी है- 'यह साम्राज्य तो अस्ताचल की ओर चल रहा है। यदि जनता और सत्ता अपने स्वार्थ से मुक्त न हो तो पतन के लिए बहुत देर इंतजार नहीं करना पड़ता।' यह चेतावनी आज के प्रसंग में भी अधिक प्रासंगिक है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

विशेषकर तब जब राजनीतिक नेतृत्व के लिए 'येन केन प्रकारेण' सत्ता हथियाना ही अहम हो जाए और जनता इन भावात्मक मुद्दों में उलझ जाए जो मूल प्रश्नों से हमें दूर कर दे।

भारत एक समाज के रूप में, संस्कृति के रूप में और एक राजनीतिक व्यवस्था के रूप में एक बहुलतावादी धारणा है और ऐसी कोई भी मानसिकता जो बहुलतावाद के विरोध में जाए, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए खतरनाक हो सकती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक संश्लेषणशीलता से गुजरते हुए आज के भारत रूप में आइडिया ऑफ इण्डिया की जड़ चल रही है और ऐसे में पाश्चात्य राष्ट्रीय संकल्पना को लेकर प्रसाद भारतीय राष्ट्रीय की जीत संकल्पना को लेकर उपस्थित होते हैं वह अधिक प्रासंगिक होते हैं जैसे-

बौद्धों का शांति संदेश
सूफी संत देते आनंद

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

विजय केवल लोहे की नहीं
धर्म की रही धरा पर धूम
किसी का हमने छीना नहीं
प्रकृति का रहा पालना यहीं
कहीं से हम आये थे नहीं।

पश्चिमी राष्ट्रवाद जिसकी परिणति या तो साम्राज्यवाद में होती है या फिर फासीवाद के रूप में।
प्रसाद द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रवाद की यह अवधारणा मानवतावाद के धरातल पर खड़ी उतरती है और इसीलिए इनके काव्य में अनेक राष्ट्रीयताएँ समाहित हो जाती है –

"अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।"

आज का भारत उस मोड़ पर खड़ा है जहाँ उसे विभिन्न वादों में से एक चुनना है और कोई भी वाद मनुष्य और मनुष्यता से बड़ा नहीं हो सकता।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

इसीलिए मानववाद सर्वोपरि है। यहाँ तक कि यह राष्ट्रवाद से भी ऊपर है जिसकी दिशा में संकेत करते हुए प्रसाद ने लिखा है –

राष्ट्र और समाज मनुष्य के हाथ बनते हैं उन्हीं के सुख के लिए। जिस राष्ट्र और समाज से हमारे सुख में बाधा पड़ती है उस राष्ट्र का हमें तिरस्कार

और प्रसाद के लिए महत्व सिर्फ राष्ट्र तक ही सीमित नहीं रह जाती राष्ट्र से बढ़कर यह धर्म तक पहुँच जाती है। स्कंदगुप्त में बौद्ध-ब्राह्मण द्वन्द्व की पृष्ठभूमि में प्रसाद ने अपनी पक्षधरता किसी धर्म विशेष की बजाए मानवधर्म के प्रति घोषित किया और उनका यह संदेश आज के उस परिदृश्य में कहीं अधिक प्रासंगिक है जहाँ गाय के नाम पर होने वाली राजनीति मानव की जान को मनुष्य की जान से ही सस्ता बना दे।

प्रसाद ने स्कंदगुप्त में यह कहते हुए – " अन्न पर स्वत्व है भूखों का और धन

पर स्वत्व है देशवासियों का" कहते हुए उस सोच के और घावों छिपा है जो सामाजिक आर्थिक वैषम्य को गहराने में सहायक है।

स्कंदगुप्त नाटक की प्रासंगिकता यहीं तक सीमित नहीं होती। देवसेना (भीख माँगते हुए) को छेड़ते युवकों को देखकर पर्णदत्त की यह प्रतिक्रिया - "बीच दुपहरी विलास का नाटक कीड़ा है ----- अब तक विलासिता और नीच वासना नहीं गयी। जिस देश के युवक ऐसे हों उसे अवश्य दूसरों के अधिकार में जाना चाहिए।" कहीं न कहीं उस समाज को संदेश है जिसमें 2 वर्ष की बच्ची हो या 75 वर्ष की बेवा हो, घर के बाहर की बात तो छोड़ दें, घर के भीतर ही महफूज नहीं।

संक्षेप में स्कंदगुप्त नाटक के जरिये प्रसाद ने जिन दृश्यों को उठाया है वे क्षणिक न होकर शाश्वत हैं क्योंकि उनका संबंध

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

मनुष्य की सोच और प्रवृत्तियों से है और इसीलिए उसकी प्रासंगिकता निर्विवाद है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न "इतिहास और कल्पना का संयोग प्रसाद के नाटकों की सर्वोपरि विशेषता है।" कथन पर विचार करते हुए प्रसाद की इतिहास दृष्टि का उद्घाटन करें।

- इतिहास व कल्पना का संयोग सर्वोपरि विशेषता है
  - यदि है तो
    - यह दिखाना होगा कि अन्य सारी विशेषताएँ इसी पृष्ठभूमि में आकार ग्रहण करती हैं।
  - नहीं है
    - महत्वपूर्ण विशेषता है परंतु सर्वोपरि नहीं
    - क्योंकि अन्य विशेषताएँ भी कहीं कम महत्वपूर्ण नहीं हैं।
      1. पूर्वी व पाश्चिमी नाटक तत्वों के संश्लेष के जरिये नवीन नाट्यशैली की प्रस्तावना जिससे नाटक प्रसाद के नाटक न तो सुखांत, न दु:खांत बल्कि वे प्रसादान्त होते हैं।
- प्रसाद की इतिहास दृष्टि

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

2- सांस्कृतिक संदर्भों और आधुनिकता के संदर्भों से संवर्धित नवजागरणपरक चेतना का उत्कर्ष प्रसाद के नाटकों में मिलता है।

3- हिंदी नाटकों का क्लासिकल विशेषता प्रदान करना

4- हिंदी को क्लासिकल चौथि प्रदान करना

5- प्रसाद के नारीपात्र जिन्हें गढ़ने में प्रसाद ने अपनी पूरी सृजनात्मक कल्पना उड़ेल दी

6- भारतेन्दु व पूर्वी-पश्चिमी तत्वों का सफल समन्वय जिसके कारण हिंदी नाटक में कथानक संकलन न केवल संश्लिष्ट स्वरूप प्राप्त करता है वरन ऐतिहासिक नाटक की उद्देश्य प्रधानता प्रतिसंतुलित होती हुई चरित्रों के लिए रास्ता निर्मित करती है

7- राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता बोध जिसमें पश्चिमी संस्कृति व पश्चिमी उदारवादी चिंतन के सकारात्मक तत्वों के प्रति परिपक्व प्रेम है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

इतिहास दृष्टि

1. प्रसाद एक महज साहित्यकार नहीं इतिहासकार भी हैं।

2. इतिहास महज साधन नहीं साध्य भी है।

↓

ऐतिहासिकता का प्रबल आग्रह → भूमिकाएँ जिनके जरिये अपने नाटक की ऐतिहासिकता सिद्ध करने का प्रयास

3. अपने नाटकों के जरिये इतिहास की टूटी हुई कड़ियों को जोड़ने का प्रयास किया।

4. समकालीन चिंताओं से किनारा नहीं करते

5. ऐतिहासिकता के आग्रह के बावजूद साहित्य के प्रति अपने दायित्व के प्रति सजगता

↓

• साहित्यिक सरसता बनाये रखने की कोशिश

↓ इसके लिए प्रसाद सृजनात्मक कल्पनाशीलता का सहारा लेते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न 'क्या स्कंदगुप्त नाटक में कल्पना और इतिहास के समन्वय से नाटक में संवेदनागत सौंदर्य की वृद्धि हुई।' तर्कयुक्त उत्तर दीजिए।

समन्वय क्यों
↓
- भारत के अतीत के प्रति उनका मोह
- अतीत के प्रति उपयोगितावादी नजरिया है जो प्रसाद को अतीत की ओर प्रेरित करता है
↓
प्रसाद बिना अतीत का संबल लिये भी अपनी बातें कह सकते थे
↓
लेकिन अतीत के सहारे बेहतर संप्रेषण संभव
↓
क्योंकि
अतीत की समान पृष्ठभूमि हमें भावनात्मक धरातल पर जोड़ने का कार्य करती है

और भावनात्मक धरातल पर जुड़ने की स्थिति
↓
लेखक केलिए अपनी बातों को पाठकों तक पहुँचाना आसान हो जाता है और पाठक भी उसे आसानी से स्वीकार कर पाता है।

कल्पना
उस अतीत को रोचकता के साथ प्रस्तुत करने में सहायक है
↓ और
उस अतीत को विभिन्न युगीन संदर्भों से जोड़ना आसान रहता है →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

इसके पात्रों से अन्तर्क्रियात्मक संपर्क बनता है)

अभिनेयता

→ प्रसाद की भाषा
(जानते हैं जीते नहीं)

→ प्रसाद की दार्शनिकता

→ ऐतिहासिकता का पुट

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न 'आषाढ़ का एक दिन' मातृगुप्त और कालिदास के द्वन्द्व से कहीं आगे जाकर आदर्शवाद और यथार्थवाद का द्वन्द्व है जिसमें विजयी कोई नहीं परंतु पराजित दोनों हैं। कथन की औचित्यता सिद्ध कीजिए।

1. मातृगुप्त vs कालिदास के द्वन्द्व की पृष्ठभूमि में एक बनते-बिगड़ते रचनाकार के जरिये
↓
भारतीय सर्जनात्मक प्रतिभा के सार्वकालिक मानक की तलाश

2. मगर यही नहीं
↓ क्योंकि
↓
नवरूमानियतवाद की अभिव्यक्ति
⇓
रूमानीपन vs यथार्थ
↓
भावना में भावना के बल के परिप्रेक्ष्य में। (पहला अंक) इसी का विस्तार है।
↓
दूसरा अंक
↓
रोमांटिक पर यथार्थ का टुकड़ा फेंका गया
↓
तीसरा अंक ↓
यथार्थ की चोट से छिन्न भिन्न होती रोमांटिकता

3. परिणाम

- मल्लिका अम्बिका में पराजित
  ↓
  तन-मन केन्द्र पर विभाजित
- कालिदास का विलोम में पराजित होना
  ↓
  न वह कालिदास रह पाता है और न वह मातृगुप्त रह पाता है क्योंकि
  ↓
  → कालिदास से उसका कवित्व भी छिन जाता है और प्रेमिका भी --
  → न वह मातृगुप्त रह पाता है क्योंकि शासन
  →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

रचना के अंत में कालिदास ~~प्रस्थिति~~

↓

"न खुदा ही मिला न विसाल ~~या~~ संगम।"

"वेदना में जो शक्ति है,
वह दृष्टि देती है।
जो यातना में है वह
द्रष्टा हो सकता है।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

व्यवस्थाविरोधी नाटक

1- **पृष्ठभूमि**

↓ स्वतंत्रता से मोहभंग

- बर्टोल्ट ब्रेख्त के एपिक थिएटर का प्रभाव
- इसके बीज भारतेंदु के नाटकों में
- समस्या नाटकों का ही रूपांतरण व्यवस्था विरोधी नाटकों में

प्रमुख नाटक-नाटककार

योगदान और महत्व

↓ आगे चलकर यह नुक्कड़ नाट्यांदोलन का आधार तैयार करता है।

2- **उद्देश्य**

↓ सामंती-पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति घृणा और पीड़ित जनता के प्रति सहानुभूति

नाटक को बदलाव के साधन के रूप में देखते हुए प्रतिरोध के माध्यम में तब्दील कर देना

3- **प्रमुख नाटक एवं नाटककार**

↳ भीष्मसाहनी का 'हनूश'

- कबिरा खड़ा बजार में
- सर्वेश्वर दयाल का 'बकरी'

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ **हरूश**

↓

'ब्रेख्त' के 'गैलेलियो' का प्रभाव

↓

हरूश अपनी ही उपलब्धियों के कारण अभिशप्त

↓

आँखें फोड़ दी जाती हैं, अनाथ बच्चे को तालीम देकर विदेश भेजना और इस तरीके से प्रतिरोध जताना

→ **कबिरा खड़ा बजार में**

↓

कबीर के सत्रह पदों को आधार बनाकर उन्हें दमनकारी लोदी वंश का विरोध करते हुए दिखाना

बकरी

↓

गांधीवादी आचरण का प्रतीक एवं भोली-भाली जनता का प्रतीक

↓

राजनेताओं द्वारा दोनों का इस्तेमाल अपने हितों के लिए किया जाना

↓

बकरी के नाम पर चंदा वसूली और चुनाव में जीत के बाद मंत्री बनना और बकरी को मारकर खा जाना

↓

विद्रोही युवक उसी मरी बकरी की खाल से डुगडुगी बनाता है और जनता को जागृत करते हुए राजनीतिक परिवर्तन का प्रयास करता है

→ **शुतुरमुर्ग** : ज्ञानदेव अग्निहोत्री

↓

मनुष्य की पलायनवादी प्रवृत्ति और सरकारी घोषणाओं का प्रतीक

↓

युद्ध संकट की काल्पनिक परिस्थितियाँ भी और विरोधी दल द्वारा विरोध भी और चारित्रिकता पूरी करना ।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

→ (त्रिशंकु) : ब्रजमोहन शाह
↓
- घटनाओं व संवादों की विसंगति,
- साधनों के अभाव में मौलिक सृजनशीलता का ~~अभाव~~ क्षरण

(ex. हमीदुल्ला का दंगियों से संपर्क)

↓

व्यवस्था की नृशंसता और पाशविकता का उद्घाटन,

↓

(भालू) जनता का प्रतीक

(शेर) विद्रोही युवक का प्रतीक

नियति, सलाखों के पीछे कैद होने की

(महत्व)

↓ व्यवस्था के प्रति आक्रोश को सर्जनात्मक अभिव्यक्ति

↓ नुक्कड़ नाट्यांदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येय IAS most trusted since 2003

अज्ञेय और तारसप्तक

→ अज्ञेय तारसप्तक के ऐसे अकेले कवि हैं जिनका संबंध मार्क्सवाद से नहीं है। यद्यपि तारसप्तक में बहुसंख्या मार्क्सवादी विचारधारा से जुड़े कवियों की रही। फिर भी, तारसप्तक की विभिन्नताओं में अज्ञेय को मूल स्थान प्राप्त हुआ। संपादक के तौर पर अज्ञेय ने तारसप्तक से जुड़े कवियों को राही के बजाय राहों के अन्वेषी कहा क्योंकि ये वैचारिक परंपरा से हटते हुए जीवन की अभिव्यक्ति को स्वर देने वाली नवीन विचारधारा की खोज के लिए निरंतर प्रयासरत रहे।

तारसप्तक के जरिये इन्होंने प्रयोगवादी काव्य धारा की शुरुआत की। बतौर संपादक मुक्त चिंतन पर बल, वैचारिक धरातल पर सक्रिय होने की बजाय मूलतः रचना प्रक्रियाओं से जूझना और कविता में नवीन प्रतिमानों की स्थापना करने पर उनका जोर रहा।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

कामायनी

"आह! वह मुख! पश्चिम के व्योम---

→ बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य का समवेत रूप

→ श्रद्धा के अपार्थिव सौंदर्य के प्रति मनु की प्रतिक्रिया

→ दो उपमान → (काले मेघों से भरे आकाश) की कालिमा को भेदती हुई सूर्य की लालिमा

→ यानि नव इन्दुनील लघु श्रृंग फोड़कर धधक रही हो कांत

→ सादृश्य योजना और उत्प्रेक्षा का विधान

→ ध्वनि, गति व दृश्य का संश्लिष्ट

→ तत्समता → भावी 'एवं' श्रद्धा के भी औदात्य का संकेत है।

→ यह चित्र जितना प्राकृतिक है उतना ही मनु की आंतरिक दशा को भी प्रकट करता है।

→

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS® most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

मोल माँग्यो अपनो रूप।
- - - - कौन रंक को भूप ॥

} राधा को संबोधित करते हुए गोपियाँ उद्धव और कृष्ण पर लक्ष्य साधते हुए कहती हैं।

→ भावप्रेरित कथन वक्रता ✓

→ मुहावरेदार भाषा - जीवंतता

→ प्रेम बानगी के प्रेम का संदेश → स्त्री-पुरुष संबंधों की प्रस्तावना - प्रगतिशील चेतना का परिचायक → सामंत विरोधी मूल्यों के रूप में आकार ग्रहण करता

→ ब्रजभाषा क्षेत्र में लोक प्रचलित

→ जायसी - तुलसी की अवधी में जो अंतर है वही भेद सूर और बिहारी की ब्रजभाषा में है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

" मध्यतम, वेदांत ने क्या ही उपमा किया---

- भारतेंदु ने भारत की दुर्दशा के लिए केवल बाह्य कारकों को ही जिम्मेदार नहीं माना बल्कि भारतीय समाज एवं सांस्कृतिक पद्धति और भारतीयों में मौजूद आंतरिक दुर्भावों को भी माना।

→ वेदांत की भूमिका

'अद्वैत व्याख्या' — ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या

→ जिर

→ वेदांत की व्याख्या संकीर्ण पक्ष में की गयी जो अहंकार मूलक आत्मपक्ष की ओर ले जाती है।

→ यह अवधारणा → दायित्व विमुखता की ओर ले जाती है → x

→ ज्ञान मार्ग की संकीर्ण परिप्रेक्ष्य में की गयी व्याख्या प्रणालियों को विकृत करते हैं जैसे स्नेहरहित हृदय, दायित्वहीनता व असंवेदनशीलता आदि

↓

ऐसे में देश के उद्धारकी कौन सोच सकता है। क्योंकि जगत मिथ्या है तो कोई व्यवस्था नहीं होगी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ जय शंकर की में व्यंजना शंकराचार्य के मायावाद पर।

→ भाषा – तत्समता की ओर रुझान

↓

भारतेंदु की तार्किकता व प्रसिद्धि काफी हद तक आती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Q- "भक्ति आंदोलन पर जनसाधारण का जितना व्यापक प्रभाव हुआ, उतना किसी अन्य आंदोलन का नहीं।" कथन की सार्थकता पर विचार करते हुए कबीर की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

Q- "सामंती समाज की जड़ता को तोड़ने की जैसी कोशिश कबीर ने की, वैसी किसी अन्य मध्यकालीन कवि ने नहीं।" विचार करें।

→ सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, लैंगिक, राजनीतिक जड़ता

मीरा के यह कोशिश सर्वाधिक मुखर रूप में
↓
क्योंकि वे रचना के धरातल पर ही नहीं बल्कि व्यावहारिक धरातल पर लैंगिक जड़ता से जूझने की कोशिश करती हैं

तुलसी की अभिव्यक्ति अत्यंत मुखर नहीं लगते

→ तुलनात्मक चर्चा

- कबीर की चर्चा (विस्तार पूर्वक)
- अन्य कवियों → संक्षिप्त

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

⇒ प्रश्न 1- Recap - भक्ति आंदोलन का जनसाधारण पर प्रभाव

भक्ति आं० का जन साधारण पर प्रभाव

- ज्ञान व योगसाधना की रूखी और जटिल प्रक्रिया से भक्ति की सरस अनुभूति की ओर जनता को ले जाना
- → आडम्बरों, सामंती मानसिकता के विरोध एवं सरल-सुबोध लोकभाषा में शोषित, पीड़ित व अशिक्षित जनता को अपनी परिधि में शामिल करना
- → शास्त्रों एवं ब्राह्मणवाद का खण्डन
- → रामानुजाचार्य, रामानंद, आदि की भूमिका ~

अन्य आंदोलनों की स्थिति

कबीर की भूमिका का मूल्यांकन

- → सामाजिक कुरीतियों - जातिवाद, ब्राह्मणवादी मानसिकता का तीव्र विरोध
  "जौ तू बाभन ~ ~
- → ज्ञान-योग के क्षेत्र में भक्ति की सुमधुर अनुभूति
  दुलहिनि गावहु मंगलचार ~
- → निर्गुण-सगुण का विरोध मिटाते हुए ऐक्य स्थापित करना -
  अगुनहिं-सगुनहिं नहिं ~
- → मानवतावाद का प्रबल संदेश -
  सतगुरु के सब जीव हैं - ~
- → प्रगतिशील चेतना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

⟹

- जनसाधारण पर व्यापक प्रभाव
  - जितना भक्ति आं० का प्रभाव
  - [उतना किसी अन्य का नहीं]
    - ↓
    - बौद्ध आंदोलन,
    - नवजागरण
- कबीर की भूमिका
  - ↓
  - (भक्ति आं० के प्रभाव को गहराने में)
- उपसंहार

मध्ययुग में हम अपने आपको एक विशाल आंदोलन के समक्ष पाते हैं क्योंकि उसका प्रभाव आज तक विद्यमान है – ग्रियर्सन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

⇒ भक्ति आंदोलन आत्मावलोकन की उस परंपरा की अगली कड़ी है जिसके एक छोर पर बौद्ध आंदोलन विद्यमान है तो दूसरे छोर पर 19वीं सदी का नवजागरण। लेकिन यह इन दोनों ही आंदोलनों से विशिष्ट है। इसकी इसी विशिष्टता को रेखांकित करते हुए ग्रियर्सन ने कहा- "मध्य युग में हम अपने आपको एक ऐसे आंदोलन के समक्ष पाते हैं जो बौद्ध आंदोलन से भी कहीं विशाल है क्योंकि इसका प्रभाव आजतक विद्यमान है।" रही बात उन्नीसवीं सदी के नवजागरण की तो इसकी अभिजातवर्गीय शहरी प्रकृति इसे तुलना के दायरे से ही बाहर कर देती है। इसीलिए एक आंदोलन के रूप में इसने जनमानस को उतना प्रभावित नहीं किया जितना इस दौर के रचनाकारों ने व्यक्तिगत स्तर पर राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति देते हुए राष्ट्रीय मानस को प्रभावित किया।

यदि भक्ति आंदोलन इन सबसे विशिष्ट है तो इसलिए कि इसे आरम्भिक दौर में उन कबीर

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

का नेतृत्व प्राप्त हुआ जिन्होंने जनता की पीड़ा और वेदना को उसी की भाषा में बिना लाग-लपेट के अभिव्यक्ति दी; और स्थितियों के युग की आवाज बन सके ..... कबीर का व्यक्तित्व भी इसमें सहायक बनता है जिसमें एक और अस्वीकार्य का साहस था जिसके द्वारा चलते वे असहमति एवं विरोध को प्रकट कर सके तो सृजन की संभावना भी जिसके कारण वे प्रेम के धरातल पर नये किसलयों को लेकर उपस्थित हो सके ... इस पूरी प्रक्रिया में सहायक बनती है - कबीर की भाषा, जो उन्हें और उनके संदेशों को जनता तक पहुँचाती है जिसके वैशिष्ट्य की दिशा में संकेत करते हुए आचार्य द्विवेदी ने कहा है, -" कबीर ने जो कुछ कहना चाहा है उसे उन्होंने अपनी भाषा से कहलवा लिए है। बन पड़ा है तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर) शायद यही कारण है कि आज के दलित चिंतक कबीर और उनकी परंपरा से अपना संबंध

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

जोड़ने को लालायित रहते हैं।

लोक जीवन, लोक संस्कृति एवं लोक परंपराओं से जुड़ाव की यह चेतना तुलसी, नानक और मीराबाई तक भी व्याप्त होती है। (केवल कबीर तक सीमित नहीं।)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Q. ⟹ "कबीर जैसे रचनाकार कभी अप्रासंगिक नहीं होते। यहाँ तक कि उनकी अप्रासंगिकता में भी प्रासंगिकता निहित है।" कथन पर युक्तियुक्त तरीके से विचार करें।

Q. ⟹ "जिन अर्थों में ~~कबीर~~ आज भी प्रासंगिक हैं उन अर्थों में अन्य कोई ~~भक्ति के~~ भक्त कवि नहीं।" कथन पर प्रकाश डालिए।

अप्रासंगिक क्यों नहीं होते।
↓
कबीर ही नहीं, कबीर जैसे सभी → ऐसे रचनाकार जिनकी युगीन परिस्थितियों की नब्ज पर पकड़ हो / देश, काल और सीमाएं अतिक्रमण करना
↓
- मानवीय सरोकारों के कवि
- उनकी चिंता मानवीय सरोकारों से उपजी है
↓
ये सरोकार कबीर को किसी दायरे (देशकाल-वातावरण) से बंधने नहीं देते।
↓
चाहे वह दायरा वर्ण और जाति का हो या धार्मिक सम्प्रदाय का हो। → चाहे आर्थिक वैषम्य द्वारा सृजित हो।
→ चाहे शास्त्र का हो या लोक वेद का हो

उनकी अप्रासंगिकता में भी प्रासंगिकता निहित → आगे पृष्ठ पर

शायद यही कारण है कि संतो-भक्तों में कबीर की प्रासंगिकता की बात आज सबसे ऊपर है।

चाहे वह दायरा मध्ययुगीनता का हो या फिर आधुनिकता का हो।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ यदि कबीर किसी दायरे में बंधते दिखायी देते हैं तो वह है लैंगिकता।

↓

लेकिन इस संदर्भ में भी कबीर याद दिलाते हैं कि उनका रचनाकाल 15 वीं सदी का दौर था जबकि हम 21वीं सदी में जी रहे हैं।

↓

परंतु आज की लैंगिक मनोवृत्ति आज भी वैसी ही है जो कबीर के समय थी और निश्चित रूप से हम कबीर की सोच के दायरे से आज भी मुक्त नहीं हो सके हैं। यह बिंदु जो कबीर को अप्रासंगिक बनाता है वह आज की स्थिति को देखते हुए प्रासंगिक ही दिखायी पड़ते हैं।

2- कबीर मध्ययुग में पैदा होने के चलते उन्होंने उस मानसिकता के दायरे से निकलने की कोशिश की परंतु हम आज आधुनिक युग में जीते हुए भी मध्ययुगीन मानसिकता से पूर्णतः नहीं निकल पा रहे हैं।

3- उनकी मूल चिंता मोक्ष की चिंता है। अध्यात्म उनके काव्य का प्राणतत्व है और सामंती व्यवस्था की जड़ों पर प्रहार करने से परहेज किया है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

अतः विरोध सामग्री व्यवस्था से नहीं बल्कि उसके अमानवीय स्वरूप के खिलाफ है और उसे मानवीय बनाने की सिफारिश करते नज़र आते हैं

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Q => 'कबीर एक ओर अद्वैतवादी हैं तो दूसरी ओर भागवद् भक्ति के दृढ़ स्तंभ।' समीक्षा कीजिए।

अद्वैतवादी कवि

Tone
↓
अद्वैतवाद एवं भागवद् भक्ति के मूल अंतःविरोध का संकेत
↓
और कबीर किस प्रकार दोनों के बीच संतुलन को साधते हैं।

भक्त कवि

संभव होता है योगसाधना की सीमाओं की पृष्ठभूमि में
↓
- अपूर्णता
- अस्थाई प्रकृति
↓
पिंड के भीतर के ब्रह्म से जोड़ती है जबकि बाहर के ब्रह्म से काटता है।

- गार्हस्थ जीवन का निषेध करती
- योग की रूढ़ियों में उलझना

→ आमलोगों में योग का साधना-जन्य आतंक
↓
जटिल व अग्राह्य अवधारणाएँ।

रामानन्द के निर्देशन में
↓
कबीर 'राम नाम' का बीज मंत्र लेते हैं
+
भक्ति के प्रेम तत्व को लेते हैं
+
योग के दायरे का अतिक्रमण करते हुए आठवें चक्र के रूप में सुरति कमल चक्र की परिकल्पना करते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

सुरति कमल चक्र – साधना-चक्र के प्रभाव के समाप्त होने के बाद भी साधक ब्रह्म के प्रति स्मृति के धरातल पर प्रेम करता है और उस अद्वैतत्व को महसूस करने में सक्षम होता है।

<u>आचार्य द्विवेदी का कथन</u> – "कबीर की ~~भक्ति-योग~~ वाणी योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई है।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न गुप्तजी गांधी और गांधीवाद से गहरे स्तर पर प्रभावित रहे हैं। भारत-भारती के आलोक में इस कथन पर विचार कीजिए।

↓ गांधीवाद के प्रभाव की बात क्यों?

↓ क्यों उचित नहीं?

↓ तर्कपूर्ण उपसंहार

i) राष्ट्र भाषा के संदर्भ में वह आचार्य महावीर प्र. द्वि. के ऋणी हैं और राष्ट्रीय-भावना के लिए महात्मा गांधी के।

ii) गुप्तजी के वैष्णव संस्कार और भारत-भारती की राष्ट्रीय चेतना / रचना प्रक्रिया पर इसका प्रभाव रहा
↓
रामनवमी के दिन रचना शुरु
जन्माष्टमी " पाठकों को समर्पित

iii) हिंदू व आर्य शब्द का बार-बार उल्लेख करना

(iv) गांधी के सर्वधर्म समभाव की भावना की अनुपस्थिति
↓
" ~~ध्यान साम्प्रदायिक~~ बनती रही क्या एक माला विविध फूलों के

(v) गांधी की तरह गुप्तजी का रुझान भी मध्ययुगीन आदर्शों की ओर है और वे गांधीजी की तरह ही उदारराष्ट्रवाद की प्रस्तावना करते आते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

(vi) वर्णव्यवस्था व जातिव्यवस्था को लेकर गुप्तजी की भी अवधारणा गांधी जी के करीब है।
↓
इसी पृष्ठभूमि में भारत-भारती भी उसी तरह राष्ट्रीय-सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक में तब्दील हो जाती है जिसप्रकार गांधी और गांधीवाद।

क्यों उचित नहीं?

भा.भा. का रचनाकाल 1911 है जबकि भारतीय राजनीतिक पटल पर उनका आविर्भाव 1917 है और उसके बाद द० अफ्रीका में किये गये राजनीतिक प्रयोग का भारत में राजनीतिक उपकरण में इस्तेमाल → जिसकी पृष्ठभूमि में गांधीवाद का आकार ग्रहण करना।

निष्कर्षतः
1- दरअसल गुप्त जी के इस प्रकार वाला कथन और इस प्रकार सम्मान का संकेतक है जिसे उतना बढ़कर माना जाना चाहिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(ii) दरअसल गांधी और गांधीवाद कोई स्वतंत्र मौलिक चिंतन अथवा दर्शन नहीं; वरन् उस भारतीय सांस्कृतिक चिंतन परंपरा की आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में की गयी व्याख्या है जिसे गुप्त जी ने अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा है इसीलिए स्वाभाविक है कि गांधी और गांधीवाद के कुछ तत्व गुप्तजी के यहाँ मौजूद हैं। लेकिन इस आधार पर गुप्त जी पर गांधीवाद के प्रभाव की बात उचित नहीं।

ध्येयIAS most trusted since 2003
Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 1 गुप्तजी की काल-दृष्टि और चेतना एक ~~सांप्रदायिक~~ सांस्कृतिक राष्ट्रीयतावादी की है। उनका आधार उतना राजनीतिक नहीं जितना ऐतिहासिक थी। वह स्थूल, स्पष्ट निरूपित भाव लक्ष्यों से नहीं निर्मित, सूक्ष्म अभिप्रबोध से प्रेरित है। इस कथन पर विचार करें।

प्रश्न 2. 'आज अनेक युवा कवियों को मैथिलीशरण गुप्त का काव्य उतना ही अनास्वाद्य प्रतीत होता है जितना युवा कहानीकारों एवं उपन्यासकारों को प्रेमचन्द की रचनाएँ। ~~उपन्यास साहित्य। कथन पर विचार~~' कथन के आलोक में गुप्तजी के कवित्व के प्रश्न पर विचार कीजिए।

[अज्ञेय का कथन]

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

प्रश्न 1 का उत्तर

गुप्त जी उस नवजागरण परक चेतना के प्रतिनिधि रचनाकार है जिसका आगमन पश्चिम के सांस्कृति उ. से उपजे हुए सांस्कृतिक अस्मिता के संकट की पृष्ठभूमि में सां० अस्मिता की तलाश के रूप में होता है

↓

गुप्त जी के समय तक आते-आते यह तलाश राजनीतिक अ० की तलाश में रूपांतरित तो होने लगी थी पर राज० अ० की तलाश का प्रश्न अब भी बहुत मुख्य नहीं हो पाया, राजनीति में भी और साहित्य में भी।

↓

और कम से कम साहित्य में तो नहीं। →

छायावादी दौर तक रा० अ० का प्रश्न ही कहीं अधिक मुख्य विचारणीय पक्ष है।

↓

इसलिए स्वतंत्रता व स्वराज के राजनीतिक प्रश्नों की अनुगूँज की तलाश गुप्त जी के यहाँ उचित नहीं जिसकी पुष्टि गुप्तजी की रचनाओं से होती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

→ गुप्त जी अपनी रचनाओं के लिए रूपात्मक पौराणिक, मिथकीय आख्यानों में तलाशते हैं। (साकेत उर्मिला, यशोधरा, जयद्रथ वध)
| रामकथा — जातक कथा — कृष्ण कथा |

↓

लेकिन इन पौराणिक मिथकीय संदर्भों को वे हूबहू /उसी रूप में प्रस्तुत नहीं करते, वरन् उसे आधुनिकता के साथ-साथ अपने युगीन सांस्कृतिक संकट से संपृक्त करते हैं और इस क्रम में नवीनता के समावेश के जरिये उन पौराणिक मिथकों की पुनर्रचना करते हुए आते हैं जिसकी पृष्ठभूमि में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय सां० अस्मिता बोध को आकार ग्रहण करते हुए देखा जा सकता है।

↓ आर्य और हिंदू संस्कृति गौरवों और उनके प्रतीक पुरुषों का महिमामंडन।

↓

जिस गौरव में अरब के लिए भी स्थान है और राजपूताने के लिए काशी के लिए भी स्थान है, और कर्बला एवं मार्क्स व जेनी की प्रेमकथा के लिए भी।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

यदि ऐसा है तो इसलिए कि गुप्त जी की रचनाओं के पीछे लुप्त होती हुई भारतीयता का वह दर्द मौजूद है जिसका उल्लेख अज्ञेय ने किया है → प्रश्न के कथन के रूप में।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 2 का उत्तर

गुप्तजी की काव्यात्मकता पर प्रश्न क्यों?	इस प्रश्न को कहाँ तक उचित माना जाए?

→ गुप्तजी (नवजागरण परक) चेतना के प्रतिनिधि रचनाकार हैं
↓
इस आग्रह के साथ नव चेतना की अभिव्यक्ति देते हुए उतरे हैं —
"केवल मनोरंजन न कवि ..

→ साहित्य की (सामाजिक सोद्देश्यता) का यह आग्रह गुप्तजी को अभिधात्मकता की ओर ले जाता है और, वे (अभिधात्मक शैली) में तुकबंदियों की रचना करते हैं।

अपने पात्रों के बहाने भारतीय जनता को संबोधित करते प्रतीत होते हैं जो अशिक्षित व अजागरूक है।
↓
और इसकी पृष्ठभूमि में कवित्व का प्रश्न गौण पड़ जाता है
↓
शायद यही स्थिति (आलोचकों) को प्रेरित करती है यह कहने के लिए कि गुप्तजी का महत्व ऐतिहासिक कारणों से है काव्यात्मक कारणों से नहीं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

उनका महत्व काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने व लोकप्रिय बनाने के कारण है।

जहाँ तक युवतर लेखकों के गुप्तजी से संबंधित दृष्टिकोण का प्रश्न है तो कहीं न कहीं इनका रुझान अपने युग के अन्तर्द्वन्द्व और आतंकि नारक की ओर कहीं अधिक है और इसीलिए उनकी नज़रों में राष्ट्र व समाज के प्रश्न कहीं गौण पड़ते दिखते हैं। इतना ही नहीं 'इलियटवादी' आदर्शों से प्रभावित होकर वे रचना की सार्थकता को शिल्पगत वैशिष्ट्य और काव्यगत वैशिष्ट्य में जाकर तलाशते हैं- लेकिन वे भूल जाते हैं कि -

(i) गुप्त जी उस द्विवेदी युग के प्रतिनिधि रचनाकार हैं जो काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली के विकास का पहला चरण है और इसीलिए खड़ी बोली अबतक काव्यभाषा के संस्कारों से लैस नहीं हो पायी। यह कार्य छायावादी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

दौर में सम्पर्क होता है।

(ii) ऐसे ही लेखकों को इन्हीं कारणों से कबीर की रचनाएँ भी अकाव्यात्मक लगती हैं और कई बार प्रगतिवादी रचनाएँ भी, यहाँ तक कि कुछ प्रगतिवादी चेतना से प्रभावित रचनाकारों को भी गुप्तजी की रचनाएँ अकाव्यात्मक लगी हैं किंतु प्रगतिवादी काव्यों में संबोधनात्मकता, अभिधात्मकता एवं साहित्य की सामाजिक सोद्देश्यता के बावजूद उच्च कोटि का कवित्व भी नजर आता है।

(iii) गुप्तजी अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने ऐतिहासिक दायित्व का निर्वाह करते हुए सोयी हुई भारतीय जनता को जगा रहे हैं; इसमें सहायक थी- सीधी- सरल भाषा जिससे जरिये वे अपनी बातों को समाज के बड़े हिस्से तक पहुँचा सकें, तुकबंदी जिसके द्वारा अपनी रचनाओं को लोगों की जुबान पर चढ़ना आसान था।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

पौराणिक कथानकों व गृहस्थ जीवन का चित्रण और नैतिक मूल्यों व आदर्शों का समर्थन जिसके माध्यम से आम लोगों के हृदय में जगह बनायी जा सके और यह सब तब संभव होता साहित्यिक भाषा के अभिजात्य के निषेध से। इस पृष्ठभूमि में देशीपन की प्रतिष्ठा के जरिये। शायद इसी दिशा में संकेत करते हुए रमेशचन्द्र शाह ने कहा है :- "कहते हैं कवित्व भी ऊँचे आसन से उतर कर अ, उद्बोधनात्मक एवं उपदेशात्मक बनने को तैयार होता है जब समाज का अंतर्तत्व क्षीण हो जाता है।" इसकी पुष्टि इस बात से भी होती है कि ऐसे लोगों की अनिच्छा के बावजूद जनता ने गुप्तजी को चर्चित किया और राष्ट्रकवि की उपाधि से नवाजा।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ यदि ऐसा होता तो न तो अज्ञेय गुप्त जी की अपना काव्य गुरु मानते और न ही दिनकर उनके 'जयद्रथ वध' से प्रेरणा ग्रहण कर ~~प्रबंध~~ प्रबंध काव्यों की रचना करते।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

कुरुक्षेत्र – 1945

प्रश्न "कुरुक्षेत्र" में युधिष्ठिर प्रश्न हैं, तो भीष्म उत्तर; लेकिन दिनकर स्वयं अपने बारे में कहते हैं- "दिनकर केवल प्रश्न उठाता है।" आप इस विरोधाभास की व्याख्या किस प्रकार करेंगे?

भूमिका से →

जिस तरह निराला 'राम की शक्ति पूजा' के जरिये रामकथा को दोहराना नहीं चाहते उसी तरह दिनकर भी महाभारत के प्रश्नों की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते हैं।

↓

मुझे जो कुछ कहना था वह युधिष्ठिर और भीष्म का प्रसंग उठाये बिना भी कहा जा सकता था लेकिन तब यह रचना एक साहित्यिक प्रबंध काव्य की जगह प्रवचन मात्र बनकर ही रह जाती। कारण

↓

(i)- कुरुक्षेत्र के रूप में दिनकर एक प्रबंध लिखे जाने का उद्देश्य

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(ii) बिना युधिष्ठिर व भीष्म का प्रसंग उठाये वे अपनी चिंताओं को शायद इतने प्रभावी ढंग से पाठकों तक संप्रेषित नहीं कर पाते।

↓

इतिहास के प्रति दिनकर की उपयोगितावादी दृष्टि सामने आती है।

" जब भी अतीत में जाता हूँ, मुर्दों को नहीं जिलाता हूँ। पीछे हटकर खींचता बाण जिससे प्रक्षिप्त हो वर्तमान।"

→ तो भी यह सच है कि मेरी इसे प्रबंधात्मकता के रूप में लाने की कोई निश्चित योजना मेरे पास नहीं थी। (संकेत कुरुक्षेत्र की प्रबंधात्मकता की कमजोरियों का उभरना)

(i) → तद्युगीन अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य - द्वितीय विश्व युद्ध

↓

(i) मानव और मानवता की हार अपार धन हानि

और फिर शीतयुद्ध की शुरुआत हो जाना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(ii) तद्युगीन राष्ट्रीय परिदृश्य - 1942- भारत छोड़ो आंदोलन
(अपार जन-धन की हानि)

(iii) आधुनिक मानवतावादी चिंतन - जो हर स्थिति में युद्ध को निषिद्ध मानता है दूसरी ओर मार्क्सवाद है जो युद्ध के औचित्य में सही ठहराता है तो वहीं गांधीवाद है जो अहिंसा और शांति के आग्रह के साथ उपस्थित होता है जबकि मार्क्सवाद वर्गसंघर्ष व हिंसा को प्रेरित करता है।

→ अशोक के निर्वेद से प्रभावित प्रेरणा → कलिंग विजय के उपरांत हृदय परिवर्तन → युद्ध को हर स्थिति में त्याज्य

→ दिनकर के युद्ध चिंतन का स्वरूप स्थिर न होकर विकासशील है।

→ युधिष्ठिर के विजय के बाद महाभि महाविनाश की त्रासदी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

accept changes with references, don't ... without clarification

⇒ गांधीजी के अहिंसात्मक सत्याग्रह के मूल में है-
"आत्मबल"

→ गांधी व गांधीवाद से मोहभंग की ओर दिनकर

"कौन केवल आत्मबल से जीत सकता देह का संग्राम है।"

अहिंसात्मक स० के जरिये जिस क्रमिक प्रक्रिया का आह्वान करता है वह एक पराक्र और उबाऊ है जो तद्युगीन जनमानस को नये विकल्पों की तलाश को प्रेरित करती है → इन्हीं नये विकल्पों की पड़ताल कुरूक्षेत्र के रूप में दिनकर करते आते दिखते हैं।

↓

परंतु 1945 से 2 से 2.5 वर्ष के उपरांत ही यह सिद्ध हुआ हो गया कि दिनकर गलत थे, गांधी और गांधीवाद सत्य था - आत्मबल से देह का संग्राम जीता जा सकता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

अन्तर्विरोध

यह इनकी ही नहीं बल्कि युग का अंतर्विरोध है।

दिनकर की समस्या - न तो गांधीवाद को पूरी तरह छोड़ पाते हैं और न ही मार्क्सवाद को अपना पाते हैं।

"अच्छे लगते हैं मार्क्स किंतु प्रेम अधिक है गांधी से।
प्रिय है शीतल पवन किन्तु प्रेरणा लेता आंधी से॥"

- क्रांति समाधान
- मूलभूत परिवर्तन की बात
- खुलकर युग के अंतर्विरोध की अभिव्यक्ति

सीमाएँ -

भारतीय सांस्कृतिक चिंतन परंपरा (सहिष्णुता व समन्वय) से मेल नहीं, मार्क्स का बल है - द्वन्द्व और संघर्ष पर।

→ युधिष्ठिर कभी गांधी गांधीवाद, कभी गांधीवादी आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते नजर आते हैं

वे ऐसे हृदय का प्रतिनिधित्व करते हैं जो शंकाकुल है किंतु मस्तिष्क के स्तर पर चटकर बोल रहा है (गांधीवादी आदर्श)

ऐसे में समाधान की उम्मीद करना बेमानी है -

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

क्योंकि समाधान की खोज की ओर बुद्धि / मस्तिष्क ले जाता है, हृदय नहीं। इसीलिए कुरुक्षेत्र में समाधान का बिम्ब नहीं आएगा।

"कुरुक्षेत्र आधुनिक जमाने की गीता है।"

क्यों?
1. दोनों युद्ध चिंतन हैं
2. कुरुक्षेत्र में युद्ध चिंतन कृष्ण-अर्जुन संवाद के परिप्रेक्ष्य में जबकि दिनकर के कुरुक्षेत्र का संवाद भीष्म-युधिष्ठिर संवाद के रूप में सामने आया
3. दोनों जगह युद्ध की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया है।
4. मजब व मजबूरी का हवाला देकर ही युद्ध को सही ठहराया गया है।
(5). दोनों जगह ही कर्म की प्रधानता का संदेश विद्यमान है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

क्यों नहीं है?

1- एक के युद्ध चिंतन पर धर्म- अध्यात्म का आवरण चढ़ा है जबकि दूसरे का परिप्रेक्ष्य आधुनिक व लौकिक है

2- युद्ध के पूर्व का चित्र — युद्ध के पश्चात का चित्र

3- कर्म का संदेश युद्ध की ओर ले जाता है — कर्म का संदेश ग्लानि व पश्चाताप के बोध से युधिष्ठिर को मुक्त कर युद्धोपरान्त राहत एवं पुनर्वास की प्रेरणा देता है।

4- व्यवस्थित एवं सुसंगत है युद्ध चिंतन है क्योंकि वह प्रौढ़ मस्तिष्क की उपज है। — इसका युद्ध चिंतन अव्यवस्थित अस्पष्ट है क्योंकि यहाँ पर शोकाकुल हृदय मस्तिष्क के स्तर पर बोल रहा है, रचनाकार युद्ध संबंधी मूलभूत प्रश्नों का यथार्थ के धरातल पर उत्तर चाहता है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

निष्कर्षतः आधुनिक जमाने की गीता नहीं, ऐसा होने का कुरुक्षेत्र में केवल आभास है—

(i) गीता व युद्ध कुरुक्षेत्र की युद्ध विरत से स्तर पर जहाँ संदेश तो समान है किंतु उद्देश्य व परिणाम भिन्न हैं।

(ii) आधुनिक इसलिए नहीं क्योंकि आधुनिक मानवतावादी चिंतन युद्ध को किसी भी स्थिति में निंदनीय मानता है

↓

लेकिन जिन का यहाँ तक नहीं रहते वे इसका अतिक्रमण भी करते हैं—

शांति नहीं तब तक जब तक सुख भाग न नर का सम

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

कुछ विचारकाल नहीं है यह विचार प्रक्रिया का काल है। विचारकाल में सोच तार्किक परिणति तक पहुँचती जिसे किन्तु काल में सोच तार्किक परिणति तक नहीं पहुँच पाती — यही स्थिति कुरुक्षेत्र में है यदि कुरुक्षेत्र तार्किक परिणति तक पहुँच पाता तो इसका अंत गीता की तरह ही सुस्पष्ट व व्यवस्थित होता।

→ ऐसा इसलिए है क्योंकि

1. दिनकर समाधान की जगह संयुक्त होना आते हैं,
- उन्होंने किसी विचारधारा का आरोप नहीं किया
- दिनकर ने अपनी विचारप्रक्रिया / मन की द्विविधा को उसी रूप में अंकित किया जैसी वह थी और पाठकों को हूबहू उसी रूप में परिचित कराने का प्रयास की ठीक प्रकार है ताकि पाठक स्वयं समाधान की संभावनाओं की तलाश करे।

— कल्पना के सहारे अच्छे प्रश्नों को युधिष्ठिर से अपने

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

आलोचित करने की कोशिश की है और रचना के ही सहारे इस बात की कल्पना भी की है कि यदि इनको उलट भीष्म के रूप में देखा होता तो कैसे दिया जाता।

- युगीन चिंताओं की अभिव्यक्ति को महाकाव्यात्मकता (प्रबंधात्मकता) की बजाय अधिक महत्व देते हैं।

- छठा सर्ग - विज्ञान मनुष्य के लिए वरदान है या अभिशाप।
  ↓
  जो प्रबंधात्मकता से दूर होती नजर आती है - प्रसंग मूल कथा से कट जाता है परंतु सूक्ष्म विचारों के स्तर पर रखता है।

→ कुरुक्षेत्र स्वगतालाप शैली में —

रचनाकार का व्यक्तित्व/मन ही हृदय व मस्तिष्क के दो भागों के रूप में विभक्त हो गया है जो वाद-विवाद को सामने लाते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

राम की शक्ति पूजा

" है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार।
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यानमग्न केवल जलती मशाल।"

(निराला का प्रकृति अद्वैतवादी चिंतन)

"स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय
रह-रह उठता जग जीवन में रावण जय-भय"

[रावण जय-भय की पृष्ठभूमि में पराजय की गहरी आशंका]

" जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि अच्युत
देखते हुए निष्पलक याद आया वह
विदेह का प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन
कांपते हुए किसलय झरते हुए

स्मृति संचारी, करुण का श्रृंगार
में रूपान्तरण

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

बोले रघुमणि मित्रवर विजय न होगी संभव

यह नहीं रहा नर-वानर का राक्षस से

उतरी पा महाशक्ति रावण से आमंत्रण

अन्याय जिधर, है उधर शक्ति — कविता के केंद्रीय चिंता को प्रकट करती पंक्ति

बोले विश्वस्त कंठ से जाम्बवान, रघुवर!

विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण

हे पुरुष सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण

आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर

तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर

रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त,

तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त

शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन

छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन

दृढ़ आराधना व शक्ति की मौलिक कल्पना

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS® most trusted since 2003

"खिल गयी सभा उत्तम निश्चय यह भल्लनाथ।"

भाषा के प्रति सम्मान का भाव
+
निराला के राम की जनतांत्रिक चेतना

"माता दश भुजा विश्वज्योति मैं हूँ आश्रित
हो विद्ध शक्ति से है खल महिषासुर मर्दित
जन रंजन कमलतल धन्य सिंह गर्जित
यह यह मेरा प्रतीक माता समझा इंगित
मैं सिंह इसी भाव से करूँगा अभिनंदित

देखो बन्धुवर! सामने स्थित जो, यह भूधर,
गरजता चरण प्रान्त पर सिंह, वह नहीं सिंधु
दसादिक समस्त हैं हस्त और देखो ऊपर
अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि शेखर

प्रकृति अद्वैतवादी चिंतन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

" धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधन जिसके लिए किया सदा ही शोध,
जानकी हाय! उद्धार प्रिया का हो न सका । "

परजय की आशंका, निराशा व
हताशा का चरम स्तर ; आत्म धिक्कार बोध

" वह एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत गति हत चेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रबल
यह है उपाय कह उठे राम ज्यों मंद्रित -
कहती थी माता मुझे सदा राजीवनयन

→ मनुष्य की जीवटता + जिजीविषा की ध्वनि
↓
निराला के महाप्राणत्व का प्रतिबिंब

→ स्मृतिसंचारी भाव

नवजागरण चेतना की बौद्धिकता का प्रभाव

दृढ़ जटा मुकुट हो विपर्यस्त
फैला पृष्ठ पर बाहुओं पर वक्ष पर विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशांधकार
चमकती दूर ताराएँ ज्यों मुक्त

(i) लघु - विराट का द्वन्द्व बिम्बों के धरातल पर
(ii) अन्तर्जगत - बहिर्जगत के परिवेश का भी चित्रण

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
यह कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

यहाँ शक्ति की मौलिक कल्पना गांधी के अहिंसावादी सत्याग्रह की प्रतिकृति के रूप में व्यंजित हुई है।
↓
जो उस समय विकासशील अवस्था में थी।

हनुमान → हनुमान का स्वर्गगमन प्रसंग
↓ शक्ति की मौलिक कल्पना एवं दृढ़ आराधना की पृष्ठभूमि तैयार करता है

↓

क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के प्रतीक
जहाँ उत्साह तो है पर संयम का अभाव

भक्त, वीर, ज्ञानी
↓
पौराणिक मिथकों में हनुमान

निराला ने कविता में हनुमान के भक्त रूप और वीर रूप को तो उठाया है किंतु ज्ञानी रूप से उन्होंने परहेज किया है।

इसके पीछे उनका मतलब था कि ↓
↓
केवल भावना से सफलता संभव नहीं, बुद्धि एवं भावना का सामंजस्य ही सफलता मिलती है

↓ जो राम में देवी द्वारा फूल चुरा लेने के बाद अभिव्यक्त रूप में सामने आता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

तुलसी : "क्षिति (पृथ्वी) जल पावक गगन समीरा, पंचरचित यह अधम शरीरा ||"

- अग्नि, वायु जल
  - प्रकृति अद्वैतवाद
    - शक्ति का वितरण
      - आरंभ में
        - राम के पक्ष में
          - पृथ्वी → सीताजी
          - वायु → हनुमान
            - (पृथ्वी, वायु) → निष्क्रिय तत्व
              - • भूधर ज्यों ध्यान मग्न
              - • स्तब्ध है पवनचार
          - अग्नि → हनुमान : एकादश रुद्र के रूप में अग्नि के प्रतिनिधि
        - रावण के पक्ष में
          - जल, आकाश } सक्रिय
          - जल → गरजता अंबुधि विशाल
          - आकाश → उगलता गगन घन अंधकार
      - हनुमान - ऊर्ध्वगमन प्रसंग
      - शक्ति की मौलिक कल्पना

> यद्यपि शक्तियों का भाग राम की ओर अधिक है किंतु रावण के पक्ष के तत्वों की सक्रियता अधिक है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(ii) हनुमान का प्रसंग

(iii) शक्ति की मौलिक कल्पना

निराला नियति को चुनौती / पराजित करने का हौसला लेकर आते हैं।

↓

किंतु सरोजस्मृति में वे इस निष्कर्ष बिंदु पर पहुँचते हैं → दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

परिकल्पना के रूप

- आकाश तत्व → महाशक्ति के मस्तक के रूप में
- जल तत्व → चरणतल / सिंह के रूप में
- पृथ्वी → महाशक्ति के शरीर से

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत का प्रभाव

↓

शक्ति सापेक्षता पर आधारित होती है

रावण की साधना से शक्ति का रावण के पक्ष में चले जाना

↓

राम की मौलिक कल्पना करने की प्रेरणा

क्योंकि शक्ति का रावण के पक्ष में जाना

↓

राम की सेना के मनोबल को तोड़ रहा था।

→ राम द्वारा दृढ़ आराधना एवं शक्ति की मौलिक कल्पना किये जाने से शक्ति राम के पक्ष में आ जाती है।

↓

वामसाधना के बल पर राम अपने भीतर की शक्ति तलाश रहे हैं।

वामपंथ एवं दक्षिणपंथ के समन्वयन का भाव

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न "महाकाव्य एक मध्ययुगीन संकल्पना है लेकिन संभव है कि उसके जरिये आधुनिक संवेदनाओं को भी अभिव्यक्ति मिले।" राम की शक्तिपूजा के विशेष संदर्भ में इस कथन पर विचार करें।

महाकाव्यात्मकता
↓
जीवन की संश्लिष्ट संवेदनाओं को व्यापक रूप में अभिव्यक्ति देने में सक्षम अवधारणा जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक व लोक संस्कृति के लगभग सभी पक्षों का समावेश होता है

→ पौराणिक कथाओं/चरित्रांकन द्वारा मानवता को एक दिशा देने के माध्यम के रूप में
↓
मध्यकाल में इसका सर्वाधिक प्रयोग हुआ
↓
रामचरितमानस आदि।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य
↓
यथार्थवादी चिंतन, स्वच्छंदतावाद, प्रगतिशील चेतना एवं वैश्विक विस्तार के परिदृश्यों के बीच ~~कविताओं~~ काव्य के रूपों में परिवर्तन एवं सहज रूपों में अभिव्यक्ति का चलन
↓
क्षणवाद, जीवन के बिखराव, कम समय व मुक्तक पाठ की लोकप्रियता के चलते

आधुनिक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति महाकाव्य द्वारा कैसे
↓

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

कथन

- महाकाव्य
- आधुनिक संवेदना

इन दोनों के विरोधाभास का संकेत

आधुनिक संवेदना →

- संवेदना के केंद्र में है – व्यक्ति
  - यथार्थपरकता का आग्रह
  - ~~आधुनिक~~
- अंतर्मुखीनता की प्रवृत्ति
  ↓
  कथानक के दायरे को सीमित करती है।
- – कोई महत् संदेश नहीं बल्कि समस्याओं एवं विसंगतियों का चित्रण

महाकाव्य →

→ महाकाव्ययुगीन सामंती जीवन का प्रतिनिधित्व करता हुआ आता है.

→ आदर्श जीवन की ओर रुझान

→ मानदण्ड (i) विशाल चित्रफलक (रचना में बहिर्मुखता की प्रवृत्ति)

(ii) उदात्त + युग निरपेक्ष नायक

(iii) समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि चरित्रों का अंकन

(iv) महत् संदेश

(v) मंगलकारी उपदेश

(vi) देशकाल – वातावरण
↳ समकालीन यथार्थ का चित्रण

(vii) उत्कृष्ट भाषा एवं शिल्प

(viii) असम्बद्धता (जैसे – गोदान के संदर्भ में)

⟹ परन्तु इन दोनों में संतुलन साधने की कोशिश भी की गयी – राम की शक्ति पूजा, कामायनी
↓
आधुनिक प्रयोगशील महाकाव्यात्मकता

- प्रतीकात्मकता
- आत्मपरकता
- अन्तर्मुखीकरण
- रूपकत्व

महाकाव्यात्मकता के विरोधी तत्व

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

राम की शक्तिपूजा के संदर्भ में

- न तो आकार और न ही समाज के सभी प्रतिनिधि चरित्रों को अंकन की दृष्टि से यह महाकाव्य है,
- चित्रित फलक, पात्रों की संख्या सीमित है
- काव्य नायक युगनिरपेक्ष तो है परन्तु कहीं न कहीं धीरोदात्तता को तोड़ते हैं क्योंकि अधिकांश कविता में निराशा, हताशा एवं पराजय बोध व धिक्कार बोध से भरे हुए आते हैं।

↓

फिर भी महाकाव्यात्मक प्रभाव विद्यमान है - कारण

(i) पौराणिक आख्यानों से इसके कथानक को उठाया जाना

(ii) भारतीय सांस्कृतिक चिंतन परंपरा में धीरोदात्त नायक के रूप में राम की व्यापक स्वीकृति और कहीं न कहीं निराला ~~एक~~ राम को एक सामान्य चरित्र के रूप में व्यक्त करते हुए भी उनके चरित्र की अलौकिक व्यक्तित्व को संरक्षित करते दिखाई देते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

(iii) मूलतः यह एक अंतर्मुखी रचना है परन्तु इसकी प्रतीकात्मकता एवं द्वन्द्वात्मक ढाँचा इसके फलक को व्यापकता प्रदान करती है

↓

इस पृष्ठभूमि में इसके चित्रफलक का विस्तार व्यष्टि से समष्टि तक
परंपरा से आधुनिकता तक
पौराणिकता से नवीनता तक होता चला जाता है।

(iv) सत - असत का (रामत्व - रावणत्व का) चिरंतन संघर्ष जिसमें मानवीय मूल्यों के प्रति राम की प्रतिबद्धता 'शक्ति पूजा' को महाकाव्यात्मक औदात्य और महाकाव्यात्मक गांभीर्य से युक्त बनाती है।

↓

इसी पृष्ठभूमि में महत् संघर्ष की आधार प्रखर करता हुआ आता है और महत् संदेश की भी व्यंजना होती है।

(v) इसकी पृष्ठभूमि में रसाधिक रसों की योजना भी

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

इसकी महाकाव्यात्मकता को पुष्ट करती है -
वीर, श्रृंगार, करुण, भक्ति, भयानक आदि।

(vii) निराला की सफलता इस बात में है कि सीमित पात्रों में वे असीमित संभावनाएँ उत्पन्न करते हैं (प्रतीकों एवं बिम्बों के धरातल पर द्वन्द्वात्मकता का निर्वाह करते हुए)।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न "वर्तमान संदर्भ में राम की शक्तिपूजा जैसी रचनाओं की कोई प्रासंगिकता नहीं है। यदि इनकी प्रासंगिकता होती, तो शायद निराला को 'कुकुरमुत्ता' लिखने की जरूरत नहीं पड़ती।" इस कथन पर विचार करें।

अप्रासंगिकता

(i) कल्पना के धरातल पर आदर्शपरक समाधान देती
↓
(यद्यपि कई जगह यथार्थ की बात है किंतु अंत तक आते-आते आदर्शपरकता ...)
↓
(जमीनी यथार्थ से दूर)

(ii) रहस्यात्मकता की प्रवृत्ति आधुनिक यथार्थ को आहत करती है।

(iii) यथार्थ के धरातल पर कमजोर होने के बावजूद एक प्रकार का आभिजात्य मौजूद है

कहाँ तक उचित

(a) - पौराणिक आख्यानों के औदात्य से युक्त होता है।

(b) भावाभी औदात्य - तत्समता का प्रबल आग्रह

(iii) दार्शनिकता का दबाव
↓ प्रकृति अद्वैतवादी चिंतन, नव वेदांतवादी चिंतन

(iv) कहीं न कहीं कुकुरमुत्ता कविता लिखकर निराला स्वयं शक्तिपूजा के काल्पनिक समाधानों, इसके औदात्य व आभिजात्य को खारिज करते हैं और यह इस कविता की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लगाती है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

औचित्य कहाँ तक ? ?

लेकिन यदि गहराई से विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शक्तिपूजा जैसी रचनाएँ कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती है :-

(i) इसमें राष्ट्रीय-सां० अस्मिता के साथ-साथ दार्शनिक अस्मिता भी जुड़ गयी है

(ii) कविता की पौराणिकता केंचुल की तरह है जो कविता में कई बार उतरता हुआ दिखायी पड़ता है तभी तो राम आधुनिक मध्यवर्ग के उस व्यक्ति की संभावनाओं से युक्त होकर आते हैं जो असमर्थ हो चुकी परिस्थितियों के बीच अपने तमाम मूल्यों और कल्याणकारी की जिद्दोजहद में लगा हुआ है।

(iii) इस पृष्ठभूमि में 'शक्ति पूजा' के राम में जिस आधुनिक संवेदना को अभिव्यक्ति मिली है वही नवलेखन के दौर में आधुनिक भाव बोध में परिणित होती है जो आज के व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा सत्य है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

(iv) शक्तिपूजा आधुनिक मनुष्य की टूटन और पुनर्सृजन की दास्तान है जिसके मूल में उपस्थिति है - मनुष्य की जीवटता एवं जिजीविषा जो अक्सर उसे निराशा व हताशा के आवरण को भेदकर उस दूसरे मन 'श्री' को जगाने को प्रेरित करती जो 'न दैन्यम् च न पलायनं' के आदर्शों से अनुप्राणित है। इस परिप्रेक्ष्य में हमारी प्रेरणास्रोत के रूप में तब्दील हो जाती है।

(v) इस कविता में निराला ने अपने राम को निरंकुश जनतांत्रिक चेतना से युक्त किया है और इसके अनुसार जाति धारणा के प्रतीक जाम्बवान के प्रति जो सम्मान व्यक्त किया है वह हमारे लिए एक संदेश है और इसीलिए उसकी आज भी प्रासंगिकता है।

सीमित संदर्भों में ही सही, यह कविता पत्नी-प्रेम एवं नारीशक्ति के प्रति संदेश के साथ उपस्थित होती है, हृदय और बुद्धि के बीच सामंजस्य पर बल देती है, असत् पर सत्य की विजय के ...

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

के खिलाफ सत्य व न्याय के पक्ष में खड़ा होने का संदेश देती है वह आज भी प्रासंगिक है।

(vi) जहाँ तक कुकुरमुत्ता को राम की शक्तिपूजा के परिप्रेक्ष्य में देखे जाने का प्रश्न है तो यहाँ निराला एक भिन्न धरातल पर भिन्न प्रश्नों के साथ उपस्थित हैं जिसे शक्ति पूजा की प्रासंगिकता या अप्रासंगिकता से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 1 'कुकुरमुत्ता' में कमजोर व्यंग्य और बचकाना विद्रोह। व्यंग्य की कमजोरी यह है कि जिन मान्यताओं को निराला ने हास्यास्पद बनाया है, उनका मूल्यांकन सही नहीं किया है।' कथन की समीक्षा करते हुए एक व्यंग्य काव्य के रूप में 'कुकुरमुत्ता' के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 2 'कुकुरमुत्ता हर क्षेत्र में काव्य-अभिजात्य से मुक्ति का संदेश देने वाला पहला काव्य है। यही इस कविता की उपलब्धि भी है और इस कविता में निराला का अभिप्रेत भी है।' विचार कीजिए।

प्रश्न 3 'कुकुरमुत्ता' कविता के जरिए निराला ने युगीन वैचारिक द्वन्द्व की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक अभिजातबोध की अभिव्यक्ति की है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न 4 'कुकुरमुत्ता' कविता के जरिये निराला की मार्क्सवादी चेतना को अभिव्यक्ति मिली है और उन्होंने इस कविता के जरिये उस दौर में मार्क्सवाद की प्रतिष्ठा की है जब साहित्य के धरातल पर उसे नकारने की कोशिश हो रही थी।' समीक्षा करें।

प्रश्न 5 'कुकुरमुत्ता' निराला की विकसित विकसनशील काव्यदृष्टि का प्रमाण है।' कथन पर प्रकाश डालें।

निराला की विकसनशील काव्यदृष्टि

- निराला की साहित्यिक प्रतिबद्धता
  - ↓ सामाजिक प्रतिबद्धता
  - ↓ इसकी पृष्ठभूमि में उनकी विद्रोही चेतना का आकार ग्रहण करना
    - छायावाद के दौर में छायावाद का अतिक्रमण
    - प्रगतिवाद के दौर में प्रगतिवाद का अतिक्रमण
- आरंभ में निराला में उदात्तता के प्रति आग्रह, अभिजात्य की ओर रुझान
  - ↓ छायावादी में – RKSP, 'तुलसीदास'
    - संवेदना
    - शिल्प
    - भाषा

कुकुरमुत्ता — यह विश्वास नहीं होता कि यह कविता RKSP के रचनाकार की ही रचना है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

- छायावाद के उत्तरार्द्ध में
  - ↓ इससे (संवेदना, भाषा, शिल्प में आभिजात्यता व उदात्तता से) दूर हटने के संकेत मिलते हैं
  - ↓ यद्यपि इसके विपरीत रुझान भी दृढ़ता से मिलते हैं
  - ↓ सरोज स्मृति, भिक्षुक, बादलराग

- इस क्रम में
  - ↓ कुकुरमुत्ता एक महत्वपूर्ण पड़ाव बन जाता है
  - ↓ संवेदना, शिल्प, भाषा
  - ↓ के स्तर धरातल पर
  - ① शक्तिपूजा में असाधारण को साधारण के रूप में लाना जबकि
    ↓ कुकुरमुत्ता में साधारण को असाधारण के रूप में लेकर आना

- राम की शक्तिपूजा का रुझान आदर्श की ओर जबकि कु० का रुझान यथार्थ की ओर है।

- ② सौंदर्य चेतना के संदर्भ में RKSP उदात्तता के प्रति आग्रह जबकि कु० में अनौदात्य की प्रतिष्ठा है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

(RKSP) - सांस्कृतिक अस्मिता बोध मुख्य रूप में है — जबकि (KM) → गौण

वह रचनात्मक संवेदना में घुलमिल गया है।

क्रोध का ~~व्यं~~ ————→ व्यंग्य में रूपांतरण

शिल्प के धरातल पर

→ दोनों लम्बी कविताएँ है पर कु० में RKSP की तरह महाकाव्यात्मकता का औदात्य XX

- क्लिसागोई, रिपोर्ताज जैसी शैलियों का प्रभाव

→ द्वन्द्व से ————→ समाहार तक की यात्रा

- इसकी द्वन्द्वात्मकता संवाद-योजना में आकार ग्रहण करती है।

भाषायी धरातल पर

→ तत्समता संस्कृतनिष्ठता से ————→ तद्भवता व देशजता की ओर।

निराला की काव्य-भाषा के सन्तवादी काल का प्रमाण है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ कुल मिलाकर देखा जाए तो 'कु०' में हमारा साक्षात्कार निराला की प्रयोगधर्मी चेतना से होता है।

मार्क्सवाद जीवन को एक ही नजरिये से देखता है जबकि जीवन को विविध रूपों एवं समग्रता में देखने की जरूरत है।
↓
निराला ने प्रगतिवादी चेतना का यहीं अतिक्रमण किया है। वे जितना सामाजिक प्रतिबद्धता रखते हैं उतनी ही साहित्यिक प्रतिबद्धता भी।
↓
निराला का विद्रोही व्यक्तित्व उन्हें किसी दायरे में नहीं बंधने देता

→ प्रयोगवादी कविता की पृष्ठभूमि को कु० में देखा जा सकता है लेकिन वे इसका भी अतिक्रमण कर ही देते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 4 का उत्तर [कुकुरमुत्ता के जरिये निराला की मार्क्सवादी चेतना को अभिव्यक्ति मिली है।] ....।

कुकुरमुत्ता में निराला की मार्क्स० चेतना की अभि०

↓

ऐसा कहने के आधार

↓

- प्रगतिवादी दौर में लिखा जाना
- गुलाब के बारे में कु० का कथन. (अबे, सुन बे गुलाब...) खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट ...
- 'कु०' के संवादों से संकेत
  - उसके सर्वहारा का प्रतिनिधि होना
- कविता का कथ्य, मूलसंवेदना, साधारण को नायकत्व और रचनी भाषा

उस दौर में मार्क्स० की प्रतिष्ठा जिस दौर में उसे नकारने की कोशिश की गई

↓ क्यों?

- मा० की बड़बोलापन
- शिल्प और भाषा की अपेक्षा
- संकीर्ण दृष्टि
- रूप और सौंदर्य की उपेक्षा

निराला कैसे प्रतिष्ठा करते हैं?

↓

- अपने व्यापक दृष्टिकोण के जरिये
  ↓
  → शिल्प और भाषा को महत्व देना
  → मार्क्सवादी बड़बोलेपन का विरोध

←

[लेकिन यह कविता का एक पक्ष है, ऐसा लगता अवश्य है, ऐसा है नहीं।]

↓

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

ऐसा लगता क्यों?

1. कविता के पहले भाग को अतिशय महत्त्व देने के कारण

2. कविता की अधूरी समझ के कारण
   ↓
   दूसरा कारण है।
   ↓

कविता को प्रतीकात्मक धरातल पर न समझना → जिसका कविता की मूल संवेदना से मेल नहीं
- गुलाब को पूँजीपति का प्रतिनिधि मान लेना
- 'कुकुरमुत्ता' को सर्वहारा का प्रतीक मान लेना

↓

ऐसी 5 बातें हैं जो इसमें बाधक बनकर आती हैं
- 'कु०' की अत्युक्ति
  ↓
  कलियाँ कबाब के रूप में
- कु० उगाये नहीं उगता का मतलब
  ↓
  वर्ग-समन्वय का संदेश
  ↓
  बहार-गोली की मित्रता
- 'कु०' का बड़बोलापन उसे उपहासात्मक स्थिति में पहुँचा देता है
- प्रगतिवाद पर व्यंग्य
  ↓
  "कलम लेते ही जैसे रोते नहीं रुकता प्रोफेसर साहब का जोश"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

यदि ऐसा नहीं है तो क्या ?

- दरअसल 'कु०' प्रतीक है
  - भौतिक जड़वाद का
  - क्रांतिवादी वड़बोलेपन का
  - मार्क्सवाद का
- गुलाब प्रतीक नहीं है → पूँजीवाद का → वह प्रतीक है
  - भावनावाद का
  - सांस्कृतिक चेतना का व संस्कृति का
- निराला कु०-गुलाब के बीच सामंजस्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं
  → इस द्वन्द्व की पृष्ठभूमि में
  → 'उगाये नहीं उगता' से आशय
  → न तो कु० गुलाब का स्थान ले सकता है और न गुलाब कु० का।

कु० की सार्थकता
↓
कलियां कबाब बनने में
↓
ताकि पेट की भूख शांत हो

इस परिप्रेक्ष्य में निराला इस कविता के जरिये

- कु-गु० के द्वन्द्व के जरिये
  ↓
  भौतिक जड़वाद, मार्क्सवाद के अधूरेपन की ओर संकेत
  - जो रोटी की समस्या को ही प्राथमिक और एकमात्र समस्या मानता है
  - और रोटी की ही समस्या को हल कर पाने में समर्थ है।
- सामंजस्य के जरिये

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ विवेकशील प्राणी के रूप में मनुष्य की समझना यहीं तक सीमित नहीं, यह प्रश्न गौण है
↓
महत्वपूर्ण है

- विचारशुद्धि का प्रश्न
- आत्मिक परिष्कार

सामंजस्य के जरिये
↓
नववेदांतवाद की प्रक्रिया
↓
जो मार्क्सवाद की तुलना में (समग्र दर्शन)
↓
क्योंकि इसका जोर (रोटी) के साथ (विचारशुद्धि) के प्रश्नों पर

रोटी → का संबंध जुड़ता है
- हमारी भौतिक जरूरतों से,
- पेट की भूख से

विचारशुद्धि → का प्रश्न जुड़ता है
↓
• अभौतिक जरूरतों से, आत्मिक जरूरतों से
↓
जो हमें संतुष्टि देते हैं।

अत: 'कु०-गु०' का द्वन्द्व प्रकारांतर से मार्क्सवाद बनाम नववेदांतवाद का है जो कविता (उनकी) पृष्ठभूमि में है अंत में नव वेदांतवाद की प्रतिष्ठा होती है।

ध्येयIAS most trusted since 2003

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Test Discussion — व्याख्या

मगर कोठरी में बैठने .... थमने ही न आते थे।

- भीष्म साहनी प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवाद की परंपरा से संबंध जोड़ते हुए आते हैं।
  - ↓ 'चीफ की दावत' 'बूढ़ी काकी' की चेतना का विस्तार
- माँ का अंतर्द्वन्द्व भावना के धरातल पर फूट पड़ते हैं
- शुद्ध स्वभाव/मनोविज्ञान के अनुरूप
- अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्य
  - ↓ अनुभूतिप्रवणता को लेकर चलती भाषा
  - ↓ बिम्बात्मक स्वरूप में।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 'दिव्या इतिहास नहीं' ऐतिहासिक कल्पना मात्र है। इतिहास की पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति एवं गति का चित्र है' कथन का औचित्य निर्धारित करते हुए यशपाल की इतिहास-दृष्टि को उद्घाटित कीजिए।

यशपाल साहित्यकार हैं, इतिहासकार नहीं।

इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना मात्र → इतिहास यहाँ पृष्ठभूमि में है महज आवरण स्वरूप में

↓

महत्वपूर्ण यह है

↓

व्यक्ति एवं समाज की प्रवृत्ति एवं गति का चित्र उपस्थित करना — और यशपाल इसी पृष्ठभूमि में

- सामंती समाज
- दास व्यवस्था
- बौद्ध धर्म
- वेश्यावृत्ति
- उग्र नारीवाद

पर विचार करते हुए आते हैं।

— नारी के संदर्भ में स्वतंत्रता बनाम सार्थकता के द्वन्द्व का चित्रण करते हैं

↓

जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारी-समस्या पर विस्तृत विचार की ओर ले जाता है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

↓
इस चित्रण में सहायक है-इतिहास
↓
अतः इतिहास साध्य नहीं साधन है।
↓
और इसीलिए इतिहास के प्रति यशपाल की दृष्टि उपयोगितामूलक है।

↓
'दिव्या' में इतिहास का आभास है, इतिहास नहीं
↓
न कथानक, न चरित्र इतिहास से उठाये गये और न ही मुख्य औपन्यासिक घटनाएँ ही इतिहास से उठायी गयी।
↓
मात्र कुछ ऐतिहासिक चरित्रों व घटनाओं के सांकेतिक उल्लेख और ऐतिहासिक शब्दावली एवं तत्समगर्भित भाषा इसके इतिहास पक्ष को संकेत देता है।

↓
व्यक्ति व समाज की प्रकृति एवं गति व चित्र के संदर्भ में
↓
जो दृष्टि उभरकर सामने आती है
↓
वह संकेत करती है
↓ कि
यशपाल इतिहास की मानवकेंद्रित व्याख्या करते हैं। इतिहास यशपाल के लिए विश्वास की नहीं, विश्लेषण की वस्तु है।
↓
इतिहास की नियतिवादी अवधारणा का वे खण्डन करते हुए आते हैं →

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ और इस क्रम में वे इतिहास की वस्तुनिष्ठता के प्रति अपनी आग्रहशीलता को प्रकट करते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

प्रश्न 'गोदान' उपन्यास तद्‌युगीन वैचारिक द्वन्द्व को अभिव्यक्त करता हुआ प्रेमचंद को यथार्थवाद के धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है। इस कथन पर विचार करते हुए बतलाइए कि क्या आप भी इसे मोहभंग की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं।"

↓ तद्‌युगीन वैचारिक द्वन्द्व
↓ राष्ट्रीय आंदोलन का द्वन्द्व
↓ • गांधीवाद बनाम मार्क्सवाद
↓ इसकी पृष्ठभूमि में यह द्वन्द्व सामने आता है

- सत्ता परिवर्तन बनाम व्यवस्था परिवर्तन के रूप में
- [जिसमें प्रेमचंद 'गोदान' में व्यवस्था परिवर्तन के पक्ष में खड़े हैं।]

↓ अब प्रश्न यह उठता है कि क्या 'गोदान' गांधीवाद से मोहभंग का परिणाम है? यदि हाँ तो किस रूप में ↓

आदर्शवाद या आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से मोहभंग हुआ।

- उपन्यास का दुखद / त्रासद अंत — सभी काल्पनिक व आदर्शवादी समाधान से परहेज
- नायक की मौत
- नायकत्व के धरातल पर — पहली बार प्रेमचंद ने Black or white की जगह Black and white

→ धीरोदात्त नायक की परंपरा के अभाव का संकेत।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

↓ वर्गसंघर्ष के चित्रों की मौजूदगी

मातादीन – सिलिया प्रसंग

मजदूरों द्वारा मिल को जलाया जाना

→ समाजवादी यथार्थवाद के चौखटे पर पहुँचना

↓ इस दुनिया में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके एक मोटा होता है। भलाई तो तब है जब सब मोटे हैं।

⟹ लेकिन यह मोहभंग की शुरुआत है, पूर्ण मोहभंग नहीं।

↓

आधार

↓

- हृदय परिवर्तन वाली आस्था मौजूद है (यह बात अलग है कि इस हृदयपक्ष के लिए प्रेमचंद ने अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित की हैं जिससे यह असहज और अस्वाभाविक नहीं लगता।)

- संयुक्त पारिवारिक चेतना की पुनर्बहाली

- रामसेवक के नेतृत्व में कृषक प्रतिरोध की प्रकृति

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

- मध्ययुगीन नारी आदर्शों की प्रतिष्ठा
  ↓
  नारीत्व बनाम मातृत्व में मातृत्व की प्रतिष्ठा

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

(रामविलास शर्मा)

प्रश्न 'कुकुरमुत्ता' में कमजोर व्यंग्य और बचकाना विद्रोह-प्रदर्शन है। व्यंग्य की कमजोरी यह है कि जिन मान्यताओं को निराला ने हास्यास्पद बनाया है, उसका मूल्यांकन सही नहीं किया है। कथन की समीक्षा करते हुए व्यंग्य काव्य के रूप में इस कविता के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन करें।

काल्पनिक समाधानों से मोहभंग
↓
'शक्तिपूजा' के क्रोध को व्यंग्य में रूपांतरित कर देता है
↓
यह बात अलग है कि रामविलास शर्मा को यह व्यंग्य

~~वक्तृत्व कला~~

- वक्तृत्व कला का नमूना
- बचकाना विद्रोह-प्रदर्शन
- कमजोर व्यंग्य

प्रतीत होता है, और

यह निष्कर्ष 'वनबेला' के व्यंग्य के सापेक्ष रखकर पेश किया गया है।

कविता की शुरुआत होती है— गुलाब के परिचय से
↓
इसी क्रम में उसके अभिजात्यता का संकेत देने के लिए
→ नवाब के बाग का विस्तृत परिचय, फिर, कुकुरमुत्ता व गुलाब के द्वन्द्व का संकेत
↓
गुलाब की परजीवी प्रकृति इसके विश्वासघाती तेवर और इसे पूंजीवाद का प्रतीक बतलाते हुए इसपर प्रहार किया →

यह कहना कि जिन मान्यताओं को निराला ने हास्यास्पद बताया है, उसका मूल्यांकन सही नहीं किया है, कहीं न कहीं कुकुरमुत्ता की मूल संवेदना और इसकी रचना-दृष्टि को न समझने का प्रसंग है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"मुझसे मुझे मुझसे मल्ला
मेरे लल्लू मेरे लल्ला।"

दरअसल 'कु०' के साथ समस्या यह है कि आलोचकों ने मध्यमार्ग के लिए स्वीकारोक्ति नहीं छोड़ी। या तो उन्हें कु० का व्यंग्य वाहियात लगता है और इससे भी एकदम बढ़कर यह कविता ही वाहियात लगती है, या फिर इसमें उन्हें उच्च कोटि की रचनात्मकता व उच्च कोटि का व्यंग्य दिखायी पड़ता है। अगर निराला प्रगतिवादी बड़बोलेपन के बहाने मार्क्सवाद की सीमाओं को उद्घाटित करते हुए कु० एवं 'गुलाब' के सामंजस्य के जरिये नव वेदोरवाद की प्रतिष्ठा में सफल रहे थे निश्चय ही इस कविता के व्यंग्य को सफल माना जाना चाहिए परन्तु समस्या यहीं पर भी मौजूद है और इस कविता का समग्र को मूल्यांकन न हो पाना।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

रामविलास शर्मा

प्रश्न 'कुकुरमुत्ता' में कमजोर व्यंग्य और बचकाना विद्रोह-प्रदर्शन है। व्यंग्य की कमजोरी यह है कि जिन मान्यताओं को निराला ने हास्यास्पद बनाया है, उसका मूल्यांकन सही नहीं किया है। कथन की समीक्षा करते हुए व्यंग्य काव्य के रूप में इस कविता के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन करें।

काल्पनिक समाधानों से मोहभंग
↓
'शक्तिपूजा' के क्रोध को व्यंग्य में रूपांतरित कर देता है
↓
यह बात अलग है कि रामविलास शर्मा को यह व्यंग्य

वक्तृत्व कला का नमूना | बचकाना विद्रोह-प्रदर्शन | कमजोर व्यंग्य

प्रतीत होता है, और

यह निष्कर्ष 'नवेला' के व्यंग्य के सापेक्ष रखकर पेश किया गया है।

कविता की शुरुआत होती है– गुलाब के परिचय से
↓
इसीक्रम में उसके अभिजात्य का संकेत देने के लिए

→ नवाब के बाग का विस्तृत परिचय, फिर, कुकुरमुत्ता व गुलाब के द्वन्द्व का संकेत
↓
गुलाब की परजीवी प्रकृति इसके विश्वासघाती तेवर और इसे पूँजीवाद का प्रतीक बतलाते हुए इसपर प्रहार किया →

यह कहना कि जिन मान्यताओं को निराला ने हास्यास्पद बनाया है, उसका मूल्यांकन सही नहीं किया है, कहीं न कहीं कुकुरमुत्ता की मूलसंवेदना और उसकी रचना-दृष्टि को न समझने का प्रसंग है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

एवं इस क्रम में कुकुरमुत्ते की उद्धतता जो उसके हीनताबोध से ग्रस्त होने का संकेत देता है।

कविता में व्यक्त यही हीनताबोध आत्मश्लाघा का रूप धारण कर लेता है और कुकुरमुत्ता गुलाब को कमतर व खुद को उससे बेहतर एवं श्रेष्ठ साबित करता है,

यह बोध कविता के अगले चरण में 'अहं ब्रह्मस्मि' वाली मानसिकता की ओर ले जाता है, और धीरे-धीरे कुकुरमुत्ता का बड़बोलापन उसे उपहासास्पद स्थिति में पहुँचाता है और गुलाब की चुप्पी पलटवार का रूप धारण करती हुई है रस कविता के व्यंग्य को दोधारी तलवार में निरूपित कर देती है जिसकी जद में खुद को भी आने से नहीं रोक पाता है।

⟹ यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें उ० के व्यंग्य का दायरा विस्तृत होता है फिर इसकी जद में पश्चिमी कला को आधुनिकीकरण का पर्याय मानने वाले लोग, प्रयोगवादी कवि और यहाँ तक

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

कि स्वयं प्रगतिवादी कवि भी आते चले गये।

- कहीं का रोड़ा कहीं का पत्थर
टी.एस. इलियट ने जैसे दे मारा
पढ़ने वालों ने भी जिगर पर रख कर हाथ
कहा लिख दिया जहाँ सारा।
ज्यादा देखने को आँख दबाकर
शाम को जैसे किसी ने जैसे देखा तारा
जैसे प्रोग्रेसिव का कलम लेते ही,
रोके नहीं रुकता जोश का पारा।"

यहाँ तक कि निराला आधुनिक कविता के पाठकों को भी नहीं बख्शते।

⇒ निराला इस कविता में कई बार शब्दों से खेलते हुए दिखायी देते हैं और ऐसा करना व्यंग्य के सृजन में सहायक बनकर आया है –

मैं ही डाँड़ी से लगा पल्ला
सारी दुनिया तोलती गल्ला।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

"मुझसे मुझे मुझसे कल्ला
मेरे लल्लू मेरे लल्ला।"

दरअसल 'कु०' के साथ समस्या यह है कि आलोचकों ने मध्यमार्ग के लिए स्वीकारोक्ति नहीं छोड़ी। या तो उन्हें कु० का व्यंग्य वाहियात लगता है और इससे भी एकदम बढ़कर यह कविता ही वाहियात लगती है; या फिर इसमें उन्हें उच्च कोटि की रचनात्मकता व उच्च कोटि का व्यंग्य दिखायी पड़ता है। अगर निराला प्रगतिवादी अकेलेपन के बहाने मार्क्सवाद की सीमाओं को उद्घाटित करते हुए कु० एवं 'गुलाब' के सामंजस्य के जरिये नव वेदांतवाद की प्रतिष्ठा में सफल रहे थे निश्चय ही इस कविता के व्यंग्य को सफल माना जाना चाहिए परन्तु समस्या यहाँ पर भी मौजूद है और इस कविता का समग्र मूल्यांकन न हो पाता।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न 'कु०' इस क्षेत्र में काव्य-आभिजात्य से मुक्ति का संदेश देने वाला पहला काव्य है। यही इस कविता की उपलब्धता है और इस कविता में निराला का अभिप्रेत भी है।" विचार कीजिए।

(दूधनाथ सिंह का कथन)

संवेदना

→ औदात्य के प्रति आग्रह का अभाव (गुलाब की उपेक्षा)

→ प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी सौंदर्यशास्त्र दोनों के अनुरूप
↓
अप्रयोगितावादी सौंदर्य
अनुदात्त लघु, तिरस्कृत में सौंदर्य की तलाश।

→ कु० का कु० पर प्रहार भी अभिजात्य के निषेध का संकेत
(गुलाब की आक्रामिता, परजीवी और विश्वासघाती प्रवृत्ति के कारण)

शिल्प

परंतु कविता यहीं तक सीमित नहीं
↓
निराला अभिजात्य का निषेध नहीं करते बल्कि उसे सामान्योन्मुखी बनाने की कोशिश करते हैं।
↓
इस क्रम में वे अभिजात एवं सामान्य के बीच सामंजस्य की तलाश करते हैं।

भाषा व आधार

इसी क्रम में "कु०" के जरिये सामान्य वर्ग की कुंठा को भी अभिव्यक्ति मिली है जिसे अभिजात्य की लालसा है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

कु० और गुलाब के द्वन्द्व
पोस्टर:
के जरिये, जिस नव वेदांत वादी रुचि की प्रतिष्ठा की गयी है वह इसे औदात्य की संभावनाओं से युक्त बनाता है।

→ भले ही यह मिथकीय आख्यान (शक्तिपूजा व तुलसीदास की तरह) नहीं है
↓

→ निराला ने गुलाब को खारिज नहीं किया उन्होंने स्पष्टतः कविता में रखा है कि गुलाब का जवाब कुकुरमुत्ता नहीं बन सकता है)

अच्छा ↓

→ तत्समता से परहेज (शक्तिपूजा व कु० की तरह सामासिकता भी यहाँ पर अनुपस्थित है)

→ काव्य सौंदर्य के प्रति आग्रह (बिम्बों, प्रतीकों व अलंकारों के फलस्वरूप) से कुकुरमुत्ता मुक्त दिखायी पड़ता है
↓
परंतु गहनतः विचार करने पर पाते हैं कि संस्कृत के अभिजात्य का भले ही यहाँ अभाव है किंतु अंग्रेजी, अरबी, फारसी का अभिजात्य तो मौजूद ही है।

→ निराला यहाँ शब्दों से खेलते नजर आते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

→ परंपरागत काव्य की संभावनाएँ भी मौजूद हैं
- "एक सपना जग रहा था----"
"चरकही कलियाँ ------"
(छायावादी सौंदर्यचेतना)

अतः अभिजात्य से मुक्ति की बात एक कविता की एकांगी व्याख्या है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

प्रश्न असाध्य वीणा में अभिव्यक्त सांस्कृतिक 'अस्मिता बोध' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए तथा इसके दार्शनिक आधार पर प्रकाश डालिए।

↓ अज्ञेय का अंतर्विरोध

अज्ञेय आधुनिक भी है और वे रहस्यवादी भी हैं।

बल्कि अज्ञेय की आधुनिकता ही उन्हें रहस्यवादी बनाती है।

↓ कारण

→ आधु० होने के नाते मनुष्य की असीम शक्ति और अनंत सामर्थ्य में इनकी आस्था है
↓
असाध्य वीणा मनुष्य की इसी उपलब्धि से साक्षात्कार की कविता है।
↓
यही साक्षात्कार अज्ञेय को रहस्यवादी बनाता है।

↓ इस साक्षात्कार के लिए अज्ञेय जापानी जेन लोककथा को → जापानी महायान बौद्ध धर्म का दर्शन आधार बनाते हैं
↓
इसका भारतीयकरण करते हैं

- किरीटी तरु की भूमि उत्तराखंड
- वीणा निर्माता वज्रकीर्ति प्रियंवद
- वीणा का संबंध ↓ वासुकी नाग व पातललोक के मिथकीय संदर्भ से जोड़ते हैं।

इसकी पृष्ठभूमि में ↓

भारत बौद्ध धर्म की जन्मस्थली है अतः जेन दर्शन उतना अटपटा नहीं है।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

आधुनिकता निरंतर सं[illegible] जाने की प्रक्रिया का दूसरा रूप है।
— अज्ञेय

↓

इसके जरिये अज्ञेय **सृजन के रहस्य** का उद्घाटन करते हैं।

← अस्तित्व की सार्थकता

1- अहंता (अहं का समर्पण)
2- प्रक्रिया (
3- स्वरूप (…अवतरित हुआ
4- प्रभाव (जो आरम्भ में वस्तुनिष्ठ है लेकिन बाद में व्यक्तिनिष्ठ हो जाता है)

↓

" डूब गये सब एक साथ
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे "

अस्तित्ववादी चिंतन का भारतीयकरण
↓
अस्तित्ववादी अवधारणा को भारतीय जीवनपरक आस्था में निरूपित करना

→ न बुद्ध के स्वीकार के भाव को सबुद्ध की तथ्यता के जरिये समाहित करना

→ मृत्यु की निरर्थकता को भी सार्थकता प्रदान करने में रूपांतरित करना

इसी क्रम में अज्ञेय को पश्चिमी दर्शन की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है

↓

संदर्भ

- अस्तित्ववाद
- मनोविश्लेषणवाद

परंतु पश्चिम का यह प्रभाव अज्ञेय को अधिकाधिक भारतीय बनाते हैं।

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

* मनोविश्लेषणवादी प्रभाव का भारतीय करण

मन के विश्लेषण की बजाय मन के संश्लेषण की बात की।

भारतीय परंपरा मनसा वाचा कर्मणा के अद्वैतत्व की मान्यता इसकी हिप्नोटिक सृजन इसी सम्भव है।

यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें अनेक पूर्व एवं पश्चिम के बीच सेतुबंध के रूप में सामने आते हैं।

परंतु यह सब संभव कैसे हुआ? (तार्किक परिस्थितियां मिलीं)

① - जेन दर्शन - बुद्ध ने जिस संबोधि को प्राप्त किया उसे किसी बाहरी साधन द्वारा दूसरे तक नहीं पहुँचाया जा सकता। सतोक समाज्ञा व ध्यान ही वह मार्ग है जिससे कोई व्यक्ति अपने अंदर बुद्धत्व की अनुभूति कर सकता है।

→ भारतीय विज्ञानवाद और योगाचार - साधक को अपनी चेतना को बाह्य जगत से अलग कर अंतर्मुखी जगत से की ओर प्रवृत्त करना होता है। (जीवन के अनकहे सत्य का साक्षी बुद्धत्व / अनुभूति)

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

मैं वध हूँ ! अज्ञेय

"मैं सेतु हूँ जो है और जो होगा उसे मिलाता हूँ।

मैं अपार हूँ तो मैं संग्राम हूँ

जो नेपथ्य मवि है

मैं अज्ञेय हूँ, मैं शक्ति हूँ मैं जय हूँ।"

"उस साहित्य की कोई प्रतिष्ठा नहीं हो सकती जिसमें सांस्कृतिक अस्मिता नहीं।"

"बंद घर में प्रकाश
पूर्व या ~~प्रकाश~~ पश्चिम
या किसी निश्चित दिशा से आता है।"

भारतेंदु, द्विवेदी, छायावादी युग – सांस्कृतिक अस्मिता की खोज

↓ मनुष्य के सांश्लिष्ट स्वरूप का निरूपण

↓

व्यष्टि–समष्टि के बीच टकराहट

↓

संकट की स्थिति

व्यक्ति की दृष्टि से समाज तथा समाज की दृष्टि से व्यक्ति की क्या उपयोगिता है ?

छायावादी व्यक्ति समाज निरपेक्ष नहीं है लेकिन प्रयोगवादी व्यक्ति समाज निरपेक्ष हो जाता है।

↓

मनुष्य के सांश्लिष्ट स्वरूप की व्यक्ति, समाज के साथ

अज्ञेय व नागार्जुन

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

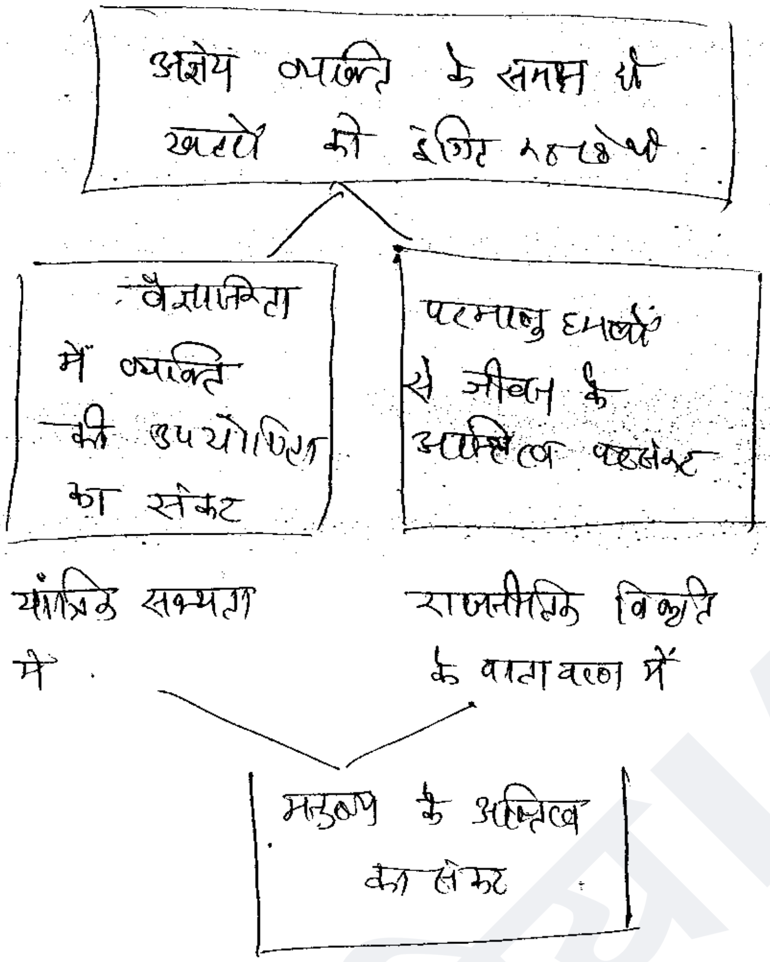

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS
most trusted since 2003

'असाध्य वीणा' से -

"कृतकृत्य हुआ मैं तात, पधारे आप
भरोसा है अब मुझको
साध आज मेरे जीवन की पूरी होगी।"

"मेरे हार गये सब जाने-माने कलावंत
सबकी विद्या हो गयी अकारथ, दर्प चूर
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका
पर मेरा अब भी है विश्वास
कवि - कृच्छ्र तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी
इसे जब सच्चा स्वर साधक गोद में लेगा।"

नये कवि,
इलियटवाद का असर,
भाषा में भी शब्दों पर जोर नये सा।

"केशकम्बली गुफागेह ने खोला कम्बल
धरती पर चुपचाप बिछाया
वीणा उस पर रख पलक मूँद कर प्राण खींच, (योगाचार)
करके प्रणाम,
अस्पर्श छुअन से छुए तार।"

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

सृजन की अर्हता का संकेत।

"धीरे बोला - "राजन, यह मैं तो कलाकार हूँ नहीं,
शिष्य साधक हूँ जीवन के अनरहे साक्ष्य का साक्षी।"

विस्तीर्ण - समर्पित

वज्रकीर्ति, कि प्राचीन किरीटी तरु, अभिमंत्रित वीणा
ध्यान मात्र तो इसका

"चुप हो गया प्रियंवद, सभा भी मौन हो गयी
वाद्य उठा साधक ने गोद रख लिया
धीरे-धीरे झुक उस पर
तारों पर मस्तक

× × ✓ ✓

सृजन की प्रक्रिया में प्रवेश

पर उस स्पंदित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा
नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा था।
सघन निविड़ में वह अपने को
सौंप रहा था उसी किरीटी तरु को।"

तादात्म्य का संकेत वीणा केवल की साधने के लिए अपने को अर्पित स्पष्ट है

'नहीं, नहीं' यह वीणा मेरी गोद रखी है, रहे,
किंतु मैं ही तो तेरी गोद में बैठा
मोद भरा बालक हूँ।"

समानुभूति की स्थिति

सृजन की प्रक्रिया (तादात्मीकरण) की लीला चरम

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

तार तक परंपरा के प्रतीक हैं बहुत कुछ
उसी तरह जिस तरह शक्तिपुञ्ज के आम्बर्वार।'

↓

परंपरा एवं आधुनिकता के बीच सामंजस्य का संदेश।)

"सहसा वीणा झनझना उठी
संगीतकार की आँखों में
ठंडी पिघली ज्वाला-सी
रोमांच एक बिजली-सा सबके तन में दौड़ गया
अवतरित हुआ संगीत स्वयंभू
जिसमें सोता है अखण्ड
ब्रह्मा का मौन
अशेष प्रभामय।"

"डूब गये सब एकाप
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।"

सृजन का प्रभाव

" मनुष्य समाज से नहीं,
समाज में स्वतंत्र है।"
: अज्ञेय

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

सब डूबे, तिरे, छिपे, जागे
हो रहे गये स्तब्ध यति सबकी अलग-अलग जागी

"वीणा फिर मूक हो गयी
सर्जना के क्षण कभी लम्बे
कभी भी लम्बे हो नहीं सकते।"

'क्षण' में इतिहास-व्यापी महत्व प्रदान करते हैं और इतिहास को क्षण में समाहित कर देते हैं

"उठ गयी सभी,
सब अपने-अपने काम लगे
युग पलट गया।"

वीणा के संगीत ने सभी को स्वधर्म का ज्ञान कराया
↓
व्यक्ति के जीवन की सार्थकता उसके स्वधर्म के अनुपालन ~~किया~~ में निहित है।

क्षण का इतिहास~~व्यापी~~ महत्व है
और इसीलिए

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS most trusted since 2003

"श्रेय नहीं कुछ मेरा;
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सबकुछ को सौंप दिया।
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का
वह तो सबकुछ की तथता थी
महाशून्य वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन सबमें व्यापा है

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

प्रश्न 'असाध्यवीणा' मौन से स्वर और स्वर से मौन तक की यात्रा है। लेकिन, इस यात्रा के क्रम में मौन का स्वरूप स्थिर न होकर बदलता रहा है।

प्रश्न "असाध्यवीणा" नव अद्वयात्मवाद एवं नव रहस्यवाद की अभिव्यक्ति है।

मनुष्य केंद्र में
मनुष्य ही है कर्ता एवं वही भोक्ता

→ आधुनिकता,
→ आधुनिक मानवतावादी चेतना
→ आधुनिक चिंतन की लौकिकता के धरातल में

Downloaded From: https://www.dhyeyaias.com

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

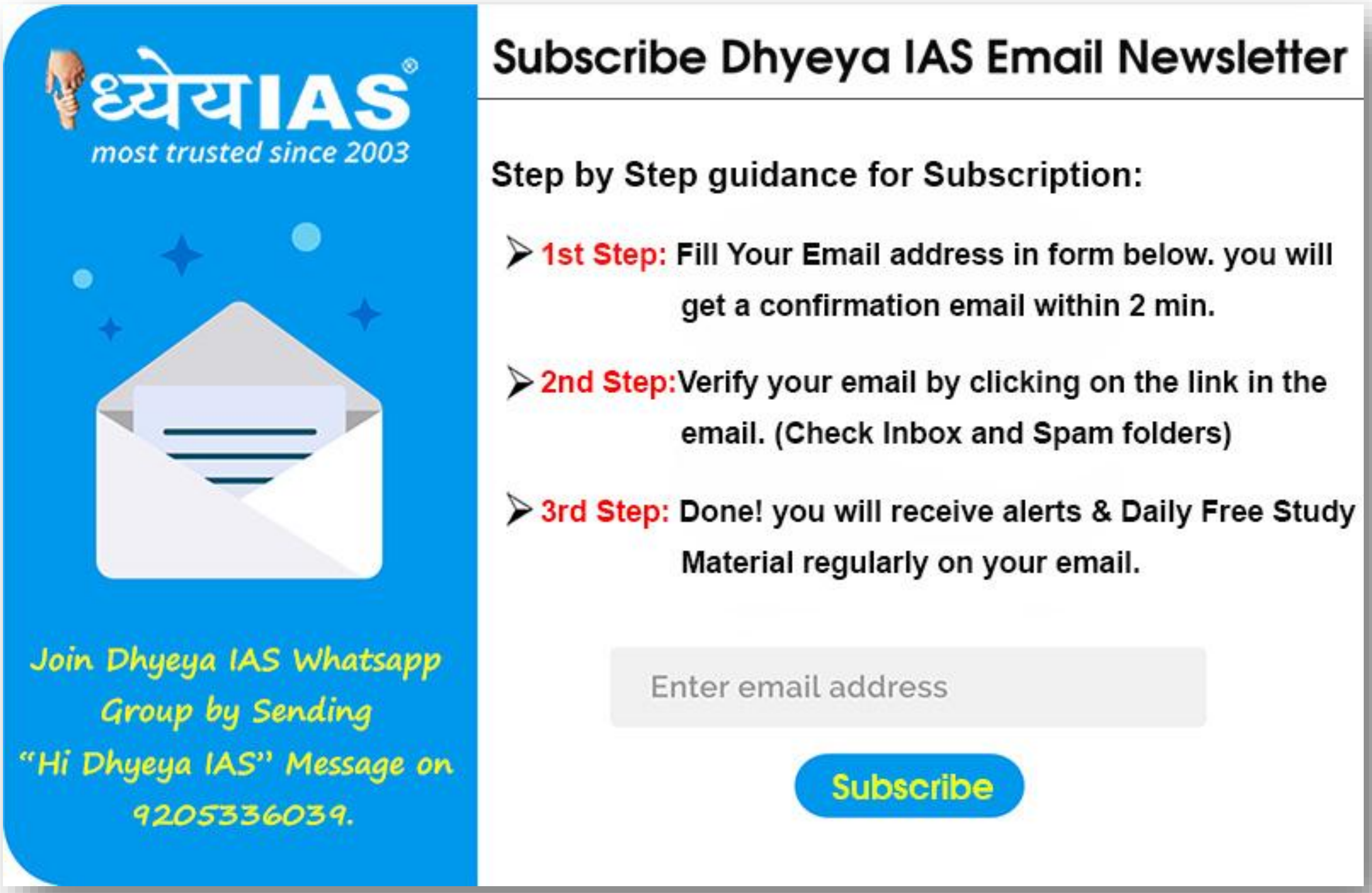

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए **9355174442** पर **"Hi Dhyeya IAS"** लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400